हिंदी सुमन

I2H7D6

भाग-3

कक्षा 5 के लिए हिंदी पाठ्यपुस्तक

राजकीय विद्यालयों में नि:शुल्क वितरण हेतु

राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्
उदयपुर

प्रकाशक

राजस्थान राज्य पाठ्य पुस्तक मण्डल, जयपुर

प्रथम संस्करण: 2025

© राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, उदयपुर

© राजस्थान राज्य पाठ्यपुस्तक मण्डल, जयपुर

पेपर उपयोग: आर.एस. टी.बी. वाटरमार्क
80 जी. एस. एम. पेपर पर मुद्रित

प्रकाशक: राजस्थान राज्य पाठ्यपुस्तक मण्डल
2-2 ए, झालाना डूंगरी, जयपुर

मुद्रक:

मुद्रण संख्या:

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलैक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटो प्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुन: प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर नहीं दी जाएगी और नहीं बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।
- किसी भी प्रकार का कोई परिवर्तन केवल प्रकाशक द्वारा ही किया जा सकेगा।

आवरण पृष्ठ साज-सज्जा :
डॉ. सूरज सोनी, असिस्टेंट प्रोफेसर

विशेष: इस पुस्तक में संकलित सामग्री कई स्रोतों से प्रभावित है, हम उन सभी के प्रति आभार ज्ञापित करते हैं।

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक [1][संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य] बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय,
विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म
और उपासना की स्वतंत्रता,
प्रतिष्ठा और अवसर की समता
प्राप्त कराने के लिए,
तथा उन सब में
व्यक्ति की गरिमा और [2][राष्ट्र की एकता
और अखंडता] सुनिश्चित करने वाली बंधुता
बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर अपनी इस संविधान सभा में आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. को एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।

---

1. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) ''प्रभुत्व-संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य ''के स्थान पर प्रतिस्थापित।
2. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) ''राष्ट्र की एकता'' के स्थान पर प्रतिस्थापित।

आमुख

बच्चों के लिए शिक्षा का प्रारंभिक चरण (6 से 11 आयुवर्ग) सबसे महत्वपूर्ण होता है। यह वह समय होता है जब वे अपने आसपास की दुनिया को जानने, समझने और सीखने की शुरुआत करते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 (NEP-2020) इसी विचार को अपनाते हुए शिक्षा को रोचक, आनंददायक और अनुभवात्मक बनाने पर जोर देती है। यह शिक्षा नीति भारतीय शिक्षा प्रणाली में व्यापक सुधार और नवीन दृष्टिकोण को अपनाने की अनुशंसा करती है। इस नीति का मूल उद्देश्य विद्यार्थियों को 21वीं सदी की चुनौतियों का सामना करने के लिए सृजनात्मकता, तार्किकता और व्यावहारिक कौशल से सशक्त बनाना है। इसके अंतर्गत शिक्षा को अधिक समावेशी, समग्र और कौशल-आधारित बनाने पर विशेष बल दिया गया है।

इन्हीं उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उदयपुर द्वारा प्राथमिक कक्षाओं की पाठ्यपुस्तकों का निर्माण किया गया है। बच्चों के चतुर्दिक और सर्वांगीण विकास को सुनिश्चित करने के लिए इनमें भारतीय ज्ञान परंपरा, 21वीं सदी के कौशल, सामाजिक-भावनात्मक कौशल, कला एवं शारीरिक शिक्षा को समेकित किया गया है। यह पाठ्यपुस्तक न केवल तार्किक चिंतन, स्पष्ट अवधारणात्मक समझ और रचनात्मकता को प्रोत्साहित करती है, साथ में समावेशन, सांस्कृतिक एकता और सामंजस्य की प्रवृत्तियों को भी सुदृढ़ करती है।

पाठ्यपुस्तक में कक्षा-स्तरानुरूप प्रभावी, रोचक और सृजनात्मक गतिविधियों के साथ-साथ रोचक कहानियों, कविताओं सहित अन्य विधाओं की सामग्री का समावेश किया गया है ताकि बच्चे सहज और आनंददायक तरीके से सीख सकें। शिक्षकों के लिए भी इसमें जगह-जगह सुझाव दिए गए हैं जिससे वे बच्चों को और अधिक प्रभावी तरीके से सीखने में सहयोग कर सकें।

पाठ्यपुस्तक विकास की इस महत्वपूर्ण यात्रा में प्रदेश के चुने हुए शिक्षक, राज्य और राष्ट्रीय स्तर के विशेषज्ञों तथा स्वयंसेवी संस्थाओं का बहुमूल्य योगदान रहा है। उनके सहयोग, सुझाव और निष्पक्ष दृष्टिकोण के बिना इस कार्य को प्रभावी रूप से संपन्न करना संभव नहीं होता। इस अमूल्य योगदान के लिए हम सभी हितधारकों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करते हैं। पाठ्यक्रम समीक्षा समिति के सभी सम्मानित सदस्यों का विशेष आभार जिनके बहुमूल्य सुझावों से इस पाठ्यपुस्तक को और बेहतर बनाने की दिशा मिली।

नवविकसित पाठ्यपुस्तक कक्षा में सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को सहज, आनंददायी और उत्कृष्ट बनाएगी ऐसा विश्वास है और यह शिक्षकों के सक्रिय सहयोग से ही संभव होगा। शिक्षकों की भूमिका केवल ज्ञान प्रदान करने तक ही सीमित नहीं है बल्कि वे विद्यार्थियों को सक्रिय रूप से सीखने के लिए प्रेरित करने वाले मार्गदर्शक भी हैं। उन्हें इस पाठ्यपुस्तक का उपयोग करते समय बाल-केंद्रित शिक्षण पद्धति अपनानी चाहिए जिससे विद्यार्थी अपनी रुचि और क्षमतानुसार सीख सकें। इसके साथ ही वे 21वीं सदी के कौशलों को बढ़ावा देने, सामाजिक-भावनात्मक विकास को प्रोत्साहित करने और भारतीय ज्ञान परंपरा के मूल्यों को कक्षा-शिक्षण में प्रभावी रूप से समाहित करने पर विशेष ध्यान दें।

यह पुस्तक आपके हाथ में है। प्रदेश के लाखों बच्चे आपकी ओर सीखने की आतुरता से निहार रहे हैं। हमारे सामूहिक प्रयासों से वे निश्चय ही सीखने के लक्ष्य को प्राप्त कर सकेंगे, इसका हमें पूर्ण विश्वास है। इन पाठ्यपुस्तकों को और बेहतर बनाने की दिशा में आपके सुझावों का सदैव स्वागत है।

निदेशक
राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान
एवं प्रशिक्षण परिषद्, उदयपुर

पाठ्यपुस्तक विकास समूह

मुख्य संरक्षक	:	**कृष्ण कुणाल,** IAS, शासन सचिव, स्कूल शिक्षा, राजस्थान
मुख्य मार्गदर्शक	:	**श्वेता फगेड़िया,** RAS, निदेशक, RSCERT, उदयपुर
मार्गदर्शक	:	**कैलाश चंद्र तेली,** अतिरिक्त निदेशक, RSCERT, उदयपुर
मुख्य समन्वयक	:	**पीयूष कुमार जैन,** उप निदेशक, RSCERT, उदयपुर
समन्वयक एवं समीक्षा समिति	:	**महेश कुमार बुनकर,** प्राचार्य
		डॉ. मनीषा उज्ज्वल, एसोसिएट प्रोफेसर
		डॉ. योगेन्द्र कुमार श्रीमाली, एसोसिएट प्रोफेसर
		डॉ. रिपुदमन सिंह उज्ज्वल, उप प्राचार्य
		नरेश पँवार, असिस्टेंट प्रोफेसर
		बन्ना राम रैगर, असिस्टेंट प्रोफेसर
अकादमिक सहयोग एवं परामर्श	:	**इग्नस पहल**
लेखन एवं संपादन	:	**सोमनाथ शर्मा,** उप प्राचार्य
		सीताराम, प्राध्यापक
		कृष्ण बिहारी पाठक, प्राध्यापक
		मेवाराम गुर्जर, प्राध्यापक
		आशा रानी सुमन, अध्यापक
		गोविन्द सिंह चौहान, अध्यापक
		विश्वामित्र दायमा, विशेष शिक्षक
		डॉ. मुकुल शर्मा, कंप्यूटर अनुदेशक
सहयोगी संस्थाएँ	:	**अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन, पीरामल फाउंडेशन**
चित्रांकन	:	**जगदीश नंदवाना,** व्याख्याता
		भारत भूषण वैष्णव, व्याख्याता
		गोविन्द प्रजापत, व्याख्याता
		भावेश सुथार, कला विद्यार्थी

अनुक्रमणिका

अध्याय संख्या	विषय-वस्तु	पृष्ठ संख्या
	वंदना	1
1	सबसे पहले प्यार बनाया	2–7
2	मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम	8–13
3	गौ–रक्षक लोक देवता	14–21
4	पुष्कर मेला	22–29
	आकलन–I	30–33
5	राजस्थान के बालवीर	34–40
6	कलम, आज उनकी जय बोल	41–45
7	पधारो म्हारे देस	46–54
8	नारे कितने प्यारे	55–62
	आकलन–II	63–65
9	भारत के महान व्यक्तित्व	66–71
10	दोहे और पद	72–75
11	पिकनिक	76–84
12	नन्हा ध्रुवतारा	85–89
	आकलन–III	90–92
13	तनु का पत्र	93–100
14	धरती धोरां री !	101–105
15	पाँच तरीके	106–112
16	उत्सर्ग	113–119
	आकलन–IV	120–122
	शब्दों की दुनिया	123–126

वंदना

भारत माता का मंदिर यह

भारत माता का मंदिर यह
समता का संवाद जहाँ,
सबका शिव कल्याण यहाँ है
पावें सभी प्रसाद यहाँ ।

जाति-धर्म या संप्रदाय का,
नहीं भेद-व्यवधान यहाँ,
सबका स्वागत, सबका आदर
सबका सम सम्मान यहाँ ।

राम, रहीम, बुद्ध, ईसा का,
सुलभ एक-सा ध्यान यहाँ,
भिन्न-भिन्न भव संस्कृतियों के
गुण गौरव का ज्ञान यहाँ।

नहीं चाहिए बुद्धि बैर की
भला प्रेम का उन्माद यहाँ,
सबका शिव कल्याण यहाँ है,
पावें सभी प्रसाद यहाँ।

सब तीर्थों का एक तीर्थ यह
हृदय पवित्र बना लें हम
आओ यहाँ अजातशत्रु बन,
सबको मित्र बना लें हम।

रेखाएँ प्रस्तुत हैं, अपने
मन के चित्र बना लें हम।
सौ-सौ आदर्शों को लेकर
एक चरित्र बना लें हम।

कोटि-कोटि कंठों से मिलकर
उठे एक जयनाद यहाँ,
सबका शिव कल्याण यहाँ है
पावें सभी प्रसाद यहाँ।

-मैथिलीशरण गुप्त

Q3K7K9

अध्याय-1

सबसे पहले प्यार बनाया

नानीजी ने हमें बताया,
ईश्वर ने संसार बनाया।
बहुत जरूरी समझ ईश ने,
सबसे पहले प्यार बनाया।

इसी प्यार से धरती-अंबर,
सरिता-सागर जुड़े हुए।
इसी प्यार में बरसे बादल,
प्रहरी-पर्वत खड़े हुए।

इसी प्यार से सूरज उगता,
चंदा अमृत बरसाता।
तारों की टिमटिम है इससे,
इससे सबका है नाता।

ये हरियाली वन-बागों की,
कलियों सुमनों का खिलना।
तितली-भँवरों का मँडराना,
इक-दूजे से मन मिलना।

सारी वसुधा प्यार भरी है,
सब संतों ने समझाया,
बहुत जरूरी समझ ईश ने
सबसे पहले प्यार बनाया।

-डॉ. गजादान चारण

अभ्यास कार्य

आओ बात करें -

1. कविता में बताया गया है कि इस संसार में सबसे पहले प्यार बनाया गया है। इसके बाद प्यार से क्या-क्या बना है ?
2. कविता के अनुसार सब संतों ने क्या बतलाया है ?
3. प्यार से सभी समस्याओं का समाधान हो सकता है। कैसे ?

सोचो और लिखो-

1. नीचे दिए गए शब्दों का प्रयोगकर एक-एक वाक्य बनाइए-

   संसार- इस संसार को खूबसूरत बनाने के लिए हमें प्यार से रहना चाहिए।

   प्रकृति- ....

   मनमानी- ....

   सृष्टि- ....

2. पहाड़ों को प्रहरी क्यों कहा गया है ?
3. कविता में नानी ने क्या बताया ?
4. नीचे दिए गए शब्दों को सही क्रम में रखकर प्रश्न बनाओ-

   (i) किसने / बनाया ? / संसार / यह

   (ii) कौन-कौनसे / प्रकृति के /उदाहरण/ आए / इस कविता / में / हैं ?

5. इस कविता के मूलभाव को अपने शब्दों में लिखिए।

मेरी बात सबकी बात-

1. पुस्तकालय, शिक्षकों और अभिभावकों के सहयोग से इस कविता से मिलती-जुलती आपके घर की

भाषा से जुड़ी कोई कविता या गीत यहाँ लिखिए।

पढ़कर जानें–

1. नीचे कविता की कुछ पंक्तियाँ दी गई हैं जिनमें कुछ शब्द छूट गए हैं। रिक्त स्थान पर कविता से खोजकर सही शब्द लिखिए–

बहुत जरुरी समझ ईश ने, सबसे पहले .... बनाया।

इसी प्यार से धरती– ...., सरिता– .... जुड़े हुए।

सारी .... प्यार भरी है, सब .... ने समझाया।

तारों की .... है इससे, इससे सबका है .... ।

आओ रचना करें–

1. इस कविता की तरह ही नानी या दादी ने आपको भी कोई कविता/कहानी सुनाई होगी। उसे लिखिए।

भाषा की बात–

विद्यालय में फुटबॉल प्रतियोगिता हो रही थी। अक्षिता की टीम फाइनल में थी लेकिन टीम की खिलाड़ी काजल और निकिता को चोट लग गई थी। सब निराश थे लेकिन अक्षिता ने टीम को समझाया, ''एकता और मेहनत से हम जीत सकते हैं।'' सभी ने जोश और धैर्य से खेल खेला। आखिरी मिनट में नैना ने

गोल कर दिया। टीम की जीत से सभी खुश हो गए।

1. तालिका में दिए गए शब्दों के समानार्थी शब्द कहानी में से पहचानकर लिखिए –

विजय	
परिश्रम	
उत्साह	
सहनशीलता	
आनंद	

2. नीचे दिए गए शब्दों को उनकी सही क्रिया से मिलाओ–

शब्द	**क्रिया**
सूरज	खिलते हैं।
नदी	खड़े रहते हैं।
फूल	बरसते हैं।
बादल	बहती है।
पर्वत	चमकता है।

यह भी करें–

1. पाठ की कविता के आधार पर पुस्तकालय से इसी प्रकार की कविताएँ संकलित कीजिए और बालसभा में सुनाइए।
2. आपको अपने दादा–दादी या परिजनों को कोई नया सुझाव देना हो तो आप अपनी बात कैसे रखेंगे ?
3. 'मेरे सपनों की दुनिया' विषय पर अपनी कक्षा में अपने विचार साझा करें।

4. इस कविता के आधार पर नीचे दिए प्रश्नों पर विचार कीजिए–

कौन सिखाता है चिड़ियों को

कौन सिखाता है चिड़ियों को चीं–चीं, चीं–चीं करना?
कौन सिखाता फुदक–फुदककर उनको चलना–फिरना?
कौन सिखाता फुर्र से उड़ना दाने चुग–चुग खाना?
कौन सिखाता तिनके ला–लाकर घोंसले बनाना?
कौन सिखाता है बच्चों का लालन–पालन उनको?
माँ का प्यार, दुलार, चौकसी कौन सिखाता उनको?
कुदरत का यह खेल, वही हम सबको, सब कुछ देती।
किंतु नहीं बदले में हमसे वह कुछ भी है लेती।
हम सब उसके अंश कि जैसे तरु–पशु–पक्षी सारे।
हम सब उसके वंशज जैसे सूरज–चाँद–सितारे।

साभार– द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी

1. इस कविता की कुछ पंक्तियाँ 'कौन सिखाता है' से शुरू हो रही हैं। इसी तरह आप भी 'कौन सिखाता है' कविता के अनुसार दो पंक्तियाँ बनाएँ।

(क) कौन सिखाता है ....

(ख) कौन सिखाता है ....

2. अब आप अपने द्वारा बनाई गई पंक्तियों के आधार पर इन प्रश्नों के उत्तर कविता के रूप में लिखिए–

(क) ....

(ख) ....

पढ़ने के लिए-

प्रीत बढ़ाएँ प्रीत बढ़ाएँ
आ मेरे मनमीत बढ़ाएँ
कोई बड़ा न छोटा कोई
नहीं है ऊँचा-नीचा कोई
सबको अपने गले लगाएँ
प्रीत बढ़ाएँ प्रीत बढ़ाएँ
छोटे स्वार्थ भुलाएँगे हम
गीत प्रीत के गाएँगे हम
सबमें भाईचारा लाएँ
प्रीत बढ़ाएँ प्रीत बढ़ाएँ

अध्याय-2

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम

प्राचीन भारत के महानतम पुरुषों में से एक भगवान श्रीराम अपनी मर्यादा, सत्य और कर्तव्य-परायणता के लिए प्रसिद्ध हैं। वे अयोध्या के राजा दशरथ और रानी कौशल्या के पुत्र थे। उनका जीवन धर्म, त्याग और आदर्शों का प्रतीक है। श्रीराम को 'मर्यादा पुरुषोत्तम' कहा जाता है क्योंकि उन्होंने जीवन-भर धर्म और आदर्शों का पालन किया। उनका चरित्र हमें सिखाता है कि सच्चाई और न्याय के मार्ग पर चलना ही श्रेष्ठ जीवन का आधार है।

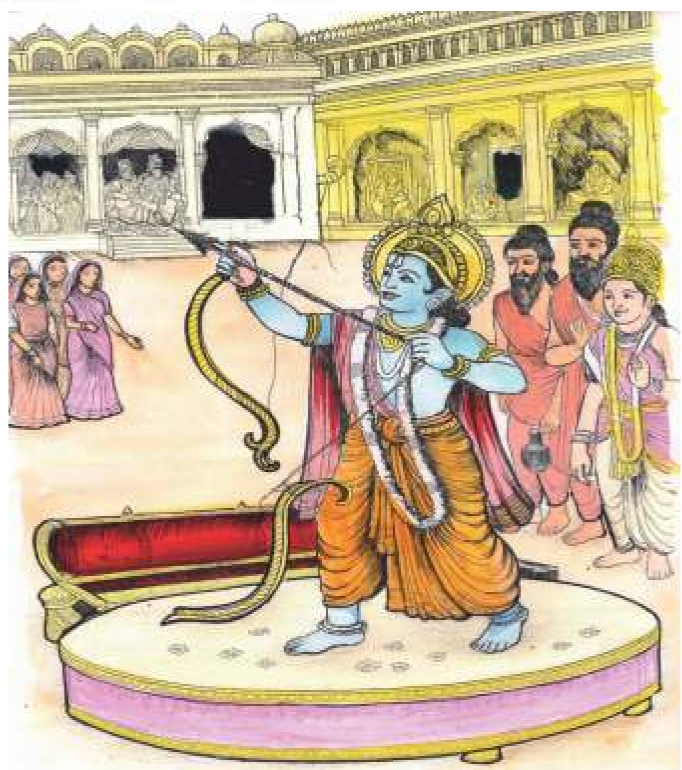

श्रीराम का जन्म अयोध्या में हुआ था। वे चार भाई थे। राम, भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न चारों भाई साथ-साथ खेलते हुए बड़े हुए। वे सभी गुरु वशिष्ठ के

आश्रम में शिक्षा ग्रहण करने गए जहाँ उन्होंने वेद, धनुर्विद्या और नीतिशास्त्र की शिक्षा ली। श्रीराम बाल्यकाल से ही सत्य, शील और धैर्य से परिपूर्ण थे। वे अपने माता–पिता और गुरुजनों की आज्ञा का पालन करते थे और अपने भाइयों से स्नेह रखते थे।

राक्षसों से यज्ञ की रक्षा के लिए विश्वामित्र ने राजा दशरथ से राम और लक्ष्मण को माँगा एवं गुरु विश्वामित्र ने श्रीराम और लक्ष्मण को जंगल में रहने वाले राक्षसों से ऋषियों की रक्षा करने के लिए कहा। श्रीराम ने ताड़का नामक राक्षसी का वधकर ऋषियों को निर्भय किया। उन्होंने कई यज्ञों की रक्षा की जिससे संपूर्ण वन क्षेत्र में शांति स्थापित हुई। इससे यह संदेश मिलता है कि अन्याय और अधर्म के विरुद्ध खड़े होना प्रत्येक व्यक्ति का धर्म है।

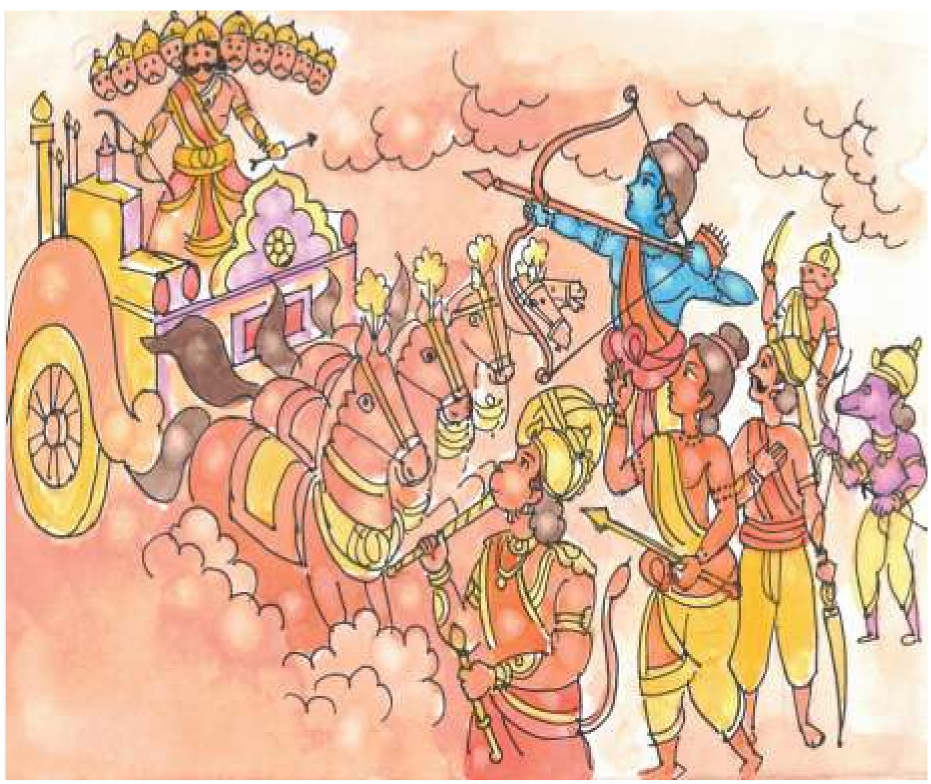

श्रीराम का विवाह मिथिला के राजा जनक की पुत्री सीता के साथ हुआ। राजा जनक ने घोषणा की थी कि जो भी शिवधनुष को उठाकर उसकी प्रत्यंचा चढ़ाएगा उसी से सीता का विवाह होगा। श्रीराम ने सहजता से यह कठिन कार्य कर दिखाया और सीता का स्वयंवर संपन्न हुआ। उनका यह कार्य अदम्य शक्ति और संयम का प्रतीक था।

जब श्रीराम के राज्याभिषेक की तैयारी हो रही थी तब उनकी

सौतेली माँ कैकेयी ने राजा दशरथ से पूर्व में दिए दो वचन माँग लिए। राम को चौदह वर्षों के लिए वनवास भेज दिया जाए और भरत को राजा बनाया जाए। श्रीराम ने पिता के वचनों की रक्षा के लिए बिना किसी विरोध के राजमहल छोड़ दिया और पत्नी सीता तथा भाई लक्ष्मण के साथ वनवास को चले गए। उन्होंने यह दिखाया कि माता–पिता और गुरुजन की आज्ञा का पालन ही सबसे बड़ा धर्म है।

वनवास के दौरान रावण ने सीता का हरण कर लिया। श्रीराम ने अपनी नीतिपूर्ण योजना, पराक्रम और वानर सेना के सहयोग से लंका पर आक्रमण किया और रावण का वधकर धर्म की स्थापना की। उन्होंने यह संदेश दिया कि अधर्म और अन्याय का अंत निश्चित है चाहे वह कितना भी शक्तिशाली क्यों न हो।

लंका विजय के पश्चात श्रीराम अयोध्या लौटे और उन्होंने एक आदर्श राज्य की स्थापना की जिसे 'रामराज्य' कहा जाता है। रामराज्य में सभी लोग सुखी और सुरक्षित थे और न्याय का पालन किया जाता था। उन्होंने बताया कि एक राजा का सबसे बड़ा कर्तव्य प्रजा का कल्याण करना होता है।

भगवान श्रीराम का जीवन हमें कई महत्वपूर्ण शिक्षाएँ देता हैं। जैसे– सत्य और धर्म का पालन करना, माता–पिता और गुरुजनों की आज्ञा का पालन करना, अन्याय और अधर्म के खिलाफ खड़े होना, अपने कर्तव्यों का निष्ठा से पालन करना और प्रत्येक व्यक्ति को विनम्र और सहनशील बनना आदि।

श्रीराम का चरित्र हर युग में आदर्श रहेगा। उनकी कथा हमें मर्यादा, कर्तव्य और सत्य के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देती है।

अभ्यास कार्य

आओ बात करें–

1. प्राचीन समय के गुरुकुलों में किस तरह शिक्षा दी जाती होगी ?
2. वनवास के दौरान श्रीराम को किन–किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ा होगा ?
3. श्रीराम के अयोध्या लौटने पर नगरवासियों ने उनके स्वागत में क्या तैयारियाँ की होंगी ?
4. अपने परिवार के सदस्यों से रामायण से संबंधित अन्य जानकारी हेतु चर्चा करें।
5. अपने शिक्षक की सहायता से कक्षा में रामायण के अन्य पात्रों पर चर्चा करें।

सोचो और लिखो-

1. नीचे दिए गए प्रश्नों के विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए-

1. श्रीराम के पिता दशरथ कहाँ के राजा थे ?

   (अ) मिथिला (ब) मथुरा (स) प्रयागराज (द) अयोध्या ( )

2. श्रीराम के भाइयों में कौन शामिल नहीं था ?

   (अ) भरत (ब) लक्ष्मण (स) विभीषण (द) शत्रुघ्न ( )

3. श्रीराम के गुरु का नाम क्या था ?

   (अ) संदीपनी (ब) वशिष्ठ (स) वाल्मीकि (द) तुलसीदास ( )

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

1. श्रीराम को .... कहा जाता है ।
2. .... और .... के विरुद्ध खड़े होना प्रत्येक व्यक्ति का धर्म है।
3. राम को .... वर्षों के लिए वनवास भेज दिया गया।
4. माता-पिता और गुरुजन की .... ही सबसे बड़ा धर्म है।

3. नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर एक या दो पंक्तियों मे दीजिए-

1. श्रीराम का चरित्र हमें क्या सिखाता है ?
2. लंका विजय में श्रीराम का सहयोग किस-किसने किया ?
3. ऋषि विश्वामित्र श्रीराम और लक्ष्मण को राजा दशरथ से माँगकर क्यों ले गए ?
4. रामराज्य से क्या तात्पर्य है ?

भाषा की बात-

1. विशेषता बताने वाले शब्द लिखिए-

   1. महान शिवधनुष- ....
   2. कठिन कार्य- ....

2. नीचे दिए गए वाक्यों में से विशेषता बताने वाले शब्द छाँटकर लिखिए-

1. यह किताब बहुत रोचक है। ....

2. मोहन ईमानदार लड़का है। ....

3. यह फूल सुंदर और सुगंधित है। ....

4. सूरज तेज चमक रहा है। ....

5. गीता एक मेहनती छात्रा है। ....

3. निम्नलिखित शब्दों के समान अर्थ वाले (पर्यायवाची) शब्द लिखिए-

पुराना - ....

बेटा - ....

निडर - ....

काम - ....

रास्ता - ....

यह भी करें-

- आपके विद्यालय में वार्षिकोत्सव होने वाला है जिसमें बहुत से अतिथि और अभिभावक आ रहे हैं। अपनी कक्षा के साथ विद्यालय को सजाने के लिए आप क्या-क्या करेंगे?
- नीचे दिए गए प्रसंगों पर अपने गुरुजन और साथियों से चर्चा करें-
  - सीता स्वयंवर
  - हनुमानजी द्वारा संजीवनी लाना

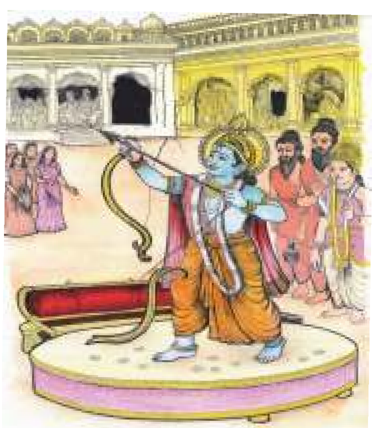

पढ़ने के लिए

आई दीवाली, आई दीवाली !
भर-भर खुशियाँ लाई दीवाली !
कार्तिक मास अमावस्या को, दीपावली मनाते हैं।
राम, सिया, लक्ष्मण घर लौटे, घी के दीप जलाते हैं।
सत्य, न्याय और धर्म की जय हो, बीत जाएँ रातें काली ।
आई दीवाली, आई दीवाली !
भारतवर्ष में फिर से आए, रामराज्य और खुशहाली ।
आई दीवाली, आई दीवाली !
भर- भर खुशियाँ लाई दीवाली !

अध्याय-3

गौ-रक्षक लोक देवता

सुबह-सुबह मेरी नींद खुली ही थी कि पिताजी की आवाज आई, ''मीरा! उठो, जल्दी करो। देखो, बाड़े में गाय खड़ी है उसे चारा-पानी दे दो।'' पिताजी की बात सुनकर मैं उठी और माँ के साथ अपनी गाय कजरी को चारा-पानी देने चली गई। गोरी बछिया की रस्सी खोलकर हमने गाय का दूध दुहना शुरू किया। दूध दुहने के बाद हम घर लौट आए।

आज घर में खीर बनेगी। माँ ने खीर बनाने की तैयारी कर दी। चूल्हे पर दूध गर्म होने को रखा। शक्कर, चावल और सूखे मेवे तैयार थे। मैं खीर खाने के लिए बहुत उत्साहित थी। तभी पिताजी बोले, ''पहले तेजाजी के थान पर भोग लगाएँगे फिर खीर खाएँगे।'' मैं पिताजी के साथ खीर लेकर थान जा रही थी। रास्ते में मैंने पूछा, ''पिताजी! हम तेजाजी के थान पर खीर का भोग क्यों लगाते हैं?'' पिताजी

ने समझाया, ''तेजाजी गायों के रक्षक लोक देवता के रूप में पूजे जाते हैं। उन्होंने गायों की रक्षा के लिए अपना बलिदान दिया था।''

मेरी जिज्ञासा बढ़ी तो पिताजी ने आगे बताया, ''तेजाजी का जन्म राजस्थान के नागौर जिले के खरनाल गाँव में हुआ था। उनके पिता का नाम ताहड़देव और माता का नाम रामकुँवरी था। बचपन से ही तेजाजी में वीरता और साहस के गुण थे। उन्होंने अपना जीवन गायों की रक्षा के लिए समर्पित कर दिया। एक बार जब लुटेरे गाँव की गायों को लेकर जा रहे थे तब तेजाजी ने उनका सामना किया और गायों को लुटेरों से बचाया। इसलिए उन्हें गौ-रक्षक देवता माना जाता है और भाद्रपद शुक्ल दशमी को तेजादशमी के रूप में मनाया जाता है।''

थान पर पुजारी जी ने खीर का भोग लगाया और हमारा हाल-चाल पूछा। मैंने पूछा, ''काका हम लोक देवताओं को भोग क्यों लगाते हैं?'' वे बोले, ''हम लोक देवताओं के त्याग, बलिदान और समाज सेवा को याद करने के लिए उनकी पूजा करते हैं। जैसे-तेजाजी ने गायों की रक्षा के लिए अपना जीवन समर्पित किया वैसे ही रामदेवजी, पाबूजी, बिग्गाजी और करणी माता ने भी पशु, पर्यावरण संरक्षण और मानव कल्याण के लिए अपना जीवन समर्पित किया।''

पुजारी काका ने गोगाजी के बारे में भी बताया, ''गोगाजी को 'जाहरपीर' के नाम से भी जाना जाता है। एक बार जब आक्रमणकारी उनके पास के गाँव से गायों को लूटकर ले जा रहे थे तब गोगाजी ने गायों की रक्षा के लिए वीरता से युद्ध किया। उन्होंने कई आक्रमणकारियों को मार गिराया लेकिन

अंततः वीरगति को प्राप्त हो गए। इस प्रकार गोगाजी भी गौ-रक्षक देवता के रूप में पूजे जाते हैं।''

मैं और पिताजी पुजारी काका को प्रणामकर घर लौट आए। घर जाकर हमने स्वादिष्ट खीर का आनंद लिया। खीर खाकर मुझे बहुत ताजगी महसूस हुई। मैंने माँ को पुजारी काका से हुई बातचीत के बारे में बताया। माँ ने कहा, ''जैसे तेजाजी और गोगाजी ने गायों की रक्षा की वैसे ही पाबूजी ने भी गायों और ऊँटों की रक्षा के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया था। जब उनके विवाह के दौरान उन्हें पता चला कि कुछ लोग गाँव की गायों को लेकर जा रहे हैं तो उन्होंने विवाह के फेरे अधूरे छोड़ दिए और गायों की रक्षा के लिए लुटेरों से युद्ध करने निकल पड़े। उन्होंने वीरता से लड़ते हुए अपने प्राण त्याग दिए।''

माँ से यह सब सुनते हुए मैं जल्दी तैयार होकर विद्यालय के लिए निकल पड़ी। रास्ते में मुझे मेरी सहेलियाँ सीमा और राधा मिल गईं। हम खीर के भोग और लोक देवताओं की बात करते हुए स्कूल पहुँचे।

विद्यालय में प्रार्थना सभा के दौरान गुरुजी ने आज के दिन का महत्व बताया। उन्होंने दूध और खीर की पौष्टिकता के बारे में भी समझाया। गुरुजी बोले, ''दूध में प्रोटीन, कैल्शियम, फास्फोरस और विटामिन जैसे पोषक तत्व होते हैं। दूध से पनीर, दही, छाछ, मावा आदि बनते हैं। दूध से बनी मिठाइयाँ बहुत स्वादिष्ट होती हैं।''

टीना ने जिज्ञासावश पूछा, ''गुरुजी! गाँव में तो लोग अपने घरों में गाय और भैंस पालते हैं लेकिन शहरों में दूध कहाँ से आता है?'' गुरुजी ने बताया, ''गाँवों में आवश्यकतानुसार पशु पाले जाते हैं लेकिन शहरों में बड़े-बड़े तबेले होते हैं जहाँ गायें और भैंसें रखी जाती हैं। वहाँ से दूध ग्राहकों तक भेजा जाता

है। गाँवों से भी कोल्ड स्टोरेज के जरिए दूध शहरों में भेजा जाता है। मशीनों द्वारा उसकी पैकिंग होती है और फिर वह ग्राहकों तक पहुँचता है। दूध एवं दूध से बने उत्पादों के व्यवसाय को 'डेयरी उद्योग' कहा जाता है।''

दीपक ने कहा, ''लेकिन गुरुजी हमने रास्ते में गायों को सड़क पर घूमते देखा है। क्या उनका कोई घर नहीं है? ''

गुरुजी ने बताया, ''लोग गायें पालते हैं और उनकी देखभाल भी करते हैं लेकिन कुछ लोग गायें पालते हैं, उनका दूध दुहते हैं और जब गायें दूध देना बंद कर देती हैं तो उन्हें घर के बाहर खुला छोड़ देते हैं जिससे गायें सड़क पर भूखी घूमती हुई कचरा, प्लास्टिक आदि खा लेती हैं और बीमार पड़ जाती हैं। इस कारण गायें मर भी जाती हैं आजकल पशुओं के लिए अस्पताल भी बनाए गए हैं जहाँ बीमार पशुओं का इलाज किया जाता है।''

गुरुजी ने हमें प्रेरित किया कि हमें अपने आसपास रहने वाले पशुओं के प्रति संवेदनशील होना चाहिए क्योंकि ये हमारे जीवन में बहुत महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। गुरुजी की बातें सुनकर सभी बच्चे खुश हो गए।

अभ्यास कार्य

आओ बात करें-

1. सुबह उठते ही मीरा को पिताजी ने क्या करने के लिए कहा?
2. तेजाजी कौन थे और उन्हें गौ-रक्षक देवता क्यों माना जाता है?
3. विद्यालय में गुरुजी ने दूध से मिलने वाले कौन-कौनसे पोषक तत्व बताए?
4. खीर बनाने के लिए क्या-क्या सामग्री चाहिए?
5. आपके परिवेश में कौन-कौनसे लोक देवी-देवताओं की पूजा की जाती है? आपस में चर्चाकर बताएँ।

सोचो और लिखो-

1. 'जाहरपीर' के नाम से किस लोक देवता को जाना जाता है?

(अ) बाबा रामदेव (ब) पाबूजी (स) तेजाजी (द) गोगाजी ( )

2. पाठ में आए इन शब्दों के अर्थ लिखें और वाक्य बनाएँ –

(क) गौ–रक्षक – ....

(ख) बलिदान – ....

(ग) समर्पित – ....

(घ) जिज्ञासा – ....

3. अनुमान लगाइए –

(क) यदि मीरा के घर में गाय न होती तो खीर बनाने के लिए दूध कहाँ से आता?

(ख) आप पालतू जानवरों की देखभाल कैसे करते हैं?

(ग) शहरों में दूध की व्यवस्था कैसे होती है?

भाषा की बात–

1. नीचे दो मुहावरे दिए गए हैं। अपने साथियों से बातचीत कर इनके अर्थ का पता लगाइए और वाक्य में प्रयोग कीजिए ।

दूध की नदियाँ बहना।

....

दूध का दूध पानी का पानी।

....

2. नीचे दिए गए वाक्यों में वचन (एकवचन/बहुवचन) पहचानें और वचन बदलकर वाक्य पुनः लिखें।

(क) गाय खेत में चर रही है। ....

(ख) बच्चे दूध पीते हैं। ....

(ग) मंदिर में दीपक जल रहा था। ....

3. नीचे दिए गए वाक्यों में लिंग (पुल्लिंग/स्त्रीलिंग) पहचानें और लिंग बदलकर वाक्य पुन: लिखें-

(क) पिताजी कहानी सुना रहे हैं। ....

(ख) मालिन माला बना रही थी। ....

(ग) गाय चारा खा रही है। ....

(घ) बंदर पेड़ पर कूद रहा है । ....

4. नीचे दिए गए वाक्य कार्य के अलग-अलग समय में होने की जानकारी दे रहे हैं। इसे काल कहते हैं। जैसे-

(क)	रतन स्कूल जाता था	-	भूतकाल
(ख)	राधिका स्कूल जाती है	-	वर्तमान काल
(ग)	विशाल स्कूल जाएगा	-	भविष्य काल

5. इसी तरह नीचे दिए गए वाक्यों का काल पहचानकर उनके सामने सही काल का नाम लिखिए।

(क) मीरा रोज सुबह जल्दी उठती है। ....

(ख) पिताजी खेत पर गए । ....

(ग) गुरुजी हमें दूध के पोषक तत्वों के बारे में बताएँगे। ....

रचनात्मक प्रश्न-

1. हम अपने आसपास देखते हैं कि प्लास्टिक की थैलियाँ जानवर खा जाते हैं और बीमार हो जाते हैं। इस समस्या से बचाव हेतु एक पोस्टर बनाइए और विद्यालय में प्रदर्शित कीजिए।

संवाद लेखन-

1. मीरा और उसकी सहेली के बीच लोक देवी-देवताओं के योगदान पर विद्यालय में हुई बातचीत को संवाद रूप में लिखें।

मीरा - ....

सहेली – ....

मीरा – ....

सहेली – ....

2. नीचे दी गई वर्ग पहेली से शब्द बनाकर खोजिए और नीचे दी गई सारणी में लिखिए –

छा	ता	दू	द	मा
छ	प	ध	ही	वा
ल	नी	ता	रा	खो
नी	र	ब	ड़ी	या

दूध से बनी चीजों के नाम	दूध से बनी चीजों के अलावा अन्य शब्द

यह भी करें–

1. स्थानीय परिवेश में प्रचलित लोक देवी–देवताओं पर आधारित लोकगीतों का संकलन करें।

शिक्षक निर्देश– व्याकरण प्रकरण की समझ विकसित करने हेतु शिक्षक विद्यार्थियों के साथ चर्चाकर आवश्यकतानुसार सहयोग करें।

पढ़ने के लिए

दूध बड़ा गुणकारी

गोरा-गोरा, धवल, श्वेत है,
पौष्टिक, पूर्ण आहार है ये ।
प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाए,
कैल्शियम का आधार है ये ।
कमजोरी मिटाए, ऊर्जा लाए,
थकान मिटाए सारी ।
दूध बड़ा गुणकारी ।।

इसे जमाओ, दही बनाओ,
लस्सी, छाछ पियो प्यारे ।
मथकर माखन को निकलाओ,
फाड़ पनीर खाओ प्यारे ।
खूब उबालो मावा बन जाए,
घी शरीर का हितकारी ।
दूध बड़ा गुणकारी ।।

इसकी मलाई, लच्छे, मावा,
कितने स्वाद भरे न्यारे ।
और मिठाई इतनी बनती,
गिनते-गिनते हम हारे ।
दूध पिओगे, खूब बढ़ोगे,
दूध बड़ा उपकारी ।
दूध बड़ा गुणकारी ।।

अध्याय - 4

पुष्कर मेला

S3L7K5

शाम को पापा के घर आते ही कुहुक ने कहा, ''पापा! मैं प्रभास भैया और मम्मी के साथ तेजाजी के मेले में गई थी। वहाँ मैं और भैया जंपिंग झूले पर झूले। उसमें उछलने पर हमें बहुत मजा आया।''

पापा ने कहा, ''अच्छा! और क्या किया?'' इस पर प्रभास ने कहा, ''वहाँ पर कुछ खिलौनों की दुकानें, मिठाई की दुकान और चाट-पकौड़ी वाला भी था। पापा! पता है, कुहुक मेले में हेलिकॉप्टर की जिद कर रही थी लेकिन मम्मी ने नहीं दिलवाया।''

तभी कुहुक ने कहा, ''पापा! भैया भी कार की जिद कर रहा था।''

पापा ने कहा, ''ठीक है! लेकिन क्या तुम्हें पता है कि अभी पुष्कर में एक बहुत बड़ा मेला लगने वाला है?''

कुहुक ने उत्सुकता से कहा, ''नहीं!''

इसके बाद पापा ने कहा, ''चलो, इस बार हम दीपावली के बाद पुष्कर मेले की सैर पर चलेंगे।''

यह सुनकर मैं और कुहुक बहुत खुश हो गए। हमने तो पुष्कर मेले के बारे में सुना था लेकिन वहाँ जाने का मौका पहली बार मिल रहा था।

मेले में जाने वाले दिन सुबह जल्दी ही हम गाड़ी में सवार होकर अजमेर की ओर बढ़े। रास्ते में पापा हमें इस मेले की विशेषताओं के बारे में बता रहे थे। कुहुक ने उत्सुकता से पूछा, ''पापा! पुष्कर मेले को इतना खास क्यों माना जाता है?''

पापा मुस्कुराए और बोले, ''यह मेला धार्मिक और सांस्कृतिक रूप से बहुत महत्वपूर्ण है। यह हर साल कार्तिक पूर्णिमा को लगता है और यहाँ दूर-दूर से श्रद्धालु एवं पर्यटक आते हैं।''

मम्मी ने कहा, ''अगर हम किसी पवित्र स्थान पर जाते हैं और वहाँ सकारात्मक सोच के साथ होते हैं तो हमें मानसिक शांति मिलती है।''

रास्ते में ऊँचे-ऊँचे रेतीले टीले, रंग-बिरंगे कपड़े पहने लोग और ऊँटों के काफिले देखकर सफर और भी रोमांचक लगने लगा।

सबसे पहले हम पुष्कर सरोवर पहुँचे। वहाँ कबूतर उड़ रहे थे और पानी में उनकी परछाइयाँ बहुत सुंदर लग रही थी। श्रद्धालु स्नान कर रहे थे और मंत्रों की गूँज से वातावरण बहुत अच्छा लग रहा था।

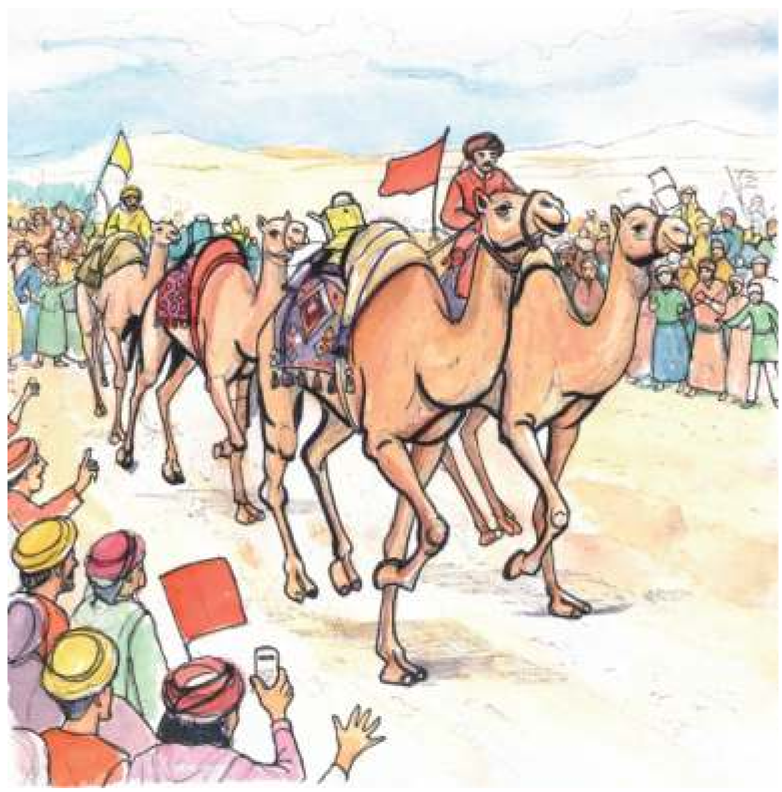

इसके बाद हम ब्रह्मा मंदिर गए। यह मंदिर बहुत भव्य था। पापा ने बताया, ''यह भारत ही नहीं बल्कि विश्व का प्रसिद्ध मंदिर है जो भगवान ब्रह्मा को समर्पित है।''

अब बारी थी मेले की सैर करने की। चारों तरफ रंग-बिरंगे तंबू लगे थे। ऊँटों को सुंदर पोशाकों से सजाया गया था। पापा ने बताया, ''यह विश्व का सबसे बड़ा ऊँटों का मेला है।''

वहाँ पर कलाकार सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत कर रहे थे। तरह–तरह के लोक व्यंजनों से भरी दुकानें थी। महिलाएँ पारंपरिक लहंगा–चोली पहने थी और पुरुष सर पर पगड़ी बाँधे हुए थे। सच में पुष्कर मेले की यह सुंदरता देखते ही बनती थी।

हम एक स्टॉल के पास खड़े थे तभी ढोल–नगाड़ों की आवाज सुनाई दी। पास जाकर देखा तो वहाँ रस्साकशी का आयोजन हो रहा था। एक तरफ गाँव की पारंपरिक पोशाक घाघरा–चोली पहने महिलाएँ थी और दूसरी तरफ कुछ विदेशी महिला सैलानी।

कुहुक को यह देखकर बहुत उत्सुकता हुई। उसने मुझसे पूछा, ''प्रभास भैया, तुम क्या सोचते हो? कौन जीतेगा?''

मैंने मुस्कुराते हुए कहा, ''गाँव की महिलाएँ बचपन से यह खेल खेल रही हैं इसलिए वे बहुत मजबूत हैं लेकिन विदेशी महिलाएँ भी पूरी कोशिश करेंगी।''

कुहुक ने फिर सवाल किया, ''यह खेल हम भी स्कूल में खेलते हैं लेकिन क्या रस्साकशी सिर्फ ताकत का खेल है या इसमें तकनीक भी काम आती है?''

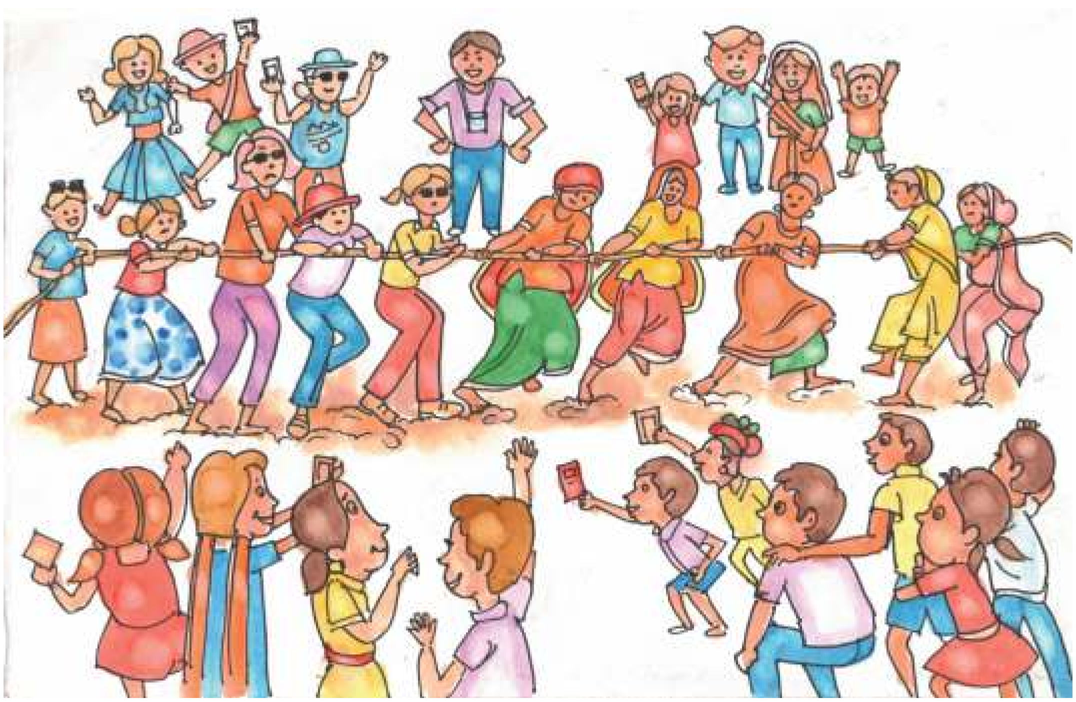

इस पर पापा ने कहा, ''रस्साकशी में ताकत तो मायने रखती ही है लेकिन तकनीक का सही इस्तेमाल किया जाए तो कमजोर टीम भी जीत सकती है। खासतौर पर पैरों और शरीर की स्थिति का सही इस्तेमाल बहुत जरूरी होता है। यह खेल सिर्फ शारीरिक ताकत ही नहीं बल्कि टीमवर्क और सही तकनीक का भी है।''

खेल शुरू होते ही दोनों टीमें पूरी ताकत से रस्सा खींचने लगी। आखिरकार गाँव की महिलाओं ने जीत हासिल की। हारने वाली विदेशी महिलाएँ भी खुशी से ताली बजा रही थी।

पापा ने बताया, ''यहाँ हम ऊँटों की दौड़ देखेंगे। यह बहुत मजेदार होती है।'' वहाँ ऊँटों की सुंदर सजावट और उनकी दौड़ देखने को मिली। ऊँट तेजी से दौड़ रहे थे। कुहुक उन्हें देखकर चिल्लाई, ''वह देखो! ऊँट कितने तेज दौड़ रहे हैं!'' वहाँ पास खड़े लोग भी अपने ऊँट को जिताने के लिए 'तेज और तेज' की आवाज लगा रहे थे।

हमने मटका फोड़ का एक मजेदार खेल भी देखा जिसमें लोग मटके फोड़ रहे थे।

मेले में इतना घूमने के बाद हम सब बहुत थक चुके थे। मम्मी और पापा हमें एक भोजनालय में ले गए जहाँ गरमा-गरम दाल-बाटी चूरमा, कढ़ी, मिर्ची के टिपोरे, गट्टे की सब्जी और गरम-गरम मालपुए मिल रहे थे।

कुहुक ने पूछा, ''पापा, दाल-बाटी इतनी खास क्यों होती है?''

पापा ने बताया, ''यह राजस्थान का पारंपरिक खाना है। इसे बड़े चाव से खाया जाता है इसलिए यह बहुत लोकप्रिय है।''

जब गाड़ी वापस घर की ओर बढ़ी तो कुहुक ने कहा, ''हम अगली बार भी इस मेले में आएँगे!'' मैं खिड़की से बाहर झाँकते हुए सोच रहा था कि यह यात्रा सिर्फ एक मेला देखने की नहीं थी बल्कि यह हमारी संस्कृति, खेल और परंपराओं को महसूस करने का एक अनोखा अनुभव था।

अभ्यास कार्य

आओ बात करें -

1. पुष्कर मेले को खास क्यों माना जाता है?
2. आपके गाँव या शहर में लगने वाले मेले के बारे में अपने अनुभव सुनाओ।
3. आप मेले में जाने से पहले क्या-क्या तैयारी करते हैं?
4. गाँव या शहर में मेलों का आयोजन क्यों किया जाता है?

सोचो और लिखो–

1. सही विकल्प का चयन कीजिए–

(क) पुष्कर मेला कब लगता है?

(अ) वैशाख पूर्णिमा को (ब) चैत्र पूर्णिमा को

(स) कार्तिक पूर्णिमा को (द) माघ पूर्णिमा को ( )

(ख) ब्रह्मा मंदिर की क्या विशेषता है?

(अ) यह भारत का सबसे बड़ा मंदिर है।

(ब) यह विश्व का प्रसिद्ध ब्रह्मा मंदिर है।

(स) यहाँ शिवजी की पूजा होती है।

(द) यह पुष्कर झील के अंदर बना है। ( )

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

(क) मेले में .... की दौड़ आकर्षण का केंद्र थी।

(ख) रस्साकशी खेल में जीतने के लिए .... और .... दोनों जरूरी होते हैं।

3. जब बस गाँवों से होकर गुजरती है तो बस के अंदर से बाहर क्या-क्या दिखाई देता होगा? इस चित्र को देखो और लिखो–

....

....

4. पुष्कर मेले में कौन-कौनसे खेल आयोजित किए गए थे?

....

5. दाल-बाटी-चूरमा को राजस्थान का पारंपरिक व्यंजन कहा गया है। इसी प्रकार से राजस्थान की पारंपरिक पोशाक, नृत्य एवं वाद्ययंत्रों की विशेषताओं के बारे में पता करके लिखो -

पोशाक ....

नृत्य ....

वाद्ययंत्र ....

6. रस्साकशी खेल में जीतने के लिए कौन-कौनसे गुण जरूरी होते हैं?

....

रचनात्मक चिंतन-

1. राजस्थान के प्रसिद्ध मेलों के बारे में जानकारी पता करके बालसभा में बताओ।
2. आपके गाँव या शहर में लगने वाले मेले की यात्रा के बारे में लिखिए।
3. अपने घर से पुष्कर मेले का एक रोड मैप तैयार कीजिए जिसमें प्रमुख स्थल, रोड, शहर आदि शामिल हों।

भाषा की बात-

1. नीचे कहानी को पढ़कर संज्ञा शब्दों को प्रकार (व्यक्तिवाचक, जातिवाचक, भाववाचक) के आधार पर पहचानकर तालिका में लिखिए -

अमन और रिंकू की क्रिकेट टीम फाइनल खेल रही थी। आखिरी ओवर में जीत के लिए 10 रन चाहिए थे। अमन ने पूरी हिम्मत से बल्लेबाजी की लेकिन आठ रन बनाकर आउट हो गया। अब बारी रिंकू की थी। उसने धैर्य और विश्वास से खेलते हुए आखिरी बॉल पर चौका मारा और टीम को जिता दिया। सभी ने खुशी से तालियाँ बजाईं।

व्यक्तिवाचक संज्ञा	जातिवाचक संज्ञा	भाववाचक संज्ञा
उदाहरण - अमन	उदाहरण - क्रिकेट	उदाहरण - हिम्मत

2. नीचे दिए गए वाक्यों में सर्वनाम शब्दों को पहचानकर तालिका में लिखिए -

वाक्य	सर्वनाम
मैंने पुष्कर मेले में ऊँटों की दौड़ देखी।	
वे मंदिर में दर्शन करने गए।	
यह मेला हर साल लगता है।	
उसने मालपुए बहुत चाव से खाए।	

यह भी करें-

1. यात्रा के समय प्रभास और कुहुक ने सड़क के किनारे अलग-अलग स्थानों पर अलग-अलग संकेत बने देखे। इस तरह के संकेत आपने भी देखे होंगे। प्रभास और कुहुक को इन संकेतों के अर्थ नहीं पता। आप पता करके लिखिए -

लाल रंग की बत्ती का अर्थ होता है ....

पीले रंग की बत्ती का अर्थ होता है ....

हरे रंग की बत्ती का अर्थ होता है ....

सड़क किनारे बने इस तरह के संकेत का अर्थ होता है कि बाएँ मुड़ना मना है।

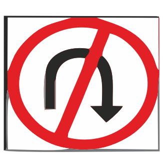

सड़क किनारे बने इस तरह के संकेत का अर्थ होता है कि..................................

....

सड़क किनारे बने इस तरह के संकेत का अर्थ होता है कि....................................

....

सड़क किनारे बने इस तरह के संकेत का अर्थ होता है कि....................................

....

2. आपने देखा इतने सारे लोगों ने मिलकर मेला लगाने में सहयोग किया। जैसे– किसी ने कपड़ों की दुकान लगाई, किसी ने मिठाई की, किसी ने खिलौनों की, एक बुजुर्ग महिला प्याऊ पर पानी पिला रही थी और किसी ने खेल आयोजित करवाए। आप इन सभी लोगों के लिए कैसा महसूस करते हैं? क्या आप इनको धन्यवाद देना चाहेंगे। यदि हाँ तो आभार हेतु पत्र लिखिए।

3. मेले की भीड़भाड़ में आप अपने घरवालों से बिछुड गए हो। अपने माता–पिता तक पहुँचने के लिए आप क्या–क्या प्रयास करेंगे? लिखिए।

आकलन-I

A1A2H8

मौखिक अभिव्यक्ति

1. चित्र देखकर बताइए कि इसमें बच्चे क्या कर रहे हैं?
2. आप भी अपने परिवेश को सुंदर बनाने के लिए क्या-क्या प्रयास करते हैं? बताइए।
3. चित्र में बच्चे मिलजुलकर कार्य कर रहे हैं। आपको साथियों के साथ काम करना कैसा लगता है?

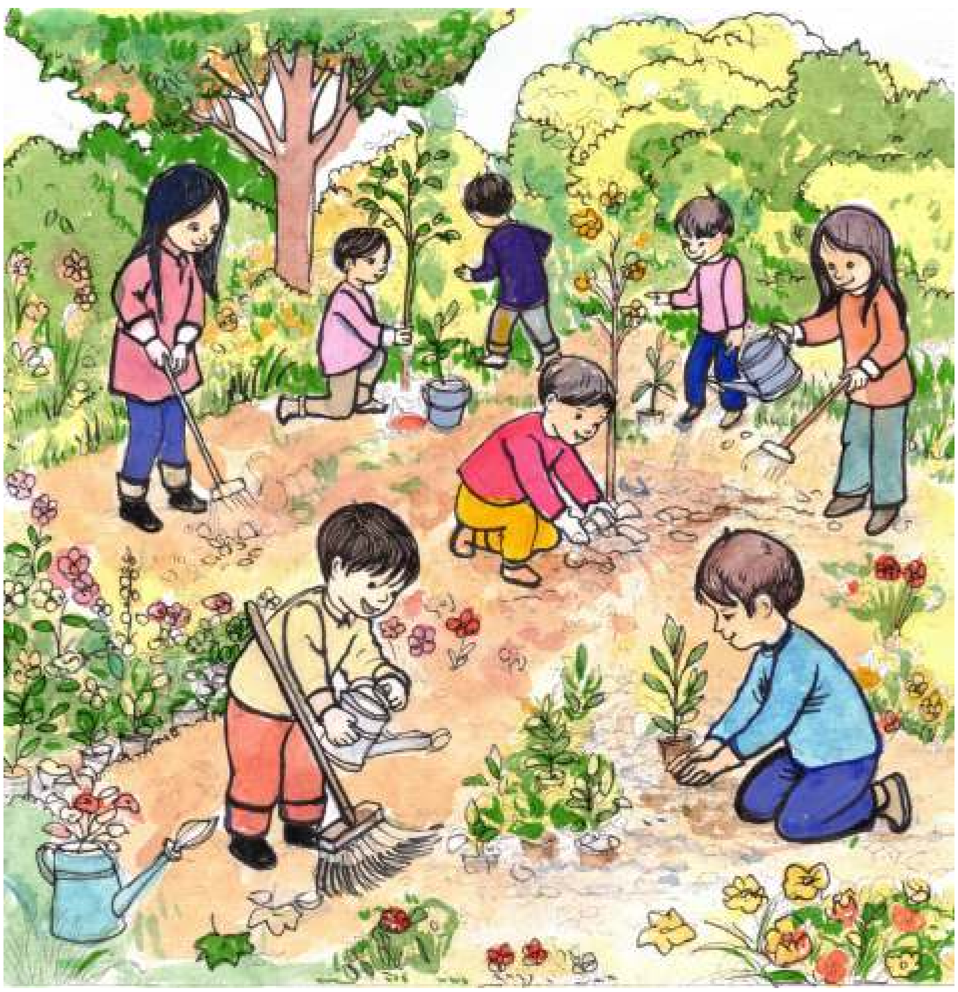

4. आपके द्वारा देखे गए मेले, पिकनिक या किसी शैक्षणिक भ्रमण का अनुभव अपने शब्दों में दोस्तों को सुनाइए।

पढ़कर समझना –

कहानी पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

दो भाई–बहिन थे। नाम था उनका मोहन तथा चंपा। मोहन बड़ा था और चंपा छोटी थी। दोनों मिलकर घर के सभी काम करते थे। मोहन तेरह साल का था। चंपा दस साल की थी।

एक दिन चंपा खेत की रखवाली कर रही थी। मोहन घर पर खाना बना रहा था तभी चंपा को पास के खेत में से किसी के रोने की आवाज आई। वह तेजी से आवाज की दिशा में भागी। उसने देखा कि पास के खेत की रखवाली करने वाला घासी मचान पर चढ़ा है और रो रहा है तथा उछल रहा है। नीचे गुस्से में एक सियार खड़ा है।

चंपा बोली घासी! रो मत, मैं आई। ऐसा कहकर चंपा मचान की तरफ लपकी। उसके दाएँ हाथ में लाठी थी। चंपा को देखकर सियार भाग गया। घासी को चंपा ने मचान से नीचे उतारा। दोनों घर की तरफ चल पड़े।

मोहन ने रोटी बना ली थी। साग नहीं बनाया था। तीनों ने मिलकर हरे चने छीले और सब्जी बनाई। चटनी बनाई। खाना खाया। उसके बाद मोहन और चंपा घासी को उसके घर तक छोड़ने के लिए गए।

1. चंपा और घासी दोनों मिलकर काम करते हैं। आप घर के काम में किस–किसकी मदद लेते हो?
2. घासी मचान पर बैठा हुआ था। आपने खेत में मचान देखा है? मचान क्यों बनाते हैं?
3. चंपा, घासी और मोहन ने मिलकर हरे चने की सब्जी बनाई थी लेकिन चटनी किससे बनाई पता नहीं चला। आपके हिसाब से चने की सब्जी के साथ किसकी चटनी बनाई होगी और कैसे बनाई होगी?
4. चंपा को सियार से डर नहीं लगा। यदि आप वहाँ होते तो घासी को कैसे बचाते?

भाषा की बात–

1. निम्नलिखित शब्दों में से व्यक्तिवाचक, जातिवाचक और भाववाचक संज्ञा शब्दों को छाँटिए और उनसे वाक्य बनाइए–

पेड़ खो-खो एकता शिक्षक भारत अनुशासन

संज्ञा	शब्द	वाक्य में प्रयोग
जातिवाचक	पेड़	जंगल में बहुत सारे पेड़ हैं।
भाववाचक	एकता	
व्यक्तिवाचक	खो-खो	

2. रात के कई नाम हैं जैसे– रात्रि, रजनी, विभावरी आदि। इन शब्दों को पर्यायवाची शब्द कहते हैं। दिए गए शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए। दो शब्द स्वयं चुनिए और उनके भी पर्यायवाची शब्द लिखिए–

बादल– ....

सूरज– ....

धरती– ....

1. ....

2. ....

आओ कवि बनें–

- बच्चो! एक कविता बनाइए। आप चाहें तो इन शब्दों की भी मदद ले सकते हैं–

चकरी झूला जोकर गठरी भूला

मेला ठेला चाट मिठाई खेल-खिलौने

मेले का चित्र -

चित्र देखकर एक अनुच्छेद लिखिए।

सोचो और लिखो-

1. संतों ने हमें क्या समझाया ?
2. श्रीराम का चरित्र हमें क्या प्रेरणा देता है ?
3. विवाह के फेरे अधूरे छोड़कर गायों की रक्षा करने वाले कौन थे ?
4. पवित्र स्थान पर जाने से क्या प्रभाव पड़ता है ?

J2E2P7

अध्याय - 5

राजस्थान के बालवीर

यह पाठ राजस्थान के दो बहादुर बालवीरों सुशीला और कुम्भाराम की साहसिक कहानियों को प्रस्तुत करता है। सुशीला ने अपने दृढ़ संकल्प से बाल-विवाह जैसी सामाजिक कुरीति का विरोध किया जबकि कुम्भाराम ने अपनी सूझबूझ और हिम्मत से एक बड़ी रेल दुर्घटना को टाल दिया। दोनों ही कहानियाँ इस बात का प्रमाण हैं कि साहस और इच्छाशक्ति के बल पर किसी भी कठिनाई का सामना किया जा सकता है। ये नन्हे नायक न केवल अपने गाँव और राज्य के लिए बल्कि पूरे देश के लिए प्रेरणा स्रोत बन गए।

अटल इरादा

सुशीला को अपने पिता का चेहरा भी याद नहीं था। जब वह बहुत छोटी थी तभी उसके पिता का निधन हो गया। सुशीला अपने नाना-नानी के घर पल-बढ़ रही थी।

उसकी उम्र साढ़े बारह साल थी और वह गाँव के स्कूल में पढ़ती थी। एक दिन स्कूल में सहपाठियों से उसे पता चला कि उसकी शादी होने वाली है। पहले तो उसने इसे मजाक समझा लेकिन जब घरवालों ने अक्षय तृतीया पर विवाह तय करने की बात कही तो वह दंग रह गई।

सुशीला ने इसका विरोध किया और खाना छोड़ दिया। पहले घरवालों ने उसे समझाने की कोशिश की लेकिन जब वह नहीं मानी तो वे गुस्सा हो गए। उसे धमकाया गया, डाँटा गया और यहाँ तक कि मारपीट भी की गई। उसके स्कूल जाने पर भी रोक लगा दी गई। परिवार को लगा कि थोड़े समय बाद वह मान जाएगी लेकिन सुशीला का संकल्प और मजबूत होता गया।

समय बीतता गया और अक्षय तृतीया का दिन करीब आता गया। सुशीला की चिंता भी बढ़ती जा रही थी लेकिन उसने हार नहीं मानी। एक दिन जब घर के लोग अपने-अपने कामों में व्यस्त थे वह मौका पाकर घर से निकल गई।

दौड़ते हुए उसके कदम अपने ताऊ रोदूलाल गुर्जर के घर जाकर रुके। ताऊ को देखते ही वह उनके गले लगकर फूट-फूटकर रो पड़ी। उसने कहा, "ताऊ, मैं मर जाऊँगी लेकिन अभी शादी नहीं

करूँगी।'' ताऊ का दिल पिघल गया। उन्होंने सुशीला को सांत्वना देते हुए कहा, ''बेटी, जब तक तेरा ताऊ जिंदा है वही होगा जो तू चाहेगी। तू चिंता मत कर।''

ताऊ ने तुरंत मुख्यमंत्री और जिले के पुलिस कप्तान को पत्र भेजे। साथ ही उन्होंने स्थानीय जिला प्रशासन और राज्य के कृषि मंत्री से भी संपर्क किया। इतनी सारी कार्यवाहियों का असर यह हुआ कि पुलिस ने तुरंत हरकत में आकर विवाह रुकवा दिया।

सुशीला की जीत हुई। उसने अपने दृढ़-निश्चय से बाल विवाह जैसी सामाजिक कुरीति को हराया। अब वह फिर से स्कूल जाने लगी और अपनी पढ़ाई पर ध्यान देने लगी। उसकी हिम्मत और संकल्प की चर्चा पूरे गाँव में होने लगी। उसकी इस बहादुरी के लिए उसे राष्ट्रीय बाल वीरता पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

सुशीला की यह कहानी हमें सिखाती है कि अगर हमारा इरादा मजबूत हो तो कोई भी बाधा हमें रोक नहीं सकती। उसने अपने साहस और दृढ़-निश्चय से यह साबित कर दिया कि नन्ही उम्र भी बड़े बदलाव ला सकती है।

नन्हे दोस्तों! बंद रास्ते हों सारे, हो कितनी भी बड़ी बाधा,
लेकिन नहीं छोड़ना तुमको, अपना अटल इरादा।

तीन हजार मीटर की दौड़

करौली जिले की हिंडौन तहसील से तीन किलोमीटर दूर एक छोटा-सा गाँव है, सिकरोदा जाट। वहाँ के इन्द्रराज मीणा के पंद्रह वर्षीय बेटे कुम्भाराम का स्कूल हिंडौन सिटी में था। रोज स्कूल जाते समय उसे रेलवे ट्रैक पार करना पड़ता था जहाँ से कई ट्रेनें गुजरती थी।

27 सितम्बर 1999 की बात है। स्कूल जाते समय कुम्भाराम की नजर रेलवे ट्रैक पर पड़ी जहाँ उसने देखा कि पटरी का एक हिस्सा टूटा हुआ था। पहले उसे लगा कि शायद कोई भ्रम हुआ है लेकिन पास जाकर देखा तो उनका संदेह सच निकला।

अब बड़ा प्रश्न था कि क्या किया जाए? ट्रेन कभी भी आ सकती थी और बड़ा हादसा हो सकता था। उसे तुरंत याद आया कि महावीरजी स्टेशन की ओर लगभग तीन किलोमीटर दूर रेलवे का एक केबिन है। यदि वह जल्दी वहाँ तक सूचना पहुँचा दे तो दुर्घटना टाली जा सकती है।

बिना देर किए पंद्रह वर्षीय कुम्भाराम पूरी ताकत से दौड़ पड़ा। रास्ते में उसे ठोकरें लगी और घुटनों में चोट भी आई लेकिन उसने रुकने की बजाय अपनी गति और तेज कर दी। यह दौड़ उसके लिए

जिंदगी और मौत का सवाल थी। अगर वह समय पर सूचना नहीं दे सका तो न जाने कितने लोगों की जान जोखिम में पड़ सकती है।

तीन किलोमीटर की इस दौड़ के बाद वह हाँफते हुए रेलवे केबिन पहुँचा और जोर से चिल्लाया, ''अंकल जी! ट्रैक टूटा हुआ है आने वाली गाड़ियों को रोक दो!''

पहले तो केबिनमैन को यकीन नहीं हुआ लेकिन कुम्भाराम की हालत देखकर उन्होंने तुरंत महावीर जी स्टेशन के स्टेशन मास्टर से संपर्क किया। उस समय मुम्बई-दिल्ली राजधानी एक्सप्रेस के गुजरने का समय था। स्टेशन मास्टर ने तुरंत एक्शन लिया और सिग्नल डाउन किया और तकनीकी कर्मचारियों को जाँच के लिए भेजा।

कुछ ही देर में राजधानी एक्सप्रेस वहाँ पहुँची और टूटी पटरी से पहले ही रुक गई। जब रेलवे कर्मचारियों ने जाँच की तो कुम्भाराम द्वारा दी गई सूचना सही निकली। पटरी की मरम्मत करने में लगभग एक घंटा लगा जिसके बाद ट्रेन को रवाना किया गया।

पंद्रह वर्षीय कुम्भाराम की बहादुरी और सूझबूझ से एक बड़ा हादसा टल गया। उसकी इस वीरता की हर जगह सराहना हुई। स्कूल और विभिन्न संस्थानों ने कुम्भाराम को सम्मानित किया। 26 जनवरी 2001 को गणतंत्र दिवस परेड से पहले प्रधानमंत्री द्वारा उसे राष्ट्रीय बाल वीरता पुरस्कार से सम्मानित किया।

27 सितम्बर 1999 की वह दौड़ कुम्भाराम को देश की राजधानी तक ले गई।

नन्हें दोस्तों,
जो अच्छा वो ग्रहण करें, जो गलत उसे फेकेंगे,
औरों की क्यों माने, अपनी आँखों से देखेंगे।
हम हैं नए समय के योद्धा, हम नन्हे सेनानी,
चले चलें हम आगे-आगे, जो होगा देखेंगे।

-रजनीकांत शुक्ल

अभ्यास कार्य

आओ बात करें –

सुशीला और कुम्भाराम की कहानियों को पढ़कर बताओ कि –

1. सुशीला को अपनी शादी का विरोध करने की हिम्मत कहाँ से मिली ?
2. कुम्भाराम ने अपनी सूझबूझ और साहस से क्या किया ?
3. क्या आपको लगता है कि छोटे बच्चे भी बड़े बदलाव ला सकते हैं ? कैसे ?
4. यदि आप सुशीला की जगह होते तो क्या करते ?

सोचो और लिखो–

1. बहुविकल्पात्मक प्रश्न (सही उत्तर चुनो)–

(क) सुशीला का विवाह किस दिन तय किया गया था ?

(अ) दीवाली　　(ब) अक्षय तृतीया

(स) रक्षाबंधन　　(द) वसंत पंचमी　　(　　)

(ख) कुम्भाराम ने रेलवे ट्रैक पर क्या देखा था ?

(अ) ट्रेन खड़ी थी।　　(ब) पटरी टूटी हुई थी।

(स) रेलवे का केबिन टूटा हुआ था।　(द) वहाँ कोई नहीं था।　　(　　)

2. रिक्त स्थान की पूर्ति करें–

(क) सुशीला अपने .... के घर पल–बढ़ रही थी।

(ख) कुम्भाराम को वीरता पुरस्कार .... को मिला।

(ग) सुशीला के .... ने उसकी मदद की और विवाह रुकवा दिया।

(घ) कुम्भाराम ने .... किलोमीटर दौड़ लगाकर रेलवे को खबर दी।

3. **मिलान करो-**

स्तंभ-अ	स्तंभ-ब
सुशीला ने	(अ) रेल दुर्घटना रोकी।
कुम्भाराम ने	(ब) वीरता पुरस्कार दिया।
अक्षय तृतीया	(स) सुशीला की शादी का दिन।
प्रधानमंत्री ने	(द) बाल विवाह का विरोध किया।

रचनात्मक प्रश्न-

1. यदि आपको किसी सामाजिक बुराई को खत्म करने का मौका मिले तो आप क्या करेंगे? इस विषय पर पाँच-छह वाक्य लिखो और अपने विचार साझा करो।
2. कक्षा में छोटे-छोटे नाटक प्रस्तुत करें जिसमें एक बच्चा बाल विवाह का विरोध करता है और एक बच्चा बहादुरी से रेल दुर्घटना रोकता है।
3. कल्पना करो कि आप कुम्भाराम की जगह हैं और आपको पाँच मिनट के अंदर रेलवे केबिन तक पहुँचना है। एक योजना बनाओ कि कैसे आप रास्ते में समय बचा सकते हो और जल्दी सूचना पहुँचा सकते हो।
4. यदि आप सुशीला के दोस्त होते तो आप उसकी मदद कैसे करते? सोचकर तीन-चार वाक्यों में लिखिए।

भाषा की बात -

1. पाठ से पाँच-पाँच संज्ञा और सर्वनाम शब्द खोजकर लिखो-

संज्ञा	सर्वनाम
....	....
....	....

....

....

....

2. विलोम शब्द लिखो–

(क) साहस– ....

(ख) जीत– ....

(ग) प्रेम– ....

(घ) बाधा– ....

3. काल, वचन एवं लिंग की पहचान करें–

(क) निम्नलिखित वाक्यों में किस काल का प्रयोग हुआ है?

1. राधा स्कूल जाती है ....

2. राम ने कहानी लिखी ....

3. हम कल पिकनिक पर जाएँगे ....

(ख) नीचे दिए गए शब्दों को बहुवचन में बदलें–

1. किताब– ....

2. बच्चा– ....

3. फूल– ....

4. पेड़– ....

(ग) नीचे दिए गए वाक्यों को एकवचन/बहुवचन में बदलें–

1. लड़का मैदान में खेल रहा है।

2. पक्षी आसमान में उड़ रहे हैं।

3. माता-पिता बच्चों को पढ़ा रहे हैं।

(घ) निम्नलिखित शब्दों का विपरीत लिंग लिखें -

1. राजा - ....
2. नाना - ....
3. गाय - ....
4. भाई - ....
5. बेटी - ....

(ङ) दिए गए वाक्यों में लिंग संबंधी त्रुटि सुधारकर लिखिए-

1. मोहन स्कूल जा रही है। ....
2. सीता बहुत अच्छा गाता है। ....
3. दादी रोज अखबार पढ़ता है। ....

यह भी करें-

आपके द्वारा किए गए साहसिक कार्य अथवा सूझबूझ की कहानी अपने साथियों को सुनाएँ।

शिक्षक निर्देश-

शिक्षक व्याकरण संबंधी प्रकरण की समझ विकसित करने हेतु विद्यार्थियों के साथ चर्चा करें एवं आवश्यकतानुसार सहायता करें।

M1J9V6

अध्याय - 6

कलम, आज उनकी जय बोल

जला अस्थियाँ बारी-बारी
चिटकाई जिनमें चिंगारी,
जो चढ़ गए पुण्यवेदी पर
लिए बिना गर्दन का मोल।
कलम, आज उनकी जय बोल।

जो अगणित लघु दीप हमारे
तूफानों में एक किनारे,
जल-जलकर बुझ गए, किसी दिन
माँगा नहीं स्नेह मुँह खोल।
कलम, आज उनकी जय बोल।

पीकर जिनकी लाल शिखाएँ
उगल रही लू-लपट दिशाएँ,
जिनके सिंहनाद से सहमी
धरती रही अभी तक डोल।
कलम, आज उनकी जय बोल।

अंधा चकाचौंध का मारा
क्या जाने इतिहास बेचारा?
साखी हैं उनकी महिमा के
सूर्य, चन्द्र, भूगोल, खगोल।
कलम, आज उनकी जय बोल।

–रामधारी सिंह 'दिनकर'

अभ्यास कार्य

आओ बात करें -

1. गर्दन का मोल लिए बिना देशभक्त किस पर चढ़ गए?
2. वीरों के सिंहनाद से कौन सहम गया?
3. पाठ में चकाचौंध का मारा तथा बेचारा किसे कहा गया है?

सोचो और लिखो-

1. नीचे दिए गए शब्दों का प्रयोगकर एक-एक वाक्य बनाइए -

   दिशा - सूर्य पूर्व दिशा में उगता है ।

   चिंगारी - ....

   सिंहनाद - ....

   चकाचौंध - ....

2. देशभक्तों की महिमा के साक्षी कौन-कौन हैं?
3. कविता में देशभक्तों के क्या-क्या कार्य गिनाए गए हैं?
4. नीचे दिए गए शब्दों को सही क्रम में लगाकर प्रश्न बनाओ -

   (i) हमारे / जो/ लघुदीप / अगणित

   ....

   (ii) मोल / गर्दन / बिना / लिए / पुण्यवेदी पर / चढ़ गए / जो / का

   ....

   (iii) इस कविता के मूलभाव को अपने शब्दों में लिखिए।

मेरी तेरी सबकी बात -

1. देश, समाज और प्रकृति की सेवा करने वालों का गुणगान करने वाला कोई गीत या कविता अपनी भाषा में लिखें।

पढ़कर जानें-

1. नीचे कविता की कुछ पंक्तियाँ दी गई हैं जिनमें कुछ शब्द छूट गए हैं। रिक्त स्थान पर कविता से खोजकर सही शब्द लिखिए-

जला अस्थियाँ बारी-बारी .... जिनमें चिंगारी।

जिनके .... से सहमी धरती रही अभी तक डोल।

.... हैं उनकी महिमा के सूर्य, चन्द्र, भूगोल, खगोल।

आओ रचना करें -

1. इस पंक्ति को पढ़कर तुकांत कविता बनाएँ -

भारत सबसे प्यारा है

ऐसा देश .... है

.... पुकारा है

मिलकर इसे सँवारा है

इसी तरह कविता को आगे बढ़ाएँ-

....

....

....

....

भाषा की बात –

1. नीचे दिए गए शब्दों के समानार्थी शब्द पाठ में से पहचानकर लिखिए –

   अनगिनत ....

   दिवस ....

   पृथ्वी ....

   सूरज ....

   चंद्रमा ....

2. पाठ में से इन शब्दों के विपरीत अर्थ वाले शब्द लिखो –

   रात ....

   बुझाना ....

   आकाश ....

   उतरना ....

3. नीचे दिए अनुसार शब्दों के लिंग बदलकर लिखिए–

   बेचारा **बेचारी**

   (क) मोर ....

   (ख) हाथी ....

   (ग) बालक ....

4. नीचे दिए गए एकवचन शब्दों को बहुवचन में बदलकर लिखिए–

   (क) दिशा ....

   (ख) अस्थि ....

   (ग) शिखा ....

यह भी करें -

1. पुस्तकालय से इसी प्रकार की कविताएँ संकलित कीजिए और बालसभा में सुनाइए।
2. एक विद्यार्थी के रूप में आप अपने देश और समाज की सेवा कैसे कर सकते हैं?

पढ़ने के लिए

मातृभूमि पे जीवन, लुटाते चलो

ये महकता चमन, मेरा प्यारा वतन।
सारे जग से निराला, धरा का रतन।
स्वर्ग से भी है प्यारा, ये गाते चलो।
मातृभूमि पे जीवन, लुटाते चलो।।

तीन रंगों का प्यारा, तिरंगा उड़े।
वीर बलिदानियों की, कहानी कहे।
हर शहादत को दिल में, बसाते चलो।
मातृभूमि पे जीवन, लुटाते चलो।।

इसकी सुबहें निराली, हैं शामें हसीं।
खेत, नदियाँ, पहाड़ों में, बहती खुशी।
प्रेम-गंगा की मौजें, बहाते चलो।
मातृभूमि पे जीवन, लुटाते चलो।।

पथ शहादत का वीरों, से गुलशन रहे।
आँख की हर नमी, दिल की तड़पन कहे।
मरते दम तक तिरंगा, लहराते चलो।
मातृभूमि पे जीवन, लुटाते चलो।।

B6I8G4

अध्याय - 7

पधारो म्हारे देस

गीतू, गुनगुन और मुस्कान,
उधर-किधर तुम सबका ध्यान,
मीठे बोल सुरीला गान,
मैं हूँ प्यारे, राजस्थान।

कैसे हो मेहू और सौम्य? मुझसे दोस्ती करोगे? मैं राजस्थान हूँ। रंगीला राजस्थान, सुरीला राजस्थान। तुम्हें नाचना गाना कैसा लगता है? मुझे तो गीत-संगीत में बहुत आनंद आता है। जब भी मुझे नृत्य-गान करने का अवसर मिलता है, मैं झटपट इसमें शामिल हो जाता हूँ। मैं कोई भी ऐसा मौका नहीं छोड़ता। घर में या बाहर, चौक में या बाजार में, खेत में, मेड पर या बाग में सभी जगह मैं तो अपना अलगोजा बजाकर गाने लग जाता हूँ -

''म्हारा छैल भँवर का अलगोजा
खेतां में बाजै,
खेतां में बाजै, मेडा में बाजै,
म्हारा छैल भँवर का अलगोजा
खेतां में बाजै ....''

क्या कहा, तुम अलगोजा नहीं जानते ? अरे ! अलगोजा मतलब बाजा जिसे फूँक मारकर बजाया जाता है। अलगोजा दो बाँसुरियों को मिलाकर बनाया जाता है। तुम्हें पता है संगीत हेतु काम में ली जाने वाली वस्तुओं को वाद्य यंत्र कहते हैं। अलगोजा भी एक वाद्य यंत्र है। अलगोजा के अलावा भी मैं बहुत सारे वाद्य यंत्र बजाना जानता हूँ चंग, भपंग, मोरचंग, रावणहत्था...। किसी संगीतकार या अपने शिक्षक से पूछकर देखना राजस्थान के लोक वाद्य यंत्रों की लंबी सूची आपको बता देंगे।

जब मैं बहुत खुश होता हूँ तो बहुत सारे लोगों के साथ मिलकर गोल घेरे में घूम-घूमकर नाचता और गाता हूँ। घूम-घूमकर नाचने गाने के कारण लोगों ने हमारे इस नृत्य का नाम गैर और घूमर ही रख दिया है। महिलाएँ घूमर में तो पुरुष गैर में रुचि लेते हैं।

घूमर के बोल सुनोगे ?

ओ म्हारी घूमर छे नखराळी ऐ माँ,
घूमर रमवा म्हें जास्याँ।
ओ राजाजी घूमर रमवा म्हें जास्याँ।

अपने सुख-दुख की बातों को गाकर बताना मुझे पसंद है। मेरे सभी गीतों में तुम्हें मेरी जीवन कहानी मिल जाएगी। मैंने जो परंपराएँ सीखी हैं मैं उनके गीत गाता हूँ। अपने तीज-त्योहार, रीति-रिवाज और उत्सवों के गीत गाता हूँ । मेरे कानों में जातरुओं के गीतों की आवाज आती हैं तो मैं झूम उठता हूँ। एक कान से रेतीले धोरों में वीर तेजाजी की अर्चना के गीत सुनता हूँ -

अरे गाज्यो गाज्यो जेठ, अषाढ़ कँवर तेजा रे
लगतो ही गाज्यो रे सावण भादवो।

दूसरे कान से करौली की कैलादेवी के आँगन में गूँजते लांगुरिया सुनता हूँ। लांगुरिया गीतों पर थिरकते नर–नारियों के पैरों में बँधे घुँघरुओं की रुनझुन मन मोह लेती है।

कैला मईया के भवन में घुटुवन खेले लांगुरिया,
खेले लांगुरिया, के सरपट दौड़े लांगुरिया।

तुम तो जानते ही हो मेरे बहुत बड़े भाग में पानी की बहुत कमी है। सूखी रेत के टीलों को तुम रेगिस्तान कहते आए हो, थार का रेगिस्तान। रेगिस्तानी गाँवों में हम सब पानी भरने के लिए रोज कुओं या कुईयों पर इकट्ठे हो जाते हैं। पानी भरते हुए सभी लोग मिलकर अपने सुख–दुख के गीत सुनाते हैं। पानी भरने वाली महिलाओं, जिन्हें पणिहारी कहते हैं उनके गाए गीतों को भी उन्हीं के नाम पर **पणिहारी** गीत नाम मिल गया है।

सात सहेल्यां रो झूलनो ए पणिहारी जी ए लो,
ओ मिरगा नैणी जी ए लो।
गई–गई समद तलाव, बा–ला–जो....

कुण जी खुदाया नाड़ा–नादिया ए
पणिहारी जी ए लो, ओ मिरगा नैणी जी ए लो।
कुण जी खुदाया समद तलाव, बा–ला–जो.....

मेरे गीतों में तुम्हें मेरे दैनिक जीवन की झलकी मिल जाएगी। हर मौसम और ऋतु में मैं जैसी चहल–पहल देखता हूँ उसे गीतों में पिरो लेता हूँ। वीर सपूतों की गाथाएँ, जन–मन में रची बसी प्रेम की कथाएँ मेरे कण–कण को रोमांचित कर देती हैं –

नीले घोड़े रा असवार, म्हारा मेवाड़ी सरदार
राणा सुणता ई जाज्यो जी।

वीर महाराणा प्रताप और उनके बहादुर घोड़े चेतक की गाथाएँ रोम–रोम में मातृभूमि के प्रति आदर–भाव जगा देती हैं। धन्य हैं देश पर अपना सब कुछ न्योछावर करने वाले वीर।

प्रकृति से जुड़े अनुभव और लोक देवी–देवताओं की गाथाएँ मुझे कंठस्थ याद हैं। खेती के काम में पति–पत्नी मिलजुलकर हाथ बँटाते हैं। दोनों की बातचीत में खेतीबाड़ी के प्रसंग भी आते रहते हैं और गीत बन जाते हैं –

मत बाओ म्हारा परण्या जीरो,
यो जीरो जीव रो बैरी रे
मत बाओ म्हारा परण्या जीरो।

बाजरा तो यहाँ खूब होता है। मोठ–बाजरे का खीचड़ा सबको भाता है। बाजरा खाने के साथ–साथ गाने का भी विषय है यह जानकर आपको बड़ा आनंद आएगा –

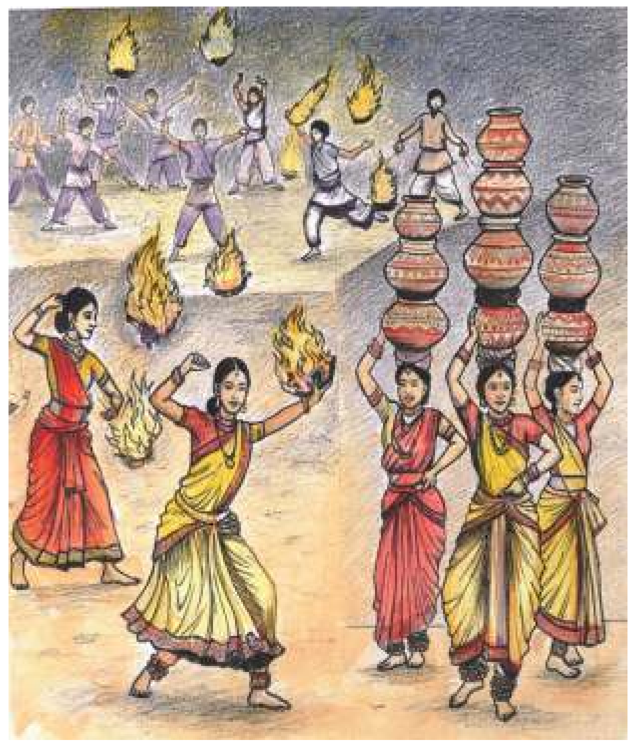

लागै घणो सवाद रे लागै घणो सवाद,
बाजरियो थारो खीचडो लागै घणो सवाद।

मेरे गीतों के साथ किए जाने वाले बहुत सारे नृत्य ऐसे हैं जिन्हें देखकर तुम दाँतों तले अँगुलियाँ दबा लोगे। लोग हैरान करने वाले करतब करते हैं। पैरों के नीचे काँच और तलवार तथा सर पर एक के ऊपर एक करके अनेक मटके रखकर भवाई नृत्य किया जाता है। नाचने वालों का संतुलन देखकर हैरानी होती है। इसी तरह जसनाथी सम्प्रदाय का अग्नि नृत्य है। धधकते अंगारों पर नाचते लोग हैरत में डाल देते हैं।

मैं राजस्थान हूँ। सुरीला राजस्थान। मेरी सुरीली आवाज से मनुष्य ही नहीं पशु–पक्षी भी आकर्षित होकर खिंचे चले आते हैं। साइबेरिया देश से कुरजां पक्षी हर साल आते हैं जिनसे मैं अपनेपन का संबंध जोड़ लेता हूँ और बतियाते हुए गाता हूँ–

तू छै कुरजां म्हारे गाँव की.....

मुझसे मिलने और मेरे गीत सुनने के लिए दूर–दूर से लोग आते हैं और मैं उनके स्वागत में पलक पाँवड़े बिछाकर तैयार रहता हूँ और गाता हूँ– **केसरिया बालम आओ ...... पधारो म्हारे देश.....।।**

अभ्यास कार्य

आओ बात करें–

1. आपका शहर या गाँव यदि बोलता तो क्या बातें करता? बताएँ।
2. अपने परिजनों से उनके प्रिय राजस्थानी लोकगीतों के बारे में चर्चा करें एवं उसे कक्षा में साझा करें।
3. आप कौनसा वाद्य यंत्र बनना पसंद करेंगे एवं क्यों?
4. लांगुरिया गीत के बारे में आप क्या जानते हैं?
5. घूमर नृत्य कैसे किया जाता है?
6. राजस्थान के लोकगीतों की प्रमुख विशेषताओं की चर्चा करें।

सोचो और लिखो–

1. बहुविकल्पीय प्रश्न–

(क) फूँक से बजने वाला वाद्य यंत्र कौनसा है?

(अ) नगाड़ा (ब) बाँसुरी (स) भपंग (द) सितार ( )

(ख) साइबेरिया से आने वाले पक्षी को राजस्थान में किस नाम से जाना जाता है?

(अ) बगुला (ब) हंस (स) कुरजां (द) कोयल ( )

2. सत्य / असत्य छाँटिए–

(क) कैलादेवी के मंदिर में गाये जाने वाले गीत लांगुरिया कहलाते हैं। [सत्य / असत्य]

(ख) कालबेलिया एक प्रकार का वाद्य यंत्र होता है। [सत्य / असत्य]

(ग) भपंग एक राजस्थानी लोकवाद्य यंत्र है। [सत्य / असत्य]

(घ) अग्नि–नृत्य विश्नोई संप्रदाय के लोगों द्वारा किया जाता है। [सत्य / असत्य]

3. मिलान करो-

(क)

स्थानीय शब्दावली	मानक शब्दावली
1. म्हारां	खेत
2. खेतां	स्वाद
3. सवाद	सवार
4. असवार	तेरा
5. थारो	मेरा

(ख) **वाद्य यंत्र** — **संबंधित चित्र**

नगाड़ा

चंग

सितार

रावणहत्था

4. अधूरे गीत / पंक्ति को पूरा करो-

1. अरे हे रूणीचे रा धणिया, अजमाल जी रा कँवरा,

....

....

म्हारो हेलो सुणो नी रामा पीर जी, म्हारो हेलो सुणोनी रामा पीर जी।।

2. लड़ली लूमा झूमा ए, लड़ली लूमा झुमा ए

ओ .... नखराळो आलिजा .... नखराळो.................. ।

ओ लड़ली लूमा झूमा ए लड़ली लूमा झुमा ए

....

5. अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न–

1. पानी भरने जाती हुई महिलाएँ जो गीत गाती हैं उस गीत का नाम बताइए।
2. अलगोजा कैसे बजाया जाता है?
3. पाठ में 'नीले घोड़े रा असवार' किसे कहा गया है?

भाषा की बात–

1. निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित शब्दों में संज्ञा, सर्वनाम एवं विशेषण पहचानिए–

   I. <u>बाजरियो थारो</u> खीचडो लागै <u>घणो</u> सवाद

   II. मैं राजस्थान हूँ। <u>सुरीला</u> राजस्थान।

2. निम्नलिखित शब्दों के विपरीत अर्थ वाले शब्द पाठ में से ढूँढ़कर लिखें–

   (1) बेसुरा (2) दुःख (3) अंदर (4) रंगहीन

3. निम्नलिखित शब्दों के समान अर्थ वाले शब्द पाठ में से ढूँढ़कर लिखें–

   (1) कृषि (2) स्त्री (3) सरोवर (4) अश्व

रचनात्मक प्रश्न–

1. अपनी पसंद के वाद्य यंत्र का चित्र बनाएँ।

2. अपने शिक्षक, परिजनों एवं सहपाठियों की मदद से राजस्थान के लोकगीतों में आने वाले पशु-पक्षियों की सूची बनाएँ।

3. अपने क्षेत्र के लोकगीत को कक्षा में सुनाइए।

4. राजस्थान के अलग-अलग वाद्य यंत्रों एवं नृत्यों की सूची बनाएँ।

5. निम्नलिखित श्रेणियों में वाद्य यंत्रों के नाम लिखें।

वाद्य यंत्र का नाम	वाद्य यंत्र की श्रेणी			
	तत वाद्य	सुषिर वाद्य	घन वाद्य	अवनद्ध वाद्य
एकतारा				
रावणहत्था				
चंग				
भपंग				
हारमोनियम				
मंजीरा				
अलगोजा				

यह भी जानें-

कच्छी घोड़ी नृत्य के बारे में

1. कच्छी घोड़ी नृत्य में नर्तक घोड़े की नई पोशाक पहनते हैं।
2. इसमें नर्तक नकली लड़ाई में भाग लेते हैं।
3. इस नृत्य में राजस्थान के लोकगीतों के साथ ही परंपरागत वाद्य यंत्रों की धुनों का प्रयोग किया जाता है।
4. इस नृत्य में झांझ वाद्य यंत्र का प्रयोग किया जाता है।

कठपुतली नृत्य के बारे में-

1. कठपुतली नृत्य में कई हास्य किरदार होते हैं।
2. इस नृत्य में नाटकीय क्षेत्रीय संगीत का प्रयोग होता है।
3. कठपुतली नृत्य में कई तरह की कठपुतलियों का प्रयोग किया जाता है। जैसे–धागा कठपुतली, छाया कठपुतली, छड़ कठपुतली, दस्ताना कठपुतली।
4. कठपुतली नृत्य में कलाकार अपनी अँगुलियों से बँधे दो या पाँच धागों से कठपुतलियों को चलाते हैं।
5. कठपुतली नृत्य में कई तरह की कलाओं का प्रदर्शन किया जाता है। जैसे–परिधान, काष्ठकला, वस्त्र–निर्माण कला, रूप–सज्जा, संगीत और नृत्य।

अध्याय - 8

नारे कितने प्यारे

(कठपुतलियों का प्रदर्शन होने वाला है। मंच के ठीक सामने बच्चे बैठे हैं। आज का प्रदर्शन कुछ अलग और खास है। इसमें नारों की जुबानी स्वतंत्रता की कहानी जो बताई जाने वाली है। साथ ही उस कहानी को स्वतंत्र भारत के चहुँमुखी विकास से जोड़ा जाने वाला है।)

मंच पर खेमली और पेमली नाम की दो कठपुतलियाँ गीत गा रही है-

खेमली- सुनो कहानी नारों की, सुनो कहानी नारों की!
तुमको आज सुनाउँगी मैं, अमर कहानी नारों की!

पेमली- कहो कहानी नारों की, न्यारे-न्यारे नारों की
क्या जरूरत थी नारों की? कहो कहानी नारों की!

खेमली- सुनो कहानी नारों की, प्यारे-प्यारे नारों की...
वेश बदलकर आया फिरंगी, कहे कि मैं करता व्यापार!
झूठ, कपट का जाल बिछाया, खूब बढ़ाए अत्याचार!
देश मेरा..... हुआ गुलाम....
जनता में त्राहिमाम! हाय! राम, हाय! राम...

पेमली– हाय! राम, हाय! राम, दुर्गति बेचारों की!
क्या जरूरत थी नारों की? कहो कहानी नारों की...

खेमली– परेशान सब लोग बड़े थे!
फिर भी संग वे नहीं खड़े थे!
नहीं एकता नहीं चेतना,
खंड-खंड में वे बिखरे थे!
नारों ने ही अलख जगाई, अंग्रेजों की नींद उड़ाई!
नारों ने ही हिम्मत बाँधी, दीन, दुखी, लाचारों की...
सुनो कहानी नारों की....

पेमली– कौन थे वे नारों के गायक, वीर, बली, स्वाभिमानी?
स्वतंत्रता के अमर पुजारी, सच्चे त्यागी, बलिदानी!

खेमली– सुनो, सुनाऊँ नारे अब!
सुनकर जिनको जागे सब!
बोल उठे थे बाबू बंकिम...
वंदेमातरम... वंदेमातरम
बोल उठी थी साँस भी अंतिम...
वंदेमातरम... वंदेमातरम।

इधर तिलक हुँकार उठे–

"स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है,
मैं इसे लेकर रहूँगा।"

उधर सुभाष ललकार उठे–

"तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा।"
जय हिंद...दिल्ली चलो!
जय हिंद...दिल्ली चलो!
नारा दिया इन्होंने ऐसा, साहस नहीं, किसी में वैसा!

पेमली– वाह जी वाह! भई वाह जी वाह!
वाह जी वाह! भई वाह जी वाह!

खेमली– और सुनो तुम और सुनो...
करके थोड़ा गौर सुनो...

भगतसिंह दीवाना निकला,पहन बसंती एक चोला!
अंग्रेजों के दम को जिसने, इंकलाब से जा तोला!
इंकलाब जिंदाबाद... इंकलाब जिंदाबाद
राजगुरु, सुखदेव, भगतसिंह था शेरों का एक टोला!
भारत माँ की आजादी को, सबने ये नारा बोला!
इंकलाब जिंदाबाद... इंकलाब जिंदाबाद

पेमली– अरी कौन था वह बहना...
सच्ची-सच्ची तुम कहना...
बिना ढाल, तलवार लड़ा जो?
जिसके पीछे देश खड़ा वो?

खेमली– साबरमती के संत वे, पतझर में वसंत वे...
स्वतंत्रता की आँधी वे, प्यारे बापू गांधी वे...
सत्य,अहिंसा और शांति का जादू लाए गांधीजी!
पहन लंगोटी, हाथ में सोटी, चरखा लाए गांधीजी!
अंग्रेजों भारत छोड़ो...... अंग्रेजों भारत छोड़ो......
सविनय अवज्ञा, असहयोग को लेकर आए गांधीजी!
करो या मरो...
करो या मरो हम लोगों से कहने आए गांधी जी!
स्वतंत्रता की, सत्याग्रह की ऐसी आई आँधी जी!
अंग्रेजों भारत छोड़ों ...... अंग्रेजों भारत छोड़ो.....

पेमली– तो क्या छोड़ गए भारत अंग्रेज?
फिर क्या छोड़ गए भारत अंग्रेज?

खेमली– हाँ नारों का यह प्रतिफल था, गूँज रहा उनमें जन–बल था
उनमें छिपा सुनहरा कल था, उनसे हम सबको संबल था
रणभेरी थे, सिंहनाद थे, नारे थे अग्नि से तेज...
हाँ... छोड़ गए भारत अंग्रेज!
हाँ... छोड़ गए भारत अंग्रेज!

पेमली– आजादी की खुली हवा में, भारत ने अँगड़ाई ली!
सबक सिखाया उस दुश्मन को, जिसने मोल लड़ाई ली!
हुआ सवेरा आजादी का, खुशहाली छाई होगी
फिर नारों से जागे जनता, क्या जरूरत आई होगी
क्या मंद पड़ा नारों का जोर?
क्या मंद पड़ा नारों का जोर?

खेमली– ना... ना... पेमली ऐसा ना था!
तुम कहती हो वैसा ना था!
आजादी थी मिली मगर, बड़ी कठिन थी अभी डगर...
सीमा पर खतरा दुश्मन का, संकट छाया था अन्न–धन का!
चिंता जब छाएँ घनघोर,
क्यों मंद पड़े नारों का जोर!

पेमली– कौन उठा, हुँकार लगाई
कौन बना दुख में हनुमान?
किसने लाज रखी भारत की,
फिर से लौटाया वह मान?
तू ही बतला प्यारी बहना
मुझको नहीं कोई अनुमान!

खेमली– जय जवान, जय किसान
जय जवान, जय किसान।
भारत माँ का लाल बहादुर, खड़ा हो गया सीना तान!
खेतों में, सरहद पर जिसने बेजानों मे भर दी जान!
जय जवान, जय किसान
जय जवान, जय किसान।

पेमली– वाह जी वाह! भई...वाह जी वाह!
वाह जी वाह! भई...वाह जी वाह!

खेमली– हाँ जी हाँ! भई...हाँ जी हाँ!
हाँ जी हाँ! भई...हाँ जी हाँ!
जय जवान, जय किसान
अटल ने जोड़ा जय विज्ञान
जय जवान, जय किसान
नारा गूँजा...जय विज्ञान!

पेमली– शक्ति चमकी, खेती दमकी, नित नूतन बढता विज्ञान
सुना है मैंने चंदा पर भी, पहुँचाया है कोई यान!

खेमली– हाँ जी हाँ! भई...हाँ जी हाँ!
अंतरिक्ष में 'चंद्रयान'! अंतरिक्ष मे 'चंद्रयान'!

हम सब बोले... अनुसंधान
जय अनुसंधान
जय जवान, जय किसान,
जय विज्ञान, जय अनुसंधान
मेरा भारत देश महान!

(खेमली पेमली समवेत स्वर में)

अपना भारत देश महान, विश्व में गूँजे गौरव गान!

बच्चे- अपना भारत देश महान, विश्व में गूँजे गौरव गान!
खूब पढ़ें, हम खूब बढ़ें, मेहनत से निज भाग्य गढ़ें...
स्वच्छ धरा हो, स्वच्छ गगन
जय भारत, जय जन-गण-मन!
दया, प्रेम, सेवा, सम्मान...
मेरा भारत देश महान,
अपना भारत देश महान!

अभ्यास कार्य

आओ बात करें-

1. स्वतंत्रता आंदोलन में स्त्रियों का क्या योगदान रहा? चर्चा कीजिए।
2. गांधीजी के असहयोग एवं सविनय अवज्ञा आंदोलन के बार मे शिक्षक/शिक्षिका से चर्चा कीजिए।
3. भगतसिंह, सुखदेव और राजगुरु को फाँसी क्यों दी गई? अपने शिक्षक से पूछिए।
4. स्वतंत्रता के बाद भी देश को किन समस्याओं का सामना करना पड़ा?

सोचो और लिखो-

1. सही विकल्प चुनिए-

(क) नारों ने क्या नहीं किया-

(अ) अलख जगाई (ब) अंग्रेजों की नींद उड़ाई

(स) आलसी बनाया (द) हिम्मत बाँधी ( )

(ख) ''बिना ढाल और तलवार लड़ा जो,
जिसके पीछे देश खड़ा वो।''

इन पंक्तियों में किसकी तरफ इशारा किया गया है?

(अ) बाल गंगाधर तिलक (ब) सरदार वल्लभ भाई पटेल

(स) भगत सिंह (द) महात्मा गांधी ( )

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

(क) शक्ति चमकी, खेती .... नित नूतन बढ़ता विज्ञान।

(ख) झूठ, कपट का .... बिछाया, खूब बढ़ाए अत्याचार।

(ग) भगतसिंह दीवाना निकला, पहन .... एक चोला।

(घ) ....मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है, मैं इसे लेकर रहूँगा।

3. मिलान कीजिए-

स्तंभ-अ	स्तंभ-ब
(क) जय हिंद	लालबहादुर शास्त्री
(ख) वंदेमातरम	महात्मा गांधी
(ग) जय जवान, जय किसान	सुभाष चंद्र बोस
(घ) करो या मरो	बंकिम चंद्र चटर्जी

4. नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

(क) वेश बदलकर आए फिरंगी ने क्या किया?

(ख) नारों के गायक अर्थात नारे देने वाले लोग कैसे थे?

(ग) भगत सिंह के टोले के दो सदस्य और कौन थे?

(घ) गांधीजी किन-किन जीवन-मूल्यों का जादू लाए थे?

(ङ) स्वतंत्रता आंदोलन में नारों की क्या भूमिका रही होगी?

(च) भारत की परतंत्रता के क्या कारण रहे होंगे?

(छ) 'जय जवान, जय किसान, जय विज्ञान' नारे के आधार पर बताइए कि देश के विकास में जवान, किसान और विज्ञान की क्या भूमिका है?

भाषा की बात–

1. नीचे दी गई पंक्तियों में स्वतंत्रता सेनानियों की विशेषताएँ बताने वाले शब्द दिए गए हैं। इन पंक्तियों में से ऐसे शब्द छाँटकर नए वाक्य बनाइए –

   कौन थे वे नारों के गायक, वीर, बली, स्वाभिमानी?
   स्वतंत्रता के अमर पुजारी, सच्चे त्यागी, बलिदानी!!

   1. ....
   2. ....
   3. ....
   4. ....
   5. ....
   6. ....

2. निम्नलिखित शब्दों को उचित स्थान या क्रम पर जमाकर वाक्य बनाइए–

   1. भारत /है / प्यारा/ देश ....
   2. के/तुलसीदास/ रामचरितमानस/हैं/ग्रंथ/रचयिता ....

यह भी करें–

अपने शिक्षक एवं कक्षा साथियों की सहायता से अपने विद्यालय, गाँव, समाज या देश से जुड़े हुए किसी विषय पर नारे तैयार करें।

आकलन-II

C1B2H4

1. चित्र देखकर कहानी बनाइए और उसे कक्षा में सुनाइए।

2. कोई राजस्थानी गीत सुनाइए जो आपके स्थानीय परिवेश में गाया जाता है।

3. पोस्टर को ध्यान से पढ़िए और प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. पोस्टर के अनुसार 'हॉकी का जादूगर' किसे कहा गया है?

....

....

2. 29 अगस्त को कौनसा दिवस मनाया जाता है?

....

....

4. राष्ट्रीय खेल दिवस को मनाने के लिए आप अपने विद्यालय में क्या-क्या करना चाहते हैं? अपने विद्यालय के प्रधानाध्यापक/प्रधानाचार्य को एक पत्र लिखिए।

सेवा में, दिनांक ....

श्रीमान प्रधानाध्यापक महोदय,

....

....

....

....

आपका शिष्य/आपकी शिष्या

....

5. दिए गए मुहावरों से वाक्य बनाकर लिखिए -

जैसे-'अपनी बात से पलटना' - आपने मुझे पतंग दिलाने को कहा था। अब अपनी बात से पलटना मत।

1. 'सिर खुजाना' - ....

2. 'आँख का तारा' - ....

3. 'आँखें चौंधिया जाना' - ....

4. 'कानों-कान खबर ना लगना' ....

6. कोष्ठक में दिए गए शब्दों में से सही शब्द चुनकर वाक्य पूरा करो-

(क) .... घर जा रही थी। (मोहन / राधा)

(ख) एक पत्ता हवा में ....। (अटका / अटकी)

(ग) पतंग आकाश में क्यों नहीं ....। (भटका / भटकी)

(घ) स्कूटर पर ....मम्मी की सवारी। (निकला / निकली)

(ङ) साइलेंसर से धुँआ ....। (निकला / निकली)

(च) मुझे कोई उपाय नहीं ....। (सूझा / सूझी)

7. नीचे दिए गए वाक्यों में रेखांकित एकवचन शब्दों को बहुवचन में बदलते हुए वाक्य बनाएँ–

रानी ने मिठाई खाई **रानी ने मिठाइयाँ खाई।**

1. पवन ने कहानी सुनी। ....
2. कक्षा में ताली की आवाज आई। ....
3. रमेश ने अपनी पुस्तक उठाई। ....
4. कक्षा की खिड़की खुली थी। ....

सोचो और लिखो–

1. सुशीला ने किस सामाजिक समस्या के खिलाफ आवाज उठाई ?
2. 'जो चढ़ गए पुण्यवेदी पर, लिए बिना गर्दन का मोल' पंक्ति का अर्थ लिखो।
3. भवाई नृत्य की विशेषताएँ लिखिए।
4. बाल गंगाधर तिलक ने कौनसा नारा दिया ?

Z7Q6P3

अध्याय - 9

भारत के महान व्यक्तित्व

छत्रपति शिवाजी

वीर शिवाजी का जन्म 19 फरवरी,1630 को पुणे के पास शिवनेरी दुर्ग में शाहजी भोंसले और जीजाबाई के पुत्र के रूप में हुआ। इनके जीवन पर माता जीजाबाई, दादा कोंडदेव एवं गुरू रामदास की शिक्षाओं का विशेष प्रभाव पड़ा। इनकी शिक्षाओं से शिवाजी में स्वतंत्रता, स्वाभिमान, वीरता, साहस और बलिदान की भावनाएँ जागी। वे एक कुशल योद्धा और कूटनीतिज्ञ बन गए।

बचपन में शिवाजी अपनी आयु के बालकों को इकट्ठाकर उनके नेता बनकर युद्ध करने और किले जीतने के खेल खेला करते थे। युवा होते ही जब उन्होंने पुरंदर और तोरण के किलों को जीता तो दूर-दूर तक उनकी कीर्ति फैल गई। वे गुरिल्ला या छापामार युद्ध में निपुण थे।

उन्होंने आततायी मुगल शासक औरंगजेब की नाक में दम कर दिया। वे उसकी धार्मिक कट्टरता, क्रूरता और अत्याचार के विरुद्ध थे।

शिवाजी ने बीजापुर के शासक आदिलशाह द्वारा भेजे गए खूँखार सेनापति अफजल खाँ को मार गिराया।

मुगल बादशाह औरंगजेब का सूबेदार शाइस्ता खाँ भी शिवाजी के आक्रमण से घबराकर भाग गया। मिर्जा राजा जयसिंह एवं शिवाजी के बीच पुरंदर की संधि हुई। कालांतर में सुरक्षा के आश्वासन पर उत्तर भारत की परिस्थितियों को समझने के लिए शिवाजी मुगल दरबार में उपस्थित हुए जहाँ सम्मानजनक व्यवहार नहीं होने पर शिवाजी क्रोधित हुए जिससे औरंगजेब ने उन्हें कैद कर लिया परंतु शिवाजी अपने साहस एवं चतुराई के बल पर वहाँ से बच निकले।

शिवाजी ने कई दुर्गों पर अधिकार किया जिनमें से एक था सिंहगढ़ दुर्ग जिसे जीतने के लिए उन्होंने तानाजी को भेजा था। इस दुर्ग को जीतने के दौरान तानाजी ने वीरगति पाई थी।

सन 1674 में रायगढ में शिवाजी का राजतिलक हुआ और 'छत्रपति' की उपाधि मिली।

शिवाजी का विवाह सइबाई निंबालकर के साथ हुआ जिन्होंने संभाजी को जन्म दिया। शिवाजी की मृत्यु के बाद संभाजी मराठा साम्राज्य के शासक बने।

अपने देश, धर्म और संस्कृति की रक्षा में प्राणों की भी परवाह न करने वाले शिवाजी को हम एक सच्चे राष्ट्रनायक के रूप में याद करते हैं।

नेताजी सुभाष चंद्र बोस

''तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा।''

आजादी की लड़ाई में देश के युवाओं को इस जोशीले नारे से जोड़ने वाले स्वतंत्रता सेनानी का नाम है- सुभाष चंद्र बोस।

23 जनवरी 1897 को ओडिशा के कटक में जानकीनाथ बोस और प्रभावती देवी के घर जन्मे

सुभाष बचपन से ही होनहार थे। रामकृष्ण परमहंस और स्वामी विवेकानंद से प्रेरित सुभाष ने अंग्रेज सरकार की प्रतिष्ठित सिविल सेवा को ठुकराकर देश सेवा का प्रण लिया।

सुभाष सन 1938 मे भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस के अध्यक्ष बने। बाद में उन्होंने फॉरवर्ड ब्लॉक की स्थापना की। दूसरे विश्वयुद्ध के दौरान अंग्रेजों के खिलाफ लड़ने के लिए उन्होंने जापान के सहयोग से 'आजाद हिंद फौज' का गठन किया। उनके द्वारा 'जय हिंद' और 'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा' के नारे दिए गए।

सन 1943 में उन्होंने सिंगापुर से सुप्रीम कमांडर के रूप में 'दिल्ली चलो' का नारा दिया और आजाद हिंद सरकार का गठन किया। बोस ने अंडमान और निकोबार द्वीप पर अधिकार कर इन द्वीपों का नाम 'शहीद' और 'स्वराज द्वीप' रखा।

उन्होंने ही सबसे पहले सिंगापुर से रेडियो प्रसारण में महात्मा गांधी को 'राष्ट्रपिता' कहा था। साल 2021 में केंद्र सरकार ने सुभाषचंद्र बोस की जयंती को पराक्रम दिवस के रूप में मनाने की घोषणा की।

हर भारतवासी भारत माँ के इस वीर सपूत को 'नेताजी' के नाम से जानता है।

लौह पुरुष - सरदार पटेल

गुजरात के नर्मदा जिले में नर्मदा नदी के किनारे विश्व की सबसे ऊँची मूर्ति 'स्टैच्यू ऑफ यूनिटी' स्थापित है। यह मूर्ति सरदार वल्लभ भाई पटेल की है। पटेल देश के पहले उपप्रधानमंत्री एवं गृहमंत्री रहे। अपने मजबूत इरादों और कर्तव्यनिष्ठ व्यक्तित्व के कारण इन्हें 'लौहपुरुष' के रूप में जानते हैं।

पटेल का जन्म 31 अक्टूबर,1875 को नडियाद, गुजरात में हुआ। इनके पिता का नाम झवेरभाई पटेल एवं माता का नाम लाडबा देवी था। उनकी शुरूआती शिक्षा मुख्यत: स्वाध्याय से ही हुई। लंदन जाकर उन्होंने बैरिस्टर की पढाई की और वापस आकर अहमदाबाद में वकालत करने लगे। महात्मा गांधी के विचारों से प्रेरित होकर उन्होंने भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लिया।

सन 1918 में खेड़ा सत्याग्रह एवं 1928 में बारदोली सत्याग्रह के द्वारा किसानों पर अंग्रेज सरकार द्वारा जबरन थोपी गई लगान वृद्धि के विरुद्ध संघर्ष किया। बारदोली आंदोलन में सफलता पर वहाँ की महिलाओं नें इन्हें 'सरदार' कहकर सम्मान दिया।

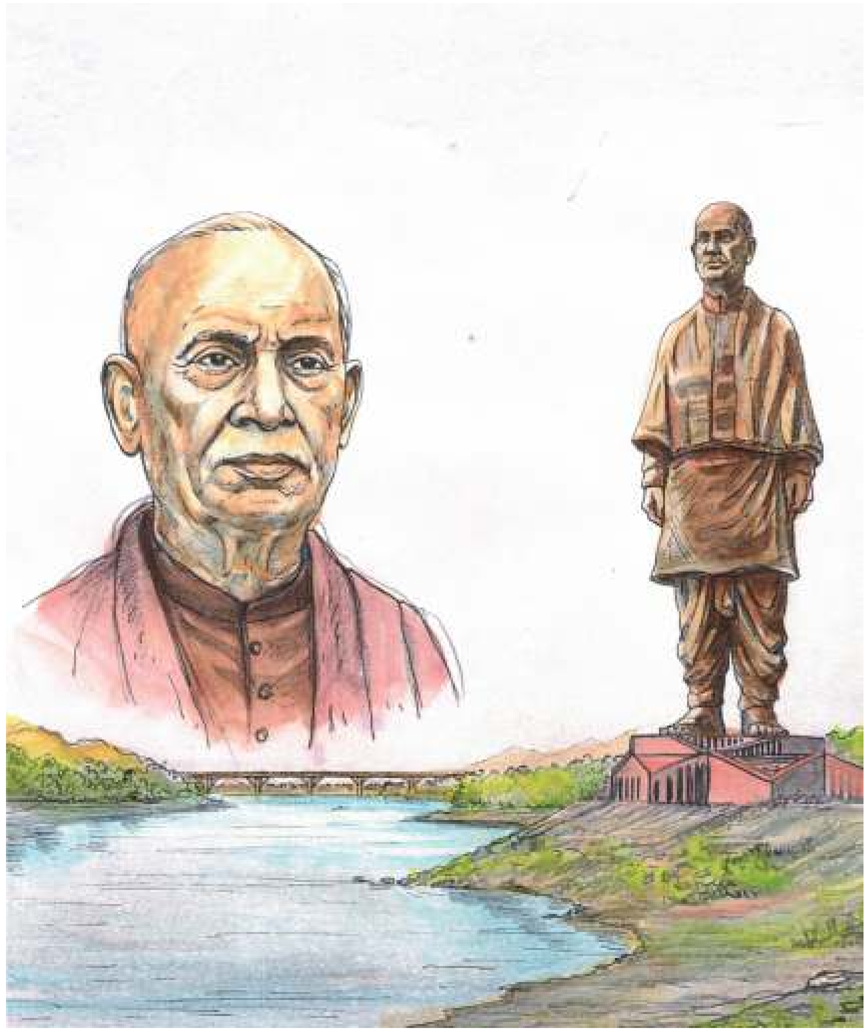

देश की आजादी के बाद अपनी सूझबूझ और कूटनीति से देशी रियासतों को एक कर अखंड भारत की नींव रखी। इनके जन्म दिवस 31 अक्टूबर को प्रतिवर्ष 'राष्ट्रीय एकता दिवस' के रूप में मनाया जाता है।

भारत सरकार ने सन 1991 में इन्हें मरणोपरांत 'भारत रत्न' देकर सच्ची श्रद्धांजलि दी।

अभ्यास कार्य

आओ बात करें-

1. सरदार पटेल ने किस तरह से देशी रियासतों का एकीकरण किया? अपने अध्यापक से चर्चा कीजिए।
2. आपको देश का कौनसा स्वतंत्रता सेनानी अच्छा लगता है और क्यों?

3. निम्नलिखित के बारे में अपने अध्यापक या परिचितों से जानिए-

(क) शिवाजी और अफजल खाँ की घटना।

(ख) शिवाजी और गुरू रामदास के शिक्षाप्रद किस्से।

(ग) सुभाष चंद्र बोस और आजाद हिंद फौज।

सोचो और लिखो-

1. नीचे दिए गए प्रश्न का सही उत्तर चुनिए -

(क) छत्रपति शिवाजी के जीवन पर किस व्यक्ति का प्रभाव नहीं पड़ा?

(अ) अफजल खाँ (ब) जीजाबाई

(स) दादा कोंडदेव (द) गुरु रामदास ( )

(ख) शिवाजी की मृत्यु के बाद उनके साम्राज्य का शासक कौन बना?

(अ) राजाराम (ब) पेशवा बाजीराव

(स) संभाजी (द) औरंगजेब ( )

(ग) सुभाषचंद्र बोस को हम किस नाम से जानते हैं?

(अ) बाबा साहेब (ब) नेताजी

(स) राष्ट्रपिता (द) सरदार ( )

(घ) 'स्टैच्यू ऑफ यूनिटी' किसकी मूर्ति है?

(अ) महाराणा प्रताप की (ब) जवाहरलाल नेहरू की

(स) सरदार वल्लभ भाई पटेल की (द) अटल बिहारी वाजपेयी की ( )

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

(क) पटेल देश के पहले .... और गृहमंत्री रहे।

(ख) बोस ने अंडमान और निकोबार द्वीप पर अधिकार कर इन द्वीपों का नाम .... और .... द्वीप रखा।

(ग) पुरंदर की संधि मिर्जा राजा .... एवं शिवाजी के मध्य हुई।

(घ) सुभाषचंद्र बोस द्वारा .... और 'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा' के नारे दिए गए।

3. नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

(क) शिवाजी किस तरह के युद्ध करने में निपुण थे?

(ख) शिवाजी को मारने के लिए अफजल खाँ को किसने भेजा था?

(ग) सुभाषचंद्र बोस का जन्म कब एवं कहाँ हुआ था?

(घ) सरदार वल्लभ भाई पटेल को 'लौह पुरुष' क्यों कहा जाता है?

(ङ) सरदार वल्लभ भाई पटेल द्वारा अंग्रेजों के विरोध में किए गए दो आंदोलनों के नाम लिखिए।

(च) शिवाजी और सुभाष चंद्र बोस के संघर्षों में क्या समानताएँ थी?

(छ) महान व्यक्तियों की मूर्तियाँ क्यों लगाई जाती हैं?

(ज) यदि हमारा देश अंग्रेजों से स्वतंत्र न होता तो आज देश की हालत क्या होती?

(झ) बच्चे अपने देश के विकास में योगदान किस तरह से दे सकते हैं?

भाषा की बात-

1. दिए गए वाक्यों में से विशेषण शब्द छाँटकर लिखिए-

(क) सुभाष बचपन से ही होनहार बालक थे।

....

(ख) राधा मीठा आम खा रही है।

....

V6B5R9

अध्याय - 10

दोहे और पद

पर घर पग नी मेळणो, वना मान मनवार ।
इंजन आवै देख ने, सिगनल रो सत्कार ।। 1 ।।

रेंठ फरै चरक्यो फरै, पण फरवा में फेर।
वो तो वाड़ हरयौ करै, यो छूंता रो ढेर।। 2।।

–बावजी चतुरसिंह

करत–करत अभ्यास के, जड़मति होत सुजान ।
रसरी आवत जात ते, सिल पर परत निशान ।। 1 ।।

सरवर तरवर संतजन, चौथो बरसै मेह ।
परमारथ रै कारणै, च्यारां धारी देह ।। 2 ।।

–कबीर

मानसरोवर मांय जळ, प्यासा पीवै आय।
दादू दोष न दीजिए, घर-घर कहण न जाय ।। 1 ।।

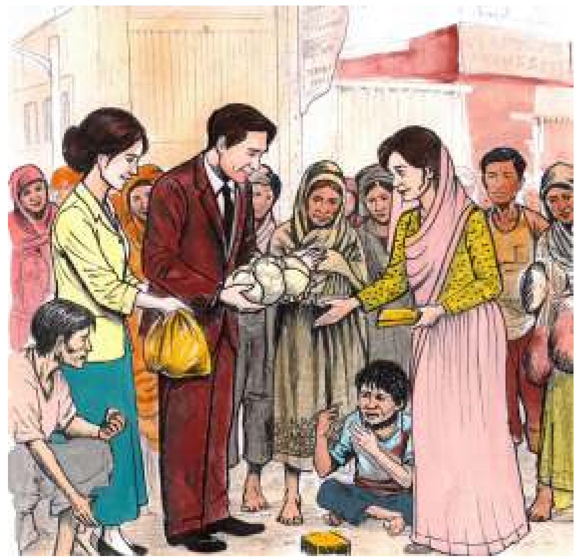

दादू दीया है भला, दिया करो सब कोय।
घर में धरा न पाइए, जो कर दिया न होय ।। 2 ।।

-दादू दयाल

बसो मेरे नैनन में नंदलाल।
मोहनी मूरत, साँवरी सूरत, नैना बने बिसाल।
अधर सुधारस मुरली राजत, उर बैजंती माल॥
छुद्रघंटिका कटितट सोभित, नूपुर सबद रसाल।
मीरां प्रभु संतन सुखदाई भगत बछल गोपाल॥

-मीरा

अभ्यास कार्य

आओ बात करें–

1. दादू और मीरा के दोहों से आपने क्या समझा? अपने शब्दों में बताइए।
2. यदि आपको कबीर, दादू या मीरा से मिलने का अवसर मिलता तो आप उनसे क्या प्रश्न पूछते?
3. मीरा ने कृष्ण की कैसी छवि का वर्णन किया है?
4. क्या अभ्यास से हर कठिन कार्य को सरल बनाया जा सकता है? अपने अनुभव साझा करें।

सोचो और लिखो–

1. सही उत्तर चुनो–

1. 'रसरी आवत जात है, सिल पर परत निशान।' इस पंक्ति में किसका महत्व बताया गया है?

   (क) प्रेम (ख) धैर्य (ग) निरंतर अभ्यास (घ) त्याग ( )

2. मीरा किसके प्रति अपनी भक्ति व्यक्त कर रही है?

   (क) दादू (ख) कृष्ण (ग) कबीर (घ) तुलसीदास ( )

2. मिलान करो–

(क) करत–करत अभ्यास के	दिया करो सब कोय।
(ख) मानसरोवर मांय जळ	जड़मति होत सुजान।
(ग) दादू दीया है भला	प्यासा पीवै आय।

3. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(क) रसरी आवत जात है, ... पर परत निशान।

(ख) मीरा प्रभु .... सुखदाई।

(ग) मोहनी मूरत, ... सूरत, नैना बने बिसाल।

(घ) परमारथ रै कारणै, ... धारी देह।

(ङ) इंजन आवे देख ने, ... रो सत्कार।

रचनात्मक चिंतन-

1. 'दादू दीया है भला, दिया करो सब कोय।' इस दोहे का आधुनिक जीवन में क्या महत्व है? अपने विचार लिखिए।
2. अभ्यास का महत्व बताते हुए अपने जीवन की किसी घटना का वर्णन करें।
3. आपको पाठ में से जो दोहा अथवा पद सबसे अच्छा लगा है उसके वर्णन पर आधारित चित्र बनाएँ।

भाषा की बात-

1. नीचे दिए गए विशेषण शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करें-

   (दान, भक्त वत्सल, अविनाशी, बुद्धिमान)

   (क) मीरा के कृष्ण .... थे।

   (ख) अभ्यास करने से व्यक्ति .... बन जाता है।

   (ग) दादू ने लोगों को .... करने की प्रेरणा दी।

   (घ) ईश्वर .... होते हैं, उनका कभी नाश नहीं होता।

2. नीचे दिए गए शब्दों को सही क्रम में लगाकर वाक्य बनाइए-

   (क) अभ्यास / सफलता / निरंतर / दिलाता है।

   (ख) सबको / करना / चाहिए / भला।

   (ग) कृष्ण/ मीरा / आराध्य /को /मानती / थी।

   (घ) अभ्यास / से / बुद्धिमान / जड़मति / बनता है।

यह भी करें -

1. कक्षा साथियों के साथ मिलकर विद्यालय की दीवार पत्रिका (भित्ति पत्रिका) बनाओ जिस पर नीतिगत दोहों को सुंदर लेख में प्रदर्शित किया गया हो।

R5U1C4

अध्याय - 11
पिकनिक

पात्र :

- सगुन
- गुनगुन
- रमेश जी (गुनगुन और सगुन के पापा)
- प्राचार्य श्वेता जी
- किरण (बाल सभा की अध्यक्ष)
- सुरेश जी (विद्यालय के शिक्षक)
- विद्यार्थी

दृश्य 1

(गुनगुन और सगुन का घर जहाँ पर गुनगुन व्हील चेयर पर और सगुन बिस्तर पर बैठी है पिकनिक के बारे में बातें कर रही हैं।)

गुनगुन (संशय में) : सगुन! क्या पापा मुझे पिकनिक पर जाने देंगे? विद्यालय में तो सभी तैयार हैं लेकिन मुझे शायद नहीं जाने देंगे।

सगुन : हाँ, मुझे भी ऐसा ही लग रहा है। पता है मुझे पिकनिक मॉनिटर (छात्र नायक) बनाया है और पिकनिक पर चलने वाले बच्चों की सूची बनाने की जिम्मेदारी भी दी है। मैं तब बहुत खुश थी लेकिन अभी पता नहीं क्या होगा?

गुनगुन : हमें पापा से तो पूछना ही पड़ेगा। चलो एक बार बात कर लेते हैं।

(सगुन बिस्तर से उतर कर व्हीलचेयर पर गुनगुन को पापा के कमरे की तरफ लेकर जाती है। पापा... पापा... बोलते आवाज लगाती है)

सगुन : पापा, आपको एक बात बतानी है लेकिन आप वादा करो कि मना नहीं करोगे।

पापा : ठीक है! पहले बताओ तो बात क्या है?

सगुन : पापा! इस रविवार विद्यालय के सभी बच्चे पिकनिक पर जा रहे हैं और हम दोनों को भी जाना है।

पापा : (अपना सिर गुनगुन की तरफ करते हुए, थोड़ा आश्चर्य के भाव से) अरे! क्यों जाना है? गुनगुन कैसे जाएगी? वहाँ पर गुनगुन को बहुत परेशानी होगी।

गुनगुन : मुझे कोई परेशानी नहीं होगी पापा। विद्यालय के दोस्त मेरी मदद करेंगे।

पापा : अरे! मदद तो कर देंगे लेकिन जब वे वहाँ जाकर मौज-मस्ती में लग जाएँगे तो तुम अकेली रह जाओगी।

सगुन : ऐसा नहीं है पापा! हमारे दोस्त अच्छे हैं और मैं भी तो जा रही हूँ। गुनगुन को कोई परेशानी नहीं होगी।

पापा : अरे बच्चो! ऐसी जिद नहीं करते, मैं जानता हूँ वहाँ पर गुनगुन को बहुत परेशानी होगी।

गुनगुन : लेकिन पापा हमारी कक्षा के सभी बच्चे और विद्यालय के शिक्षक भी जा रहे हैं। हमारा भी जाने का बहुत मन हो रहा है।

पापा : देखो! तुम्हें पढ़ाई में ध्यान देना चाहिए, मैं फिर कभी लेकर जाऊँगा। सॉरी बच्चो, अभी मैं तुम्हारा वादा पूरा नहीं कर पाऊँगा।

(गुनगुन और सगुन चुप होकर चली जाती हैं।)

दृश्य 2 : विद्यालय की बालसभा

(विद्यालय में बालसभा का आयोजन हो रहा है। सभी बच्चे एकत्र होकर आपस में बातचीत कर रहे रहें हैं। सभी शिक्षक और प्राचार्य उपस्थित हैं।)

किरण (बालसभा की अध्यक्ष) : सभी को नमस्ते! अगले सप्ताह हम सभी पिकनिक पर जाने वाले थे लेकिन गुनगुन ने बताया है कि उसके पापा ने उसको पिकनिक पर जाने से मना कर दिया। आज की बालसभा में हम इस पर बातचीत करेंगे।

विद्यार्थी 1 : (चिंता जताते हुए) : मुझे लगता है गुनगुन के पापा उसकी चिंता कर रहे होंगे इस कारण उन्होंने मना किया होगा।

विद्यार्थी 2 : गुनगुन के पापा इसलिए चिंता कर रहे होंगे क्योंकि वह चल नहीं सकती है लेकिन वह हमारे साथ जाएगी और हम सब उसकी मदद करेंगे।

विद्यार्थी 3 : हाँ, सही बात है। हम सभी लोग साथ ही घूमेंगे, गुनगुन को कोई परेशानी नहीं होगी। हमें एक साथ जाना है। अगर गुनगुन नहीं जाएगी तो हम भी नहीं जाएँगे। यह अच्छा थोड़ी लगेगा कि सभी घूमने जाएँ और गुनगुन घर पर रहे।

(सभी बच्चे एक बार फिर आपस में बातचीत करने लगते हैं और फुसफुसाहट शुरू होती है)

किरण : ठीक है! फिर एक साथ पिकनिक पर जाएँगे। यदि गुनगुन नहीं गई तो कोई नहीं जाएगा।

(सभी बच्चे हाथ उठाकर सहमति व्यक्त करते हैं।)

प्राचार्य श्वेता जी : देखो बच्चो! आज तो छुट्टी का समय हो गया है। कल हम में से कोई गुनगुन के पापा से मिलेगा और हम उनसे बातचीत करेंगे। फिलहाल आप लोग घर जाओ।

दृश्य 3 : (गुनगुन के पिता रमेश जी से शिक्षक सुरेश जी की मुलाकात)

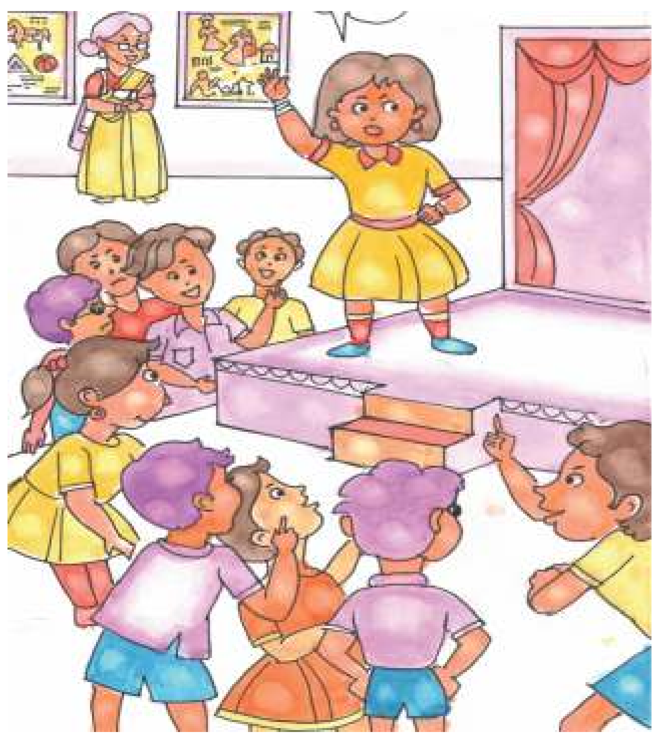

शिक्षक सुरेश जी (विनम्रता से) : रमेश जी नमस्ते! आपने सुना कि गुनगुन के पिकनिक पर नहीं जाने से विद्यालय के सभी बच्चों ने भी पिकनिक पर जाने से मना कर दिया।

रमेश जी : हाँ! मैंने भी सुना है लेकिन गुरु जी ये बच्चे जिद क्यों कर रहे हैं? आप तो जानते हैं गुनगुन दिव्यांग है। वह जन्म से ही चलने-फिरने में असमर्थ है। वह व्हीलचेयर के बिना चल नहीं पाती है। उसे सहायता की जरूरत पड़ती है। इसलिए मैं मना कर रहा हूँ। गुनगुन के कारण आप सभी को पिकनिक के दौरान परेशानी होगी।

शिक्षक सुरेश जी : आप सही कह रहें हैं। गुनगुन को केवल व्हीलचेयर पर बैठने और उतरने में मदद करनी पड़ती है। इसके अलावा और कहीं जरूरत नहीं पड़ती है। गुनगुन बाकी सभी काम खुद से कर लेती है। वह अपनी कक्षा में पढ़ने में बेहतर है। अपनी बात ठीक से कहती है। उसका व्यवहार भी

अच्छा है। उसके पास इतनी खूबियाँ हैं और आप किसी बात की चिंता मत करो। बच्चे कह रहे हैं कि वे सभी गुनगुन का ध्यान रखेंगे फिर किस बात की चिंता।

रमेश जी : आप पर भरोसा है। जब आप आए हैं तो मैं चिंता से मुक्त हो गया हूँ। आप लोगों ने ही तो उसे अच्छा और मजबूत बनाया है। ठीक है, अब मेरी भी सहमति है।

सुरेश जी : हम चाहते हैं कि बच्चों को थोड़ा घूमने-फिरने का मौका मिले। इससे उनके सभी पक्षों का विकास होगा। वे कुछ नया सीखेंगे। अब पढ़ाई को बाहरी जीवन से जोड़ना भी जरूरी है। दुनिया को जानना-सुनना और समझना भी पढ़ाई का हिस्सा है।

रमेश जी : आप सही कह रहे हैं। धन्यवाद!

दृश्य 4 : विद्यालय में पिकनिक की तैयारी

(विद्यालय में बच्चे खुशी से तैयार हो रहे हैं। सभी बच्चों को पिकनिक के लिए बस में बैठने को कहा जाता है।)

किरण : सब तैयार हैं? पिकनिक के लिए निकलने का समय हो गया है।

(सभी बच्चे खुश होकर बस में चढ़ते हैं) तीन बच्चे गुनगुन को बस पर चढ़ने में मदद कर रहे हैं।

प्राचार्य श्वेता जी : बच्चो! यह देखकर अच्छा लगता है कि आपने सबको साथ लेकर चलने का निर्णय लिया है। हमें हमेशा एक-दूसरे की इसी प्रकार से सहायता करनी चाहिए।

अभ्यास कार्य

आओ बात करें -

1. सगुन और गुनगुन की अपने पापा से क्या बातचीत हुई ?
2. यदि आप गुनगुन की जगह होते तो पापा के साथ क्या बातचीत करते ?
3. विद्यालय की बालसभा का फैसला सही था या गलत, आपकी क्या राय है ? अपनी राय के पक्ष में तर्क दीजिए।
4. क्या आपके साथ कभी ऐसा हुआ है कि जब आपका कोई काम करने के लिए बड़ों ने मना किया है ? उस वक्त आपको कैसा लगा ? कक्षा में साथियों के साथ अनुभव साझा करें।

सोचो और लिखो-

1. पापा गुनगुन को पिकनिक पर जाने से क्यों मना कर रहे थे ?

   ....

2. सभी बच्चों ने पिकनिक जाने से क्यों मना कर दिया ?

   ....

3. गुनगुन के पिता से शिक्षक ने क्या-क्या बातचीत की ?

   ....

4. आपके विद्यालय की बालसभा में क्या-क्या होता है ? लिखिए।

   ....

रचनात्मक कार्य -

1. पाठ को ध्यान में रखते हुए अपने सहपाठियों के साथ एक नाटक तैयार करके बालसभा में प्रस्तुत कीजिए।

2. यदि गुनगुन पापा के मना करने के बाद अपनी डायरी लिखती तो वह अपने मन की कौनसी बातें डायरी में लिखती ?

....

....

भाषा की बात-

1. निम्नलिखित वाक्यों में सही विराम चिह्नों का प्रयोग कीजिए-

(क) क्या आपने अपना काम पूरा कर लिया

(ख) रवीश रवि रीना और रोहित पढ़ाई कर रहे थे

(ग) गुरुजी बोले मेहनत का कोई विकल्प नहीं होता

(घ) राम बोला अरे वाह यह तो बहुत सुंदर चित्र है

(ङ) ''गुनगुन और सगुन खुशी-खुशी अपने कमरे में बैठी हैं''

2. ऊपर के वाक्य में खुशी-खुशी शब्द आया है। हम अपनी बातचीत में कभी-कभी एक शब्द को दो बार बोलते हैं। ऐसे और शब्दों का प्रयोग कर वाक्य बनाइए-

जैसे- घूम-घूम - राजू घूम-घूमकर बगीचे में सभी पौधों को देख रहा था।

(क) धीरे-धीरे - ....

(ख) पास-पास - ....

(ग) चलते-चलते - ....

3. आप बालसभा के अध्यक्ष हो। आपको सभी विद्यार्थियों से प्रश्न पूछने हैं। 'क्या', 'किसने' और 'क्यों' शब्द का प्रयोग करके चार प्रश्न लिखिए-

उदाहरण- 'क्या' आप लोग विद्यालय की सफाई करेंगे ?

(क) ....

(ख) ....

(ग) ....

(घ) ....

4. नीचे दो लोगों के बीच किसी विषय पर बातचीत को दो तरह से लिखकर प्रस्तुत किया गया है । इसे पढ़ो और इसके आधार पर नीचे दी गई गतिविधि को पूरा करो–

पहला तरीका–

राजा : तुम रोज कितना कमा लेते हो ?

किसान : महाराज! मैं रोज चार आने कमा लेता हूँ।

राजा : (चौंककर) बस! चार आने। इतने में गुजारा चल जाता है?

किसान : (विनम्रता से) जी महाराज! बहुत अच्छी तरह से।

राजा : वो कैसे?

दूसरा तरीका –

एक दिन राजा ने किसान से पूछा कि वह एक दिन में कितना कमा लेता है? किसान ने बताया कि वह रोज चार आने कमाता है। यह सुनकर राजा चौंक गए। उन्होंने किसान से जानना चाहा कि आखिर चार आने में उसका गुजारा कैसे चल जाता है? राजा का सवाल सुनकर किसान ने बहुत ही विनम्रता से कहा कि उसका गुजारा बहुत ही अच्छी तरह से चल रहा है। यह सुनकर राजा ने किसान से फिर पूछा कि वह चार आने में अपना गुजारा कैसे कर लेता है?

अब यदि ऊपर हुई बातचीत के दोनों तरीकों को देखें तो समझ में आता है कि दो लोगों के बीच हो रही बातचीत को कहानी या घटना के रूप में भी लिखा जा सकता है। अब इसी तरह से आप आगे हो रही बातचीत के इस अंश को भी लिखो–

पहला तरीका–

दीपक : (दौड़ता हुआ आता है) देखो दादाजी! ये इतने सारे लोग आपसे मिलने क्यों आ रहे हैं?

दादाजी : बेटा अगले माह विधानसभा के चुनाव होने वाले हैं ना! इसलिए चर्चा करने आ रहे हैं।

दीपक : दादाजी! ये चुनाव क्या होते हैं?

दादाजी : बेटा चुनाव में जनता अपने प्रतिनिधि चुनती है।

दीपक : प्रतिनिधि, अच्छा! प्रतिनिधि कैसे चुनते हैं?

दादाजी : अपना मत देकर।

दूसरा तरीका –

....

....

....

....

यह भी करें–

1. अपने साथियों के साथ मिलकर पिकनिक की योजना बनाएँ।
2. इस बार आप कहाँ घूमकर आए हैं इसका प्रतिवेदन तैयार करें।
3. नीचे कुछ चित्र दिए गए हैं? आप इनके उपयोग पर बातचीत कीजिए –

व्हील चेयर (पहियेदार कुर्सी)

बैसाखी

श्रवण यंत्र

चश्मा

नन्हा ध्रुवतारा

U4Z8I3

ऊँचा और खींच दे कोई,
सपनों का कंदील हमारा।
धरती से अच्छा लगता है,
अंबर में अपना उजियारा।

दूर आ रहा होगा कोई,
मेरे घर का पता पूछता।
उसे भटकने से रोकेगा,
यह मेरा रंगीन सितारा।
ऊँचा और खींच दे कोई,
सपनों का कंदील हमारा ...

चंद तीलियाँ, थोड़ा कागज,
एक दीया, छोटी-सी बाती।
सब मिलकर के दूर करेंगे,
धरती पर फैला अँधियारा।
ऊँचा और खींच दे कोई,
सपनों का कंदील हमारा...

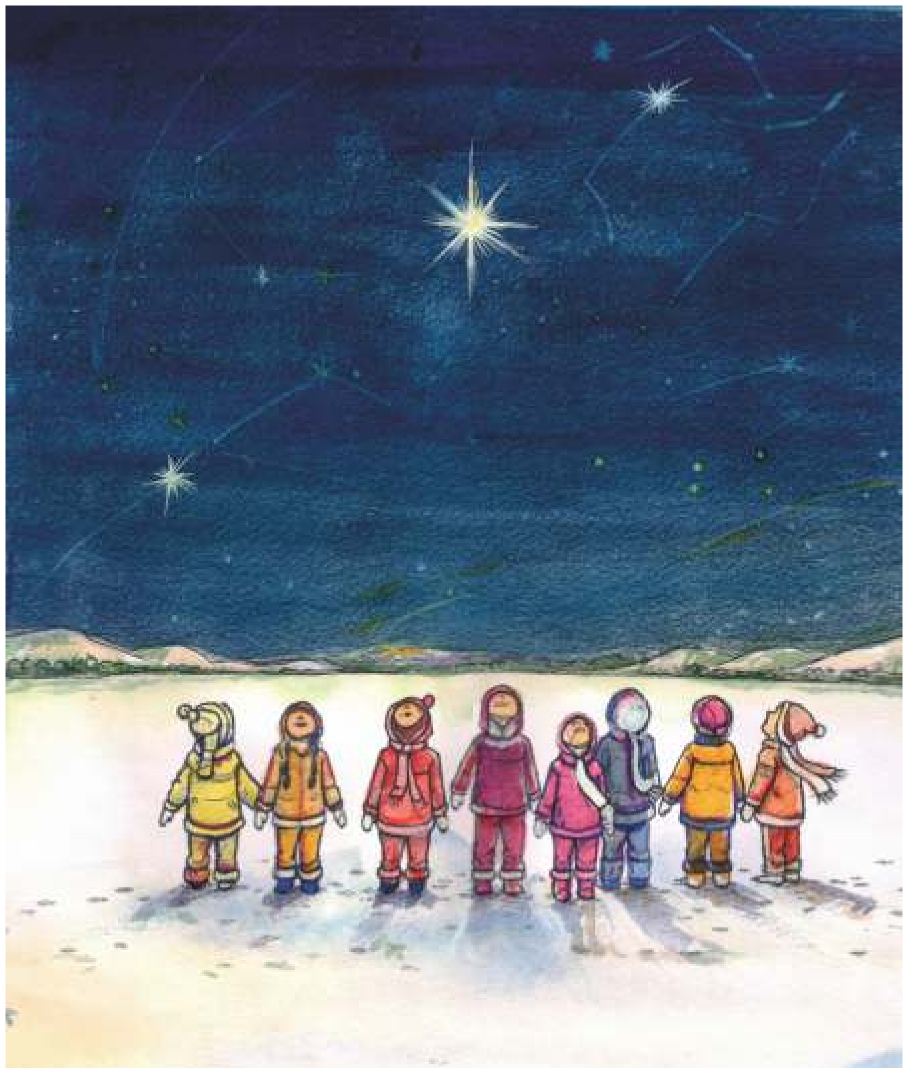

अगर कभी पूछे कोई तो,
उसको इतनी बात बताना-
कहना, जिसने ठोकर खाई,
वही बना नन्हा ध्रुवतारा।

ऊँचा और खींच दे कोई,
सपनों का कंदील हमारा।
धरती से अच्छा लगता है,
अंबर में अपना उजियारा।

– सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

अभ्यास कार्य

आओ बात करें -

1. आपको यह कविता कैसी लगी?
2. सपनों का कंदील किसे कहा गया है?
3. अगर आपको कोई बड़ा सपना देखना हो तो वह क्या होगा?
4. "ऊँचा और खींच दे कोई, सपनों का कंदील हमारा" इस पंक्ति का अर्थ बताइए।
5. अगर आपको धरती से एक वस्तु आकाश में भेजनी हो तो वह क्या होगी और क्यों?

सोचो और लिखो-

1. सही उत्तर चुनो-

(क) कविता में 'सपनों का कंदील' किसे कहा गया है?

(अ) दीपक (ब) पतंग (स) सितारा (द) बालक ( )

(ख) "धरती पर फैला अँधियारा" किसे दर्शाता है?

(अ) रात को (ब) कठिनाइयों को (स) पर्व को (द) आकाश को ( )

2. मिलान करो-

कंदील	रास्ता दिखाता है
नन्हा ध्रुवतारा	मिलकर अंधेरा दूर करती हैं
चंद तीलियाँ	उजियारा फैलाता है

3. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

(क) सपनों का .... हमारा।

(ख) चंद तीलियाँ, थोड़ा .... , एक दीया, छोटी-सी बाती।

(ग) जिसने .... खाई, वही बना नन्हा ध्रुवतारा।

(घ) धरती से अच्छा लगता है .... में अपना उजियारा।

रचनात्मक प्रश्न-

1. "जिसने ठोकर खाई, वही बना नन्हा ध्रुवतारा" का क्या अर्थ है?
2. 'हमें दूसरों की मदद करते हुए उनके जीवन में उजाला करना चाहिए' कविता में इसके लिए कौनसी पंक्ति का उपयोग किया है?
3. अपनी कल्पना से इस कविता के भाव जैसी चार पंक्तियाँ लिखो।
4. नीचे कविता की कुछ पंक्तियाँ दी गई हैं। अपने घर की भाषा में इनका अर्थ लिखिए -

"धरती से अच्छा लगता है, अंबर में अपना उजियारा।"

....

....

"चंद तीलियाँ, थोड़ा कागज़, एक दीया, छोटी-सी बाती।"

....

....

"कहना जिसने ठोकर खाई, वही बना नन्हा ध्रुवतारा।"

....

....

कल्पना करो और संवाद बनाओ -

सोचो कि आप रात के समय खुले आसमान में तारे देख रहे हो। अचानक ध्रुव तारा आपसे बात

करने लगता है। वह आपसे क्या कहेगा? आप उससे क्या पूछोगे? इस पर एक छोटा-सा संवाद लिखो।

ध्रुवतारा .... मैं ....

....

.... ध्रुवतारा ....

.... मैं ....

....

कविता पढ़कर इसमें से पाँच प्रश्न (क्या, क्यों, कैसे, कहाँ, कब) अपने साथी से पूछिए और उन प्रश्नों को यहाँ लिखिए।

(1) ....

(2) ....

(3) ....

(4) ....

(5) ....

भाषा की बात-

1. संज्ञा और सर्वनाम पहचानकर लिखो-

(क) चंद तीलियाँ मिलकर अंधेरा दूर करती हैं।

(ख) उसने अपने सपनों का दीपक जलाया।

(ग) नन्हा ध्रुवतारा हमेशा चमकता रहता है।

(घ) मेरा सपना ऊँचे उड़ने का है।

2. **वचन बदलकर लिखिए-**

(क) दीपक जल रहा है। ....

(ख) यह सितारा चमक रहा है। ....

(ग) तीलियाँ टूट गईं। ....

3. **लिंग बदलकर लिखिए-**

(क) लड़का पढ़ रहा है। ....

(ख) गायिका गाना गाती है। ....

(ग) बच्चा खेल रहा है। ....

यह भी करें-

1. कविता के आधार पर मनपसंद चित्र बनाएँ।

शिक्षक निर्देश-

व्याकरण प्रकरण की समझ विकसित करने हेतु शिक्षक विद्यार्थियों के साथ चर्चाकर आवश्यकतानुसार सहयोग करें।

आकलन-III

X6C5R5

मौखिक अभिव्यक्ति

- चित्र देखकर बताइए कि इसमें क्या–क्या हो रहा है और इनसे जुड़े आपके अनुभव भी बताइए।

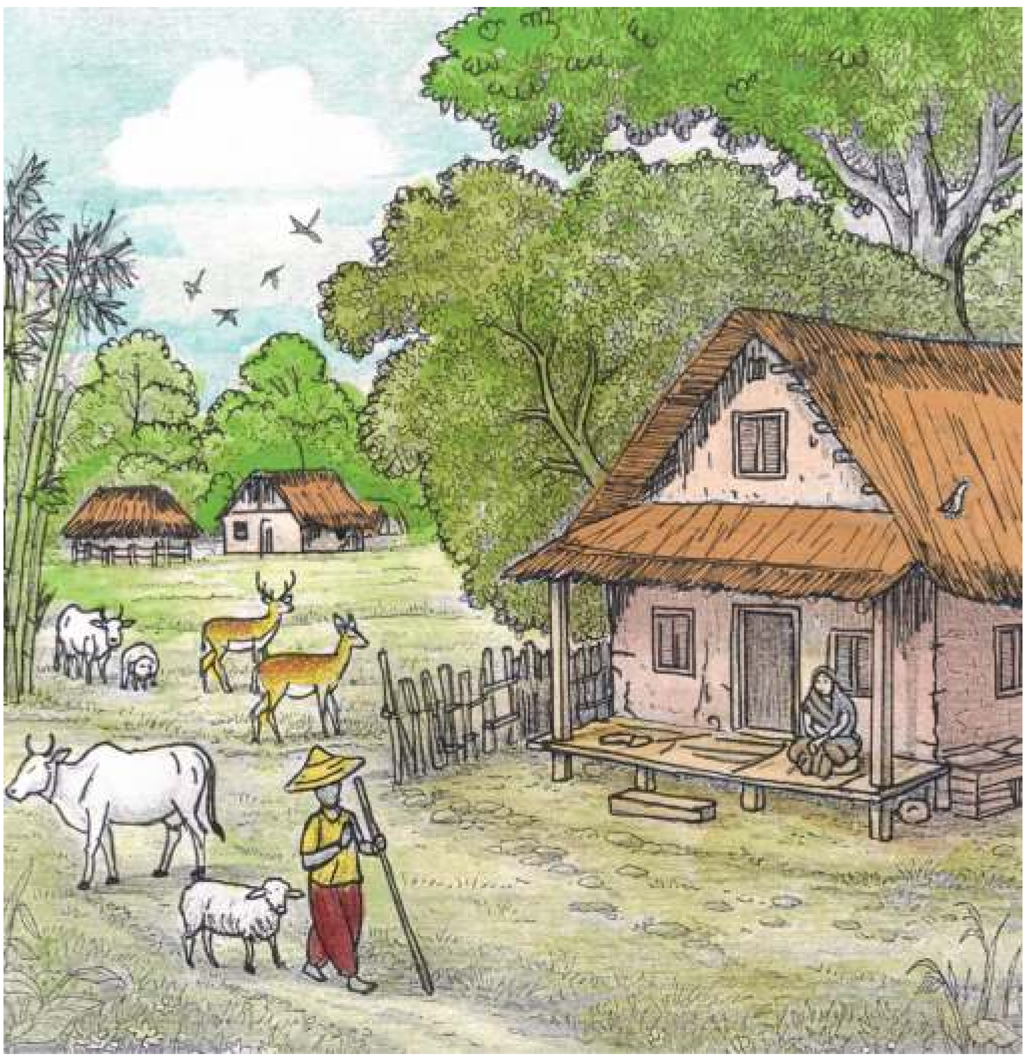

पढ़कर समझना–

- नीचे दिए गए दोहों को पढ़कर अपने साथियों के साथ बातचीत करते हुए इनके अर्थ लिखिए–

बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलिया कोय।
जो दिल खोजा आपना, मुझसे बुरा न कोय।

....

....

....

रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो चटकाय।
टूटे से फिर ना जुरे, जुरे गाँठ परि जाय।।

....

....

....

भाषा की बात-

1. नीचे दिए शब्द युग्मों का उपयोग करके वाक्य बनाइए-

जैसे- **हरा-भरा - हरा-भरा पेड़ पानी के बिना सूख गया।**

1. फल-फूल- ....
2. कीड़े-मकोड़े - ....
3. चावल-दाल - ....
4. आटा-नमक- ....
5. घी-रोटी- ....

मोहन मीठा दूध पीता है। वाक्य में दूध से पहले मीठा शब्द आया है जो दूध के बारे में बता रहा है। ऐसे शब्दों को भाषा में विशेषण कहा जाता है। नीचे कुछ शब्द दिए गए हैं उनके पहले कोष्ठक में

दिए विशेषण शब्द जोड़ो-

(कच्चा, घना, चमकीला, गहरा, मोटी, भला)

................................आदमी	............................गाँठ
................................तालाब	............................हीरा
....................................पेड़	.... धागा

रात को नींद <u>अच्छी</u> आती है। इस वाक्य में रेखांकित शब्द <u>अच्छी</u> विशेषण शब्द है जो कि नींद की विशेषता बता रहा है। पिछले पाठों में से ऐसे और विशेषण शब्द खोजिए और उनका प्रयोग करते हुए नए वाक्य बनाइए।

विशेषण शब्द	वाक्य में प्रयोग
अच्छी	रात को नींद अच्छी आती है।

सोचो और लिखो-

1. सुभाष चन्द्र बोस के बारे में अपनी भाषा में लिखकर दोस्तों को बताओ।
2. कृष्ण को भक्त वत्सल क्यों कहा गया है ?
3. रास्ता भटकने से रोकने वाला रंगीन सितारा कौनसा है ?
4. पिकनिक पाठ में किसे छात्र नायक (मॉनीटर) बनाया गया और उसे क्या जिम्मेदारी दी गई ?

अध्याय - 13

तनु का पत्र

(निर्देश :- पाठ से पहले शिक्षक विद्यार्थियों से यह गतिविधि करवाएँ)

जब कोई पास होता है तो हम अपनी बात तुरंत कह देते हैं लेकिन कोई हम से दूर है तो हम अपनी बात कैसे कहेंगे? आप दूर के लोगों तक अपनी बात पहुँचाने के लिए कई माध्यमों का उपयोग करते हैं। संचार की सुविधा ने बहुत सारे कार्यों को आसान किया है। नीचे दिए चित्र को देखें -

मोबाइल फोन आज के समय में बहुत महत्वपूर्ण है। यह अपनी बात दूर किसी तक पहुँचाने का सबसे प्रमुख साधन है। यह एक साथ कई कार्य करने में सक्षम है। इसकी कई खूबियाँ हैं। लिखकर बात आगे बढ़ाएँ-

....

....

....

....

आपने लोगों को सोशल मीडिया का उपयोग करते हुए देखा होगा। वे सोशल मीडिया का क्या-क्या उपयोग करते हैं? लिखिए

....

....

....

....

मैंने बहुत सारे लोगों को यह कहते हुए सुना है कि आजकल तो पत्र का जमाना ही नहीं रहा। सच यह है कि पत्र तो आज भी रोजाना भेजे जाते हैं। अंतर केवल इतना है कि यह पत्र डाकघर के बजाय मेल आदि के माध्यम से भेजे जाते हैं । विगत एक महीने में आपके विद्यालय में कितने पत्र आए हैं? उनके बारे में शिक्षक से पूछकर नीचे लिखिए :-

....

....

....

....

मूल पाठ

तनु ने अपनी मामीजी को पत्र लिखा है। आइए पढ़ते हैं।

दिनांक- 31 जनवरी, 2025

आदर्श कॉलोनी, भीम, राजसमंद -305921

आदरणीया मामीजी,

आपका पत्र मिला। व्यस्तता के कारण समय पर उसका जवाब नहीं लिख सकी। मैं यहाँ पर सकुशल हूँ और आशा है आप, अंशु और मामाजी भी सकुशल होंगे। हमारे विद्यालय में नई प्राचार्य महोदया आई हैं। वह अजमेर से हैं और बहुत मृदुभाषी और सरल हैं। उन्होंने विद्यालय में कुछ बदलाव किए हैं। पिछली बालसभा में कह रही थी ''पढ़ाई जितनी कक्षा के भीतर होती है उतनी कक्षा के बाहर भी।'' हमारे विद्यालय में पढ़ाई के साथ-साथ अन्य रोचक गतिविधियाँ भी करवाई जाती हैं। शीतकालीन छुट्टियों में वे हमें एक गाँव के भ्रमण पर ले गई थी। इस गाँव का नाम मोलेला है। यहाँ बनाई गई मिट्टी की कलाकृतियाँ बहुत प्रसिद्ध हैं जिन्हें 'टेराकोटा' के नाम से जाना जाता है।

गाँव के बीचों-बीच से सड़क गुजरती है। सड़क किनारे जिनके घरों में दुकानें है उन्हें व्यवसाय में

अधिक फायदा होता है। हमें मि्ट्टी से बनी सैकड़ों कलाकृतियों को निहारने में बहुत आनंद आया। सबसे अधिक बिक्री मिट्टी के बर्तनों की होती है। मिट्टी की कड़ाही, तसली, भगौना, परात, ढक्कन से लेकर चकला-बेलन और तवा सब बनाया जाता है। यहाँ हमने चाक चलते देखा। तेज गति से चलती चाक के ऊपर गीली मिट्टी रखी होती है। बस हल्के हाथों से उसे आकार देना होता है लेकिन यह इतना आसान नहीं है। कारीगर तो बेहद आसानी से यह सब कर लेते हैं। मैंने भी अपने लिए मिट्टी के छोटे खिलौने बनाए। यहाँ घर में सजाने के लिए बनाई गई चीजों में मिट्टी के ऊँट, बैल और घोड़े जैसे कई जानवर थे।

इसके अलावा कई देवी-देवताओं की मूर्तियाँ बनी थी। मिट्टी के बर्तनों के बाद सबसे अधिक बिक्री मूर्तियों की होती है। इन्हें बनाने में कई दिनों का समय लगता है। मैंने इन्हें अलग- अलग अवस्था में देखा। कुछ मूर्तियों के केवल ढाँचे तैयार किए गए थे। यह ढाँचे बाँस की लकड़ियों और पराली के बने थे। इन पर अभी और काम किया जाना बाकी था। कुछ मूर्तियों में केवल रंग भरना बाकी था। जब हमने यहाँ के लोगों से बातचीत की तो काफी कुछ पता चला।

इस कार्य को करने वालों का पिछले कुछ समय से केवल इस कला और व्यवसाय के ही सहारे जीवनयापन करना मुश्किल हो चला है। बरसात के दिनों में मिट्टी की वस्तुएँ बनाने का काम बिल्कुल ही कम हो जाता है। साल में केवल कुछ समय ही ज्यादा भीड़-भाड़ होती है। दीवाली के त्योहार पर मिट्टी के दीए अधिक बिकते हैं तो नवरात्र, गणेश चतुर्थी जैसे त्योहारों पर मूर्तियाँ अधिक बिकती हैं।

कुछ वर्ष पूर्व इस गाँव के मोहनलालजी को राष्ट्रपति से पुरस्कार मिला है। यहाँ के बुजुर्ग बता रहे थे कि जो बच्चे अभी कम उम्र के हैं उनका ध्यान पढ़ाई पर तो है लेकिन वे इन कामों में रुचि नहीं रखते हैं। इस कारण बुजुर्ग लोग चिंतित हैं कि आने वाली पीढ़ियाँ इस कला को भूल ना जाएँ। मुझे पता नहीं, आने वाले समय में यह गाँव कैसा रहेगा। बस इतना सोच रही हूँ जितना रोचक यहाँ का जीवन है, क्या हमेशा रह पाएगा ?

आपकी प्यारी भांजी

तनु

अभ्यास कार्य

आओ बात करें –

1. तनु ने मामीजी को पत्र क्यों लिखा ?
2. मोलेला गाँव क्यों प्रसिद्ध है ?
3. तनु ने मामीजी को विद्यालय भ्रमण की क्या जानकारी दी ?
4. यदि आपको पत्र लिखना हो तो किसे लिखेंगे और क्या-क्या जानकारी देना चाहेंगे ? बताइए।
5. मिट्टी के बर्तन पर्यावरण संरक्षण में कैसे उपयोगी हो सकते हैं ? चर्चा करें।

सोचो और लिखो-

1. तनु ने अपने पत्र में मोलेला गाँव के बारे में क्या बताया है ? अपने शब्दों में लिखो।
2. मोलेला गाँव के बुजुर्ग क्यों चिंतित हैं ? क्या उनकी चिंता सही है ? अपने जवाब के पक्ष में तर्क दीजिए।
3. मोलेला गाँव के लोगों के लिए जीवनयापन करना मुश्किल क्यों हो रहा है ?
4. पत्र सही जगह पर पहुँचे इसके लिए जरूरी है सही पता लिखा जाए जिसमें व्यक्ति का नाम, मकान नंबर, गली मोहल्ले का नाम, शहर का नाम तथा पिन कोड लिखा हो। नीचे कुछ पते लिखे हुए हैं जिनमें कुछ जानकारी छूटी हुई है। छूटी हुई जानकारी को अपने अनुसार पूरा कर लिखिए –
    1. रजत, 07-इंद्रा नगर, जालोर ....
    2. कनिका, पोस्ट ऑफिस वाली गली, 303103 ....
    3. दलजीत, चुरू, 331001 ....
    4. गाँव – सिंहपुर, पोस्ट – कपासन, चित्तौड़गढ़, 312202 ....

5. आपने तनु का पत्र पढ़ा। तनु ने लिखा है, "उसके स्कूल में नई प्राचार्य महोदया आई हैं।" यह एक सूचना है। ऐसे ही और कौन-कौनसी सूचनाएँ तनु के पत्र में लिखी हैं? आप पत्र को ध्यान से पढ़ने के बाद लिखिए -

सूचना ....

....

6. अपने आसपास काम करने वाले कारीगरों की सूची बनाइए और वह क्या-क्या सामग्री बनाते हैं और वह कैसे उपयोगी होती है? लिखिए।

कारीगर	कौनसी सामग्री बनाते हैं	सामग्री की उपयोगिता
बढ़ई		
लुहार		
सुनार		

भाषा की बात-

1. हमारे विद्यालय में नई प्राचार्य महोदया आई हैं। इस वाक्य में 'नई' शब्द विशेषण है । इसी तरह कुछ नए वाक्य दिए गए हैं। वाक्यों में से विशेषण शब्द को पहचानिए -

वाक्य	विशेषण शब्द
मोलेला गाँव की मिट्‌टी की कलाकृतियाँ बेहद प्रसिद्ध हैं।	
गाँव के बीचों-बीच से सड़क गुजरती है।	
यहाँ घर में सजाने के लिए बनाई गई चीजों में मिट्‌टी के बड़े ऊँट, बैल और घोड़े शामिल हैं।	

2. सीमा ने रंगीन चित्र बनाए। सीमा रंगीन चित्र बना रही है। इन वाक्यों में कर्ता (कार्य करने वाली) सीमा है। वह चित्र बना रही है। 'बनाना' क्रिया है। वह रंगीन चित्र बना रही है। अत: 'रंगीन चित्र' कर्म है । नीचे कुछ वाक्य दिए गए हैं। निम्नलिखित वाक्यों में से कर्ता, क्रिया और कर्म की पहचान कीजिए–

वाक्य	कर्ता	क्रिया	कर्म
सीमा ने रंगीन चित्र बनाए।	सीमा	बनाना	रंगीन चित्र
रामू ने सड़क पर एक पेड़ लगाया।			
बच्चे पार्क में फुटबॉल खेल रहे हैं।			
मदन ने बगीचे में फूल लगाए।			

रचनात्मक प्रश्न–

1. पत्र भेजने का एक तरीका है ईमेल करना। ईमेल क्या है? शिक्षक के साथ चर्चा करें तथा ईमेल के प्रारूप को समझें।

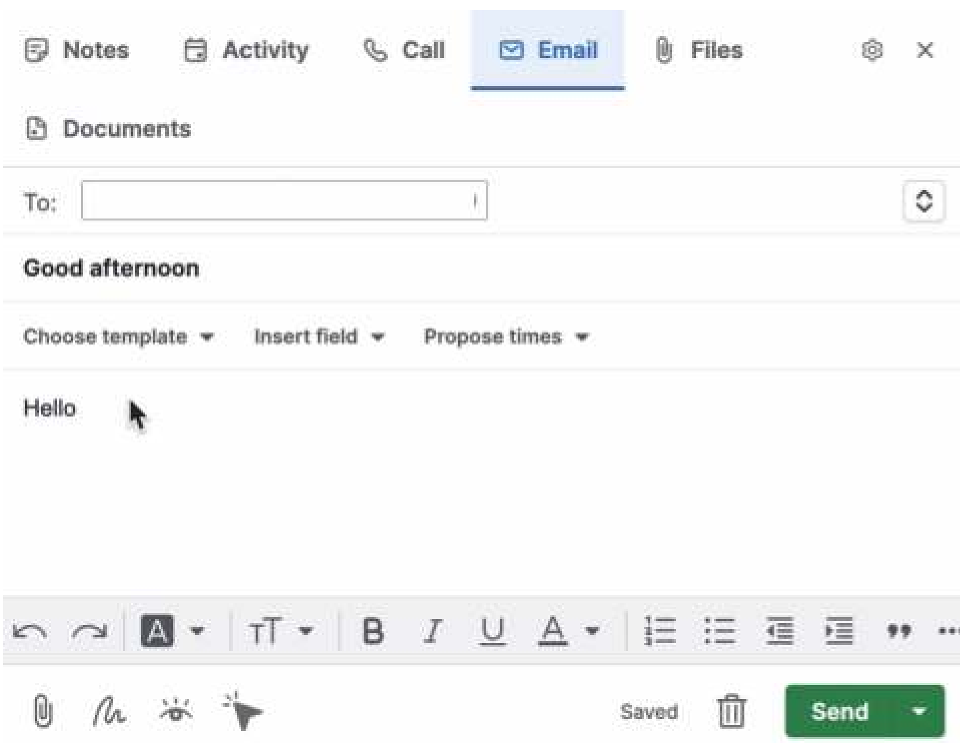

2. आप किसी जगह घूमने गए हैं और आपको बहुत मजा आया। अब आप उसके बारे में अपने दोस्त को एक पत्र लिखिए जिसमें कब गए, किसके साथ गए, कहाँ गए, वहाँ पर आपने क्या-क्या किया इन बातों को भी शामिल करें।

3. नीचे कुछ काम दिए गए हैं। इनमें से आपके आसपास क्या-क्या दिखाई देता है? इनको देखने जाएँ और साथियों को अपने अनुभव सुनाएँ।

- लोहे के बर्तन एवं औजार बनाना
- सोने के आभूषण
- मिट्‌टी के खिलौने और बर्तन
- लाख और काँच की चूड़ियाँ
- लकड़ी के सामान
- दरी, गलीचे
- हस्तशिल्प का सामान
- अन्य

4. मामीजी ने तनु को क्या जवाब दिया होगा? लिखिए।

प्रिय तनु,

खुश रहो, तुम्हारा पत्र मिला।

....

....

....

....

तुम्हारी मामी

लता

यह भी करें-

1. नीचे कुछ परिस्थितियाँ दी गई हैं। यह बताएँ कि उनकी सूचना आप किस माध्यम से और कहाँ पहुँचाएँगे ?

    1. आपके पड़ोस में चोरी हो गई है।
    2. शहर के सिनेमा घर में आग लग गई है।
    3. विद्यालय आने वाला एक बच्चा गुम हो गया है।
    4. आपके घर सहभोज होने वाला है।
    5. रास्ते में आपने देखा रेल की पटरी टूटी हुई है।

अध्याय - 14

धरती धोरां री !

धरती धोरां री !
आ तो सुरगां नै सरमावै,
ईं पर देव रमण नै आवै,
ईं रो जस नर-नारी गावै,
धरती धोरां री !

सूरज कण-कण नै चमकावै,
चंदो इमरत रस बरसावै,
तारा निछरावल कर ज्यावै,
धरती धोरां री !

काळा बादलिया घहरावै,
बिरखा घूघरिया घमकावै,
बिजली डरती ओला खावै,
धरती धोरां री !

लुळ लुळ बाजरियो लैरावै,
मक्की झालो दे'र बुलावै,
कुदरत दोन्यूं हाथ लुटावै,
धरती धोरां री !

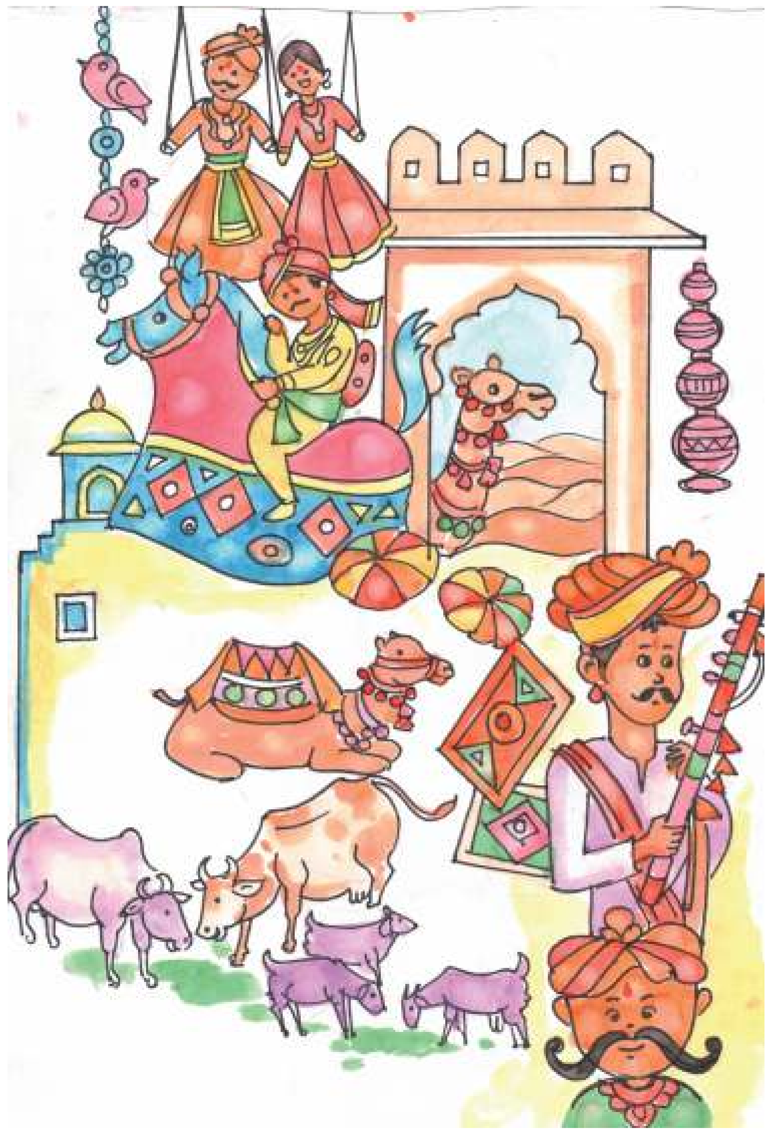

पंछी मधरा–मधरा बोलै,
मिसरी मीठै सुर स्यूं घोलै,
झीणूं बायरियो पंपोळै,
धरती धोरां री !

नारा नागौरी हिद ताता,
मदुआ ऊँट अणूंता खाथा,
ईं रै घोड़ां री के बातां,
धरती धोरां री !

ईं रा फल–फुलड़ा मन भावण,
ईं रै धीणो आँगण–आँगण,
बाजै सगळां स्यूं बड़ भागण,
धरती धोरां री !

ईं पर तनड़ो–मनड़ो वारां,
ईं पर जीवण–प्राण उवारां,
ईं री धजा उडै गिगनारां,
धरती धोरां री !

ईं नै मोत्यां थाल बधावां,
ईं री धूल लिलाड़ लगावां,
ईं रो मोटो भाग सरावां,
धरती धोरां री !

ई रै सत री आण निभावां,
ई रै पत नै नहीं लजावां,
ई नै माथो भेंट चढ़ावां,
मायड़ कोड़ां री,
धरती धोरां री !

–कन्हैया लाल सेठिया

अभ्यास कार्य

आओ बात करें–

1. कविता में धोरों की धरती राजस्थान का यश कौन–कौन सुनाता है ?
2. धोरों की धरती के कण–कण को चमकाने वाला कौन है?
3. राजस्थान की धरती पर चंद्रमा क्या बरसाता है?

सोचो और लिखो–

1. नीचे दिए गए शब्दों का प्रयोगकर वाक्य बनाइए–

धरती : राजस्थान को मरुस्थल के कारण धरती धोरां री भी कहा जाता है ।

बादल : ....

बिजली : ....

पंछी : ....

2. बरसात आने पर वातावरण कैसा हो जाता है ? लिखिए।

3. कविता में झाला देकर कौन बुला रहा है ?

4. नीचे दिए गए शब्दों को सही क्रम में लगाकर पंक्ति बनाओ–

1. भावण/ फुलड़ा /फल/ ई रा /मन

....

2. वारां/ तनड़ो/ ई /मनड़ो/पर

....

3. इस कविता के मूलभाव को अपने शब्दों में लिखिए।

मेरी बात सबकी बात–

1. इस कविता में आए शब्दों से मिलते-जुलते मानक शब्द (समानार्थी या पर्यायवाची) लिखिए–

जैसे– सुरगां = स्वर्ग

....

....

पढ़कर जानें–

1. नीचे कविता की कुछ पंक्तियाँ दी गई हैं जिनमें कुछ शब्द छूट गए हैं। छूटे स्थान पर कविता से खोजकर सही शब्द लिखिए–

पंछी .... बोलै,

.... मीठै सुर स्यूं घोलै,

झीणूं .... पंपोळै,

धरती .... री !

रचनात्मक प्रश्न–

1. इस कविता की तरह ही कोई अन्य कविता/गीत परिजनों से सुनकर कुछ पंक्तियाँ लिखिए।

भाषा की बात–

1. ''सूरज कण–कण नै चमकावै'' इस पंक्ति में कण–कण शब्द दो बार आया है। कविता में से ऐसे अन्य शब्द ढूँढ़कर लिखें –

   ....

2. नीचे दिए गए शब्दों को उनकी सही क्रिया से मिलाओ–

शब्द	क्रिया
पंछी	लैरावे
बाजरियो	बुलावै
मक्की	लुटावै
कुदरत	बोले

3. वाक्यों को सकारात्मक या नकारात्मक वाक्य में बदलें–

   1. पंछी मधुर–मधुर बोलते हैं। ....
   2. कुदरत दोनों हाथ से नहीं लुटाती है। ....

यह भी करें –

1. पाठ की कविता के आधार पर पुस्तकालय से इसी प्रकार की कविताएँ संकलित कीजिए और बालसभा में सुनाइए।

अध्याय - 15

पाँच तरीके

एक दिन रीना का अपने सबसे अच्छे दोस्त से झगड़ा हो गया। घर आकर वह भुन-भुन कर रही थी, ''मैं उसे पीट दूँगी। नहीं, मैं उससे बात करना बंद कर दूँगी। नहीं, वहीं जाकर उससे सीधे बात करना ज्यादा अच्छा होगा।'' दीदी ने उसे देखकर मुस्कुराकर पूछा ''क्या सोच रही हो रीना?'' ''झगड़ा निपटाने के कितने तरीके होते हैं दीदी?'' रीना ने पूछा। दीदी हँसी और बोली, ''ये कैसा सवाल है?'' ''सच में बताओ, मेरा किसी के साथ अगर टकराव है या मतभेद है तो उससे जूझने के क्या तरीके होते हैं?''

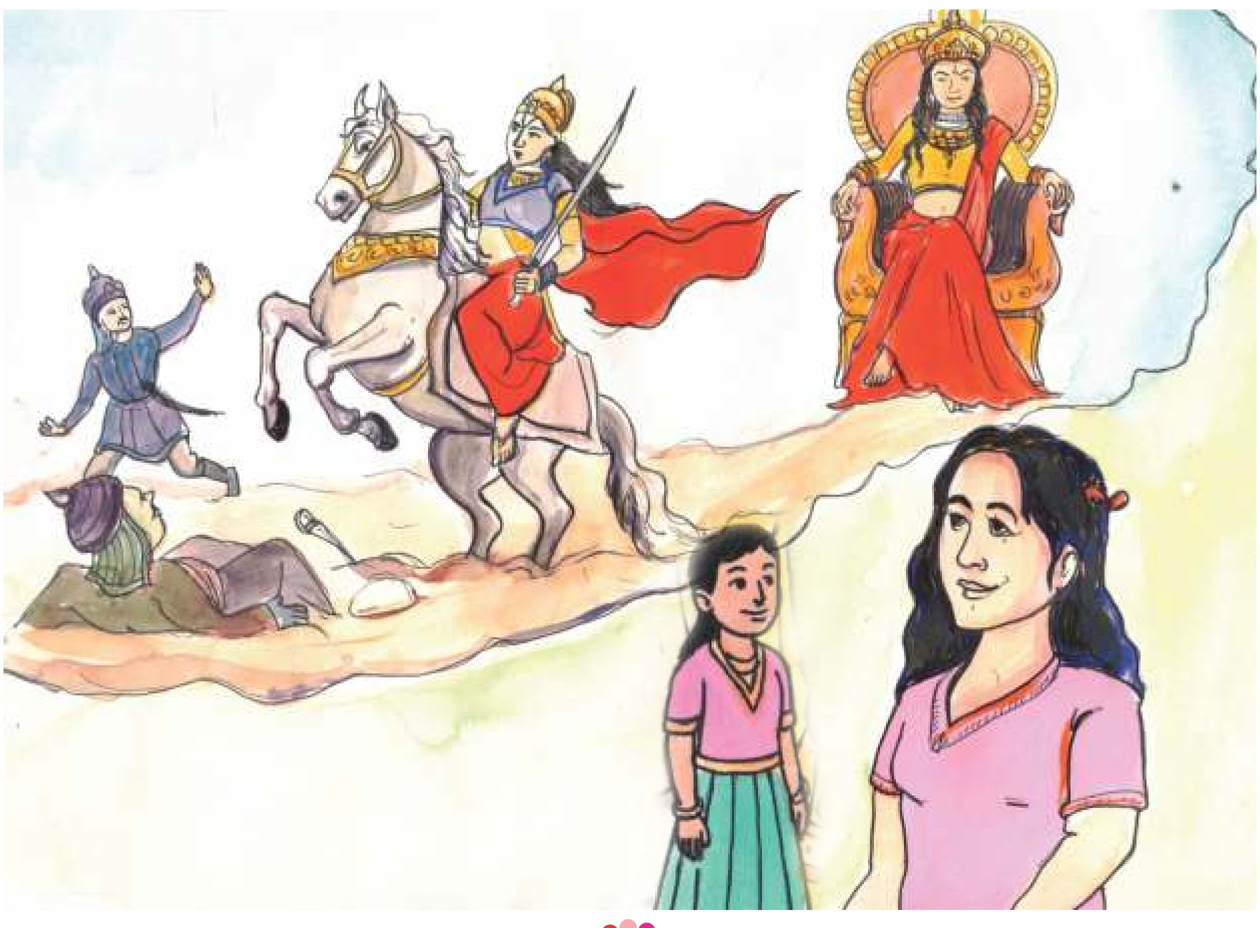

‘‘अच्छा! तो सुनो,’’ दीदी ने कहा। ‘‘मैं तुम्हें पाँच तरीके बताती हूँ और तुम बताना तुम्हें सबसे अच्छा कौनसा लगा और क्यों। कल्पना करो कि तुम एक छोटे-से देश की रानी हो और तुम्हारी अपने पड़ोसी देश से दुश्मनी है और तुम उस पर आक्रमण कर देती हो। यह है पहला तरीका, जोर-जबरदस्ती का।’’

रीना कल्पना करने लगी कि वह सिंहासन पर बैठी है। अब वह घोड़े पर बैठकर अपनी सेना के आगे-आगे जा रही है और फिर उसने दुश्मन देश के सारे सैनिकों को मार गिराया। मगर यह तभी मुमकिन होगा जब उसके पास दुश्मन देश की सेना से बड़ी सेना हो। ‘‘और उसके बाद क्या दुश्मन देश के लोग तुम्हारी बातें मान लेंगे?’’ दीदी ने पूछा। ‘‘नहीं, मानेंगे तो नहीं, उलटा मुझसे और ज्यादा नफरत करेंगे,’’ रीना ने कहा। ‘‘हाँ, मगर यह एक तरीका है और कई बार यही करना ठीक रहता है,’’ दीदी ने कहा।

‘‘दूसरा तरीका इसके ठीक उलट है - जोर-जबरदस्ती करने की बजाय उनकी सारी बातें मान लो। इसे कहते हैं समर्पण करना।’’ रीना कल्पना करती है कि दुश्मन देश की सेना उसकी अपनी सेना से बहुत बड़ी है। वह दूसरे देश की रानी के सामने झुक रही है और उसके सामने अपने हथियार डाल रही है। ‘‘नहीं, नहीं, यह तो नहीं चलेगा। कोई और तरीका बताओ,’’ वह बोली। दीदी ने कहा, ‘‘लेकिन कभी-कभी यह तरीका भी सही होता है। हर बार तुम्हारे पास झगड़े में जीतने के साधन तो नहीं हो सकते और यह भी हो सकता है कि तुम्हें समझ में आए कि दूसरे पक्ष की बातें सही हैं तो उनको मान लेना ही समझदारी होगी।’’

‘‘तीसरा तरीका है,’’ दीदी आगे बोली ‘‘तुम झगड़े को टाल दो। न हार मानो, न युद्ध करो, बस झगड़े के मसले के बारे में सोचो ही मत।’’ रीना सोचने लगी कि पड़ोसी देश की रानी उसके बारे में बुरा-भला कह रही है मगर वह खुद इसके बारे में कोई बात नहीं कर रही है। दूसरी रानी की बातें अनदेखी और अनसुनी कर रही है। ‘‘कई बार ऐसा करना ही सबसे अच्छा होता है। जोर-जबरदस्ती न करें, अपने सैनिकों की जान ऐसे ही क्यों गँवा दें। वे भी किसी के बच्चे हैं।’’ दीदी ने कहा।

दीदी ने कहा, ‘‘चौथा तरीका समझौते का है। थोड़ी उनकी बात मान लो, थोड़ी अपनी बात मनवा

लो।'' रीना कल्पना करने लगी कि दोनों रानियाँ बैठकर भाव-ताव कर रही हैं। जब दोनों को लगा कि उन्हें कुछ अच्छा मिल रहा है तो समझौता हो गया। दोनों रानियाँ बहुत खुश नहीं हैं। मगर ये युद्ध में अपने-अपने सैनिकों को मरते देखने से तो अच्छा ही है। जब दोनों पक्ष बराबर ताकत वाले होते हैं तो कोई भी जबरदस्ती करके जीत नहीं सकता। तब सबसे अच्छा रास्ता समझौते का ही होता है।

''पाँचवां सबसे मीठा और बढ़िया तरीका संवाद का है।'' दीदी बोली। ''इसमें तुम दोनों एक-दूसरे को समझते हो और दोनों पक्षों में से कौनसी बातें सही हैं उन पर मिलकर सोचते हो।'' रीना कल्पना करने लगी कि वह और दूसरी रानी बैठकर लंबी बात कर रहे हैं। दोनों एक-दूसरे के नजरिए को समझने की कोशिश कर रहे हैं और प्यार से दूसरे को अपनी बात समझा भी रहे हैं। मिलकर एक नई समझ बना रहे हैं। दीदी ने कहा, ''अगर यह कर सको रीना तो सबसे ज्यादा सुखी रहोगी।'' जो सही है वही होगा, किसी की मनमानी नहीं होगी। सबकी साझी समझ से निर्णय होगा।

रीना ने कहा, ''हाँ, अगर यह हो सके तो सबसे अच्छा यही होगा। इसी से सही निर्णय होगा, दूसरे तरीकों से कहीं ज्यादा।'' वह सोचने लगी कि दोनों रानियाँ दोस्त बन गई हैं। वे साथ में घूम-खेल रही हैं और उनकी प्रजा खुशहाल जीवन बिता रही है। फिर वह सोचने लगी कि मैं अपने दोस्त के साथ संवाद कैसे करूँ...।

-अमन मदान

अभ्यास कार्य

आओ बात करें -

1. रीना को झगड़ा निपटाने के लिए पाँच तरीकों में से कौनसा तरीका सबसे अच्छा लगा और क्यों?
2. पहले और तीसरे तरीके में क्या-क्या अंतर हैं? आपको क्या समझ में आया?
3. आपका मित्रों से किन-किन बातों को लेकर झगड़ा होता है और आप उन झगड़ों को कैसे सुलझाते हो?

सोचो और लिखो-

सही विकल्प को चुनिए-

1. पहले अनुच्छेद के बारे में क्या सही, क्या गलत है? सही (✓) एवं गलत (X) का निशान लगाइए।

   (क) रीना अपनी दीदी से झगड़ा निपटाने के तरीकों के बारे में पूछती है। ( )

   (ख) दीदी रीना को समझौते के बारे में बताती है। ( )

   (ग) रीना अपने और रानी के बीच युद्ध के बारे में सोचती है। ( )

   (घ) रीना दीदी को संवाद के बारे में बताती है। ( )

2. संवाद के दौरान क्या होता है? उन पर सही (✓) का निशान लगाइए।

   (क) एक-दूसरे से शांति से बातचीत करते हैं और समझते हैं। ( )

   (ख) एक-दूसरे पर समझौते का दबाव बनाते हैं। ( )

   (ग) थोड़ी अपनी बात मनवाते हैं और थोड़ी सामने वाले की बात मानते हैं। ( )

   (घ) सामने वाला जो कह रहा है वह मान लेते हैं। ( )

3. नीचे पूरे पाठ का सारांश लिखा गया है। दोनों सारांश को पढ़ें और जो आपको अधिक सही लगता है उसे चुनकर सही का निशान लगाएँ।

रीना का उसके दोस्त से झगड़ा होता है। वह अपनी दीदी को बताती है और झगड़े निपटाने के बारे में पूछती है। दीदी झगड़े निपटाने के पाँच उपाय बताती है। यह पाँच उपाय हैं- संवाद, जबरदस्ती, समझौता, झगड़ा टालना, समर्पण। इनमें से संवाद सबसे बेहतर है। संवाद के माध्यम से हम एक-दूसरे को शांति से सुनते हैं और नजरिए को समझने का प्रयास करते हैं। ☐	**यह पाठ झगड़े सुलझाने पर आधारित है। जहाँ संवाद को झगड़े सुलझाने का सबसे अच्छा उपाय बताया गया है। इसके अलावा भी झगड़े सुलझाने के चार अन्य उपाय बताए गए हैं। ये उपाय रीना की दीदी बता रही है। इस पाठ को पढ़ने के बाद आपस के झगड़े कैसे सुलझाए जा सकते हैं यह पता चलता है।** ☐

4. कुछ घटनाएँ और उनके साथ संभावित स्थितियाँ यहाँ दी जा रही हैं। इस घटना के बाद आप कौनसा उपाय चुनेंगे और क्यों? निर्धारित स्थान पर चुनिए। आप एक से अधिक उपाय भी चुन सकते हो।

1. घटना : यदि किसी ने गुस्से से आपके बारे में गलत बोला तब आप क्या करेंगे?

उपाय :-

1. उसकी शिकायत अपने शिक्षक से करेंगे। ( )
2. उसकी शिकायत अपने माता-पिता से करेंगे। ( )
3. उसकी शिकायत उसके माता-पिता से करेंगे। ( )
4. आप पूछेंगे कि उसने आपको गलत क्यों बोला। ( )
5. अन्य :-

....

....

2. घटना : आप कबड्डी खेल रहे थे। इस दौरान आपको हल्की चोट लग गई। आपको लगता है कि आपकी विपक्षी टीम के किसी साथी ने आपको चोट पहुँचाई है।

उपाय :

1. तुरंत अपनी टीम के साथियों से कहेंगे कि किसी ने चोट पहुँचाई। ( )
2. आप तुरंत विपक्षी टीम के साथी से पूछेंगे कि उसने चोट क्यों पहुँचाई? ( )
3. आप शिक्षक से इसकी शिकायत करेंगे। ( )
4. आप चुप रहेंगे क्योंकि खेल में ऐसा होता रहता है। ( )
5. अन्य :- ....

....

भाषा की बात-

1. रीना कल्पना करती है कि दुश्मन देश की सेना उसकी अपनी सेना से बहुत बड़ी है। वह दूसरे देश की रानी के सामने झुक रही है और उसके सामने अपने हथियार डाल रही है। इस पंक्ति में हथियार डाल रही है से क्या आशय है ? स्पष्ट करें।

....

....

....

....

2. रीना कल्पना करने लगी कि दोनों रानियाँ बैठकर भाव-ताव कर रही हैं। जब दोनों को लगा कि उन्हें कुछ अच्छा मिल रहा है तो समझौता हो गया। उपर्युक्त पंक्ति में 'भाव-ताव कर रही हैं' के अर्थ को स्पष्ट करें।

....

....

....

....

3. नीचे कुछ मुहावरे दिए गए हैं। इनका वाक्यों में प्रयोगकर अर्थ स्पष्ट करें।

   1. ढाल बन जाना ....
   2. कमर कस लेना ....
   3. हवा का रुख पहचानना ....
   4. पलटवार करना ....

4. नीचे दी गई कहानी में विराम चिह्नों का गलत प्रयोग किया गया है। आप पुनः विराम चिह्नों का सही जगह प्रयोगकर कहानी को दोबारा लिखिए।

अमित और रवि अच्छे दोस्त थे लेकिन एक दिन खेल के दौरान दोनों के बीच झगड़ा हो गया। झगड़ा इस बात पर शुरू हुआ कि क्रिकेट खेलते समय रवि ने अमित को आउट दे दिया लेकिन अमित ने इसे गलत करार दिया। पहले बहस हुई फिर दोनों ने एक-दूसरे को धक्का दिया जिससे रवि गिर गया और उसकी कोहनी छिल गई। रवि रोने लगा और गुस्से में अमित को धक्का देकर चला गया ?	

इस कहानी के आधार पर बताइए कि रवि और अमित का झगड़ा कैसे सुलझ सकता है? इसके लिए तीन तरीके क्या हो सकते हैं? लिखिए –

1. पहला तरीका ....

2. दूसरा तरीका ....

3. तीसरा तरीका ....

अध्याय - 16

उत्सर्ग

त्याग और तपस्या की धरती राजपूताना में जोधपुर से आठ कोस पूर्व दिशा में स्वर्णिम रेतीले धोरों से घिरा एक छोटा–सा रमणीय गाँव था खेजड़ली। खेजड़ी के पेड़ों की अधिकता के कारण ही इस गाँव का नाम खेजड़ली पड़ गया था। गाँव की सुंदरता अनायास ही सबका मन मोह लेती थी। गाँव के सभी लोग प्रेम से रहते और खेती–बाड़ी करते हुए भाईचारे से अपना खुशहाल जीवन व्यतीत करते। गाँव के लोग प्रकृति और जीव–जंतुओं से अगाध प्रेम करते थे। वे पर्यावरण प्रेमी संत गुरु जांभोजी के नियमों का पालन करते हुए ना ही स्वयं पेड़ काटते थे और न ही किसी और को पेड़ काटने देते थे। हिरण, मोर, गाय आदि तो निर्भीक होकर उनके खेतों और घरों में विचरण करते रहते थे। मानो प्रकृति साक्षात उस गाँव में उतर आई हो। गाँव के मुखिया रामोजी विश्नोई और उनकी धर्मपत्नी अमृतादेवी सदैव लोगों की सेवा में लगे रहते थे। प्रकृति प्रेम और भाईचारे के लिए इस गाँव की कीर्ति पूरे मारवाड़ अंचल में फैली थी। यह बात सन 1730 की है जब तत्कालीन जोधपुर के महाराजा अभयसिंह ने महल के निर्माण हेतु लकड़ी की

तलाश शुरू की। सभासदों की सूचना पर मंत्री गिरधरदास के नेतृत्व में एक विशाल दल सेना सहित खेजड़ी काटने के लिए खेजड़ली गाँव भेजा। मंत्री गिरधरदास ने खेजड़ली गाँव में जाकर अपना शिविर लगाया तथा खेजड़ी काटने की तैयारी करने लगे।

प्रात:काल का सूर्योदय अपनी लालिमा से रक्तिम इतिहास की ओर संकेत कर रहा था जिसे पढ़ पाना सीधे–सादे लोगों की समझ से बाहर की बात थी। रामोजी खेत पर जाने की तैयारी में मशगूल थे तो अमृता दही बिलौने में व्यस्त थी। पक्षियों का कलरव और बिलौने की आवाज का मिश्रण एक मधुर प्राकृतिक संगीत का निर्माण कर रहा था। अमृता की तीनों पुत्रियाँ अणसी, रतनी और भागू खेलती–खेलती गाँव के बाहर टीले पर पहुँची तो अचानक खेजड़ी पर चलते कुल्हाड़ों की आवाज ने उनका ध्यान आकर्षित किया। जैसे ही वे धोरे के ऊपर पहुँचीं अणसी के मुँह से आह निकली "अरे! ये लोग यहाँ खेजड़ी काट रहे हैं?" रतनी आगे बढ़ते हुए बोली "ये इतने निर्दयी कौन हो सकते हैं जो हमारी माता समान खेजड़ी काट रहे हैं?" भागू बोली "हमें जल्दी से घर चलकर माँ को ये बात बतानी चाहिए ताकि समय रहते इन्हें रोका जाए अन्यथा अनर्थ हो जाएगा।" तीनों बहिनें घबराई हुई सिर पर पाँव रखकर घर की ओर भागीं। हाँफते हुए जैसे ही दरवाजे में प्रवेश किया रामोजी दौड़कर आए। अणसी दौड़कर अमृता की गोद में जा गिरी। अमृता कुछ समझ पाती इससे पहले रतनी बोली जंगल में राजा के लोग खेजडी काट रहे हैं। अगर समय रहते हमने कुछ नहीं किया तो सारी खेजड़ियाँ कट जाएँगी और गाँव उजाड़ हो जाएगा।

अमृता देवी ने अपने पति रामोजी का आह्वान करते हुए कहा, "हमें चलना होगा। हमें जांभोजी द्वारा बताए गए नियम 'जीव दया पालणी, रूखं लीलो नहीं घावै' का पालन करना है।" बिलौना छोड़कर अमृता और उनके पीछे रामोजी, भागू, अणसी तथा रतनी जंगल की तरफ दौड़ पड़े। इसकी सूचना खेजड़ली ग्राम तथा आसपास के गाँवों में भी तेजी से फैल गई तथा आसपास के प्रकृति प्रेमी विश्नोई पंथ के अनुयायियों ने भी खेजड़ली गाँव पहुँचने का प्रण कर लिया और जो जहाँ था वहाँ से खेजड़ली की ओर दौड़ पड़ा।

अमृता जंगल में पहुँची जहाँ खेजड़ी पर कुल्हाड़ी चल रही थी उन्हें रोकने का इशारा किया। इसका प्रतिकार करते हुए मंत्री गिरधरदास आगे आया। अमृता ने विनम्रतापूर्वक खेजड़ी नहीं काटने का आग्रह

किया परंतु मंत्री गिरधरदास ने अमृता की एक नहीं सुनी और सत्ता के नशे में चूर होकर राजाज्ञा का पालन करने की बात कही।

सिपाही कुल्हाड़ी लेकर पेड़ों को काटने के लिए उद्यत होते हैं। उसी समय सिंहनी के समान गर्जना करती हुई अमृता अपने पति और बच्चियों सहित आगे आती है। अमृता कहने लगी–

''अमृता बोली आवती, करडो मन में कोड । रूख अमर म्हे राखस्यां, हुवै न थ्हांसू होड़।''

ये कहती हुई अमृता पेड़ों से लिपट गई। सिपाही सिंहनी की गर्जना से सहम गए और पेड़ों की कटाई बंद करके सेनापति के पास पहुँचे। भण्डारी यह सुनकर तिलमिला गया और अमृता के पास आकर कहा ''आप अपने घर जाइए हमें सूर्यास्त होने तक सारे पेड़ काटने हैं।'' अमृता ने अपने अटल इरादे प्रकट करते हुए कहा, ''ये खेजड़ी हमारी माँ है हम सिर कटवा लेंगे परंतु पेड़ नहीं कटने देंगे।'' अमृता देवी अपनी पुत्रियों और पति सहित पेड़ों से लिपट गई और सिपाहियों को ललकारा– ''खेजड़ी से पहले मेरी गर्दन पर वार करना होगा अन्यथा ये खेजड़ी नहीं कटेगी।'' सैनिकों ने सबसे पहला वार अमृता की गर्दन पर किया और देखते ही देखते रामोजी, भागू, अणसी और रतनी ने अपने बलिदान की गाथा लिख दी। रेगिस्तान की स्वर्णमयी धरती रक्त की धारा से लाल हो गई। अमृता के बलिदान से प्रेरित होकर उपस्थित नर–नारियों ने हरी–भरी खेजड़ियों को अपने गले लगाकर सर्वोच्च बलिदान का वरण किया। शक्ति, शौर्य और शांति के लिए विख्यात मरुधरा पर एक के बाद एक 363 वृक्ष–प्रेमियों ने पेड़ों से लिपटकर अपने प्राणों की आहुति दे दी। विश्व में पेड़ों के लिए हुए इस पहले बलिदान के अवसर पर सूरज की रोशनी मद्धम पड़ गई मानो वह शोक में डूब गया हो। प्रकृति, जीव–जंतु सब शांत और स्तब्ध हो गए। वीरता और शौर्य के लिए जग–प्रसिद्ध राजपूताना की धरती पर खून की नदियाँ बहने लगीं। पेड़ों की रक्षा में किया जाने वाला यह अनूठा बलिदान जब राजा अभय सिंह के संज्ञान में आया तो उनको बहुत दु:ख हुआ। उन्होंने इस निर्दयी घटना पर पश्चाताप किया और विश्नोई बाहुल्य गाँवों में हरे वृक्ष नहीं काटने का आदेश दिया। पर्यावरण संरक्षण के लिए इस अनूठे बलिदान से प्रेरणा लेते हुए सुंदरलाल बहुगुणा ने 'चिपको आंदोलन' चलाया। आज भी खेजड़ली गाँव में 363 नर–नारियों के बलिदान की याद में प्रतिवर्ष भाद्रपद शुक्ल दशमी को विशाल मेला भरता है।

–डॉ. मनमोहन लटियाल

अभ्यास कार्य

आओ बात करें -

1. महाराजा के सामने लकड़ी की समस्या क्यों आई ? इसका उन्होंने क्या समाधान निकाला ?
2. अमृतादेवी और ग्रामवासियों के सामने क्या समस्या आई ? क्या उसका कोई अन्य समाधान भी संभव था ? विचार करके अपने साथियों को बताइए।
3. अमृतादेवी जब खेजड़ी के पेड़ों को काटने से रोकने गई तो किस-किसने उसका साथ दिया ?
4. यदि अमृतादेवी के स्थान पर आप होते तो क्या करते ? चर्चा कीजिए।

सोचो और लिखो-

1. बहुविकल्पीय प्रश्न-

(क) जोधपुर के महाराजा को लकड़ी की आवश्यकता क्यों पड़ी ?

(अ) रसोईघर के लिए (ब) महल के निर्माण के लिए

(स) आय के लिए (द) जंगल की सफाई के लिए ( )

(ख) खेजड़ली गाँव में कितने वृक्ष प्रेमियों ने अपने प्राणों की आहुति दी ?

(अ) 265 (ब) 363 (स) 463 (द) 263 ( )

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

(क) खेजड़ली गाँव की भौगोलिक स्थिति कैसी थी ?

(ख) अमृतादेवी के आह्वान पर कितने लोगों ने बलिदान दिया ?

(ग) खेजड़ली बलिदान की घटना का जब राजा को पता चला तो उन्होंने क्या निर्णय लिया ?

(घ) वर्तमान में पर्यावरण प्रदूषण की स्थिति पर विचार करते हुए पर्यावरण प्रदूषण से बचने के उपायों पर एक अनुच्छेद लिखिए।

(ङ) आपको कहानी का सबसे रोचक हिस्सा कौनसा लगा और क्यों?

(च) महाराजा के सामने लकड़ी की समस्या क्यों आई? इसका उन्होंने क्या समाधान निकाला?

(छ) अमृतादेवी और ग्रामवासियों के सामने क्या समस्या आई? क्या उसका कोई अन्य समाधान भी संभव था? विचार करके लिखो।

रचनात्मक प्रश्न–

1. आपने जो कहानी पढ़ी है उसका नाम लेखक ने 'उत्सर्ग' रखा है। अपने समूह में चर्चा करके लिखिए कि लेखक ने इस कहानी का यह नाम क्यों दिया होगा? अपने उत्तर का कारण भी लिखिए।

2. यदि आपको इस कहानी का कोई अन्य नाम देना हो तो आप क्या नाम देंगे? तर्क सहित उत्तर लिखो।

3. नीचे कहानी की एक पंक्ति दी गई है। इसे ध्यान से पढ़िए और विचार कीजिए। आपको इसका क्या अर्थ समझ आया? अपने विचार समूह में साझा कीजिए और अपनी अभ्यास-पुस्तिका में लिखिए।

   "जीव दया पालणी, रूख लीलौ नहीं घावै।"

4. कहानी का सबसे रोचक हिस्सा आपको कौनसा लगा और क्यों?

भाषा की बात –

1. मिलान कीजिए–

नीचे कुछ विपरीतार्थक शब्द दिए गए हैं लेकिन वे आमने-सामने नहीं हैं। रेखाएँ खींचकर

विपरीतार्थक शब्दों के जोड़े बनाइए-

स्तम्भ-1	**स्तम्भ-2**
1. प्रेम	1. अनर्थ
2. सूर्योदय	2. अस्वीकृत
3. गर्मी	3. घृणा
4. अर्थ	4. रहित
5. स्वीकृत	5. सूर्यास्त
6. सहित	6. सर्दी
7. हर्ष	7. वीरता
8. कायरता	8. ज्ञात
9. अज्ञात	9. शोक

2. मुहावरे

राजपूताना की धरती पर खून की नदियाँ बहने लगीं रेखांकित वाक्य में एक प्रसिद्ध मुहावरे का प्रयोग किया गया है जिसका अर्थ है नरसंहार होना। मुहावरे के प्रयोग से भाषा में सरलता, प्रवाहमयता उत्पन्न होती है एवं भाषा जीवंत और प्रभावशाली भी बन जाती है। कहानी में आए मुहावरों को छाँटकर उनके अर्थ लिखते हुए वाक्य में प्रयोग करें।

3. देशज शब्द

अमृता आँगन में दही का बिलौना कर रही थी। इस पंक्ति में रेखांकित शब्द को देशज शब्द कहते हैं अर्थात जो शब्द देश की क्षेत्रीय भाषा और बोलियों से संबंधित होते हैं और वे हिंदी में प्रयोग किए जा रहे हैं उन्हें देशज शब्द कहते हैं। पाठ में आए देशज शब्दों की सूची बनाकर लिखिए।

4. विराम चिह्न

नीचे दिए गए गद्यांश से विराम चिह्न हटा दिए गए हैं। आप पुनः उपयुक्त विराम चिह्न लगाकर लिखिए –

मयंक और काजल स्कूल जा रहे थे तभी काजल का पैर कीचड़ से भरे गड्ढे में गया और काजल गिर पड़ी मयंक बोला अरे ये क्या हुआ काजल कराहते हुए उठी और बोली मैं तो सामने झाड़ी पर बैठी तितली देखने लगी और पता ही नहीं चला कि कब गड्ढा आया और गिर पड़ी सारे कपड़े ही खराब हो गए मयंक ने कहा चलो अब पहले इस गड्ढे को मिट्टी से भर देते हैं नहीं तो कोई और भी गिर सकता है दोनों दोस्त मिलकर गड्ढे को भर देते हैं

यह भी करें–

कहानी में अमृतादेवी और मंत्री गिरधरदास की बातचीत संवादों के रूप में दी गई है। यह भी बताया गया है कि इन दोनों के बीच ये संवाद कैसे हुए। अपने कक्षा समूह के साथ मिलकर तैयारी कीजिए और कहानी के संवादों को कक्षा में प्रस्तुत कीजिए।

आकलन-IV

V1V4X9

मौखिक अभिव्यक्ति

- चित्र देखकर एक कहानी बनाइए और अपनी कक्षा में सुनाइए।

- 'धरती धोरां री' कविता हावभाव के साथ कक्षा मे सुनाइए।

पढ़कर समझना–

1. नीचे दिए गए अनुच्छेद को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

महादेवी वर्मा का जन्म सन् 1907 में उत्तर प्रदेश के फर्रुखाबाद शहर में हुआ था। उनकी शिक्षा–दीक्षा प्रयागराज में हुई। प्रयाग महिला विद्यापीठ में प्राचार्य पद पर लंबे समय तक कार्य करते हुए

उन्होंने लड़कियों की शिक्षा के लिए काफी प्रयत्न किए। महादेवीजी छायावाद की प्रमुख कवयित्री थीं। 'नीहार', 'रश्मि', 'नीरजा', 'यामा', 'दीपशिखा' उनके प्रमुख काव्य संग्रह हैं। कविता के साथ–साथ उन्होंने सशक्त गद्य रचनाएँ भी लिखी हैं जिनमें रेखाचित्र तथा संस्मरण प्रमुख हैं। 'अतीत के चलचित्र', 'स्मृति की रेखाएँ', 'पथ के साथी', शृंखला की कड़ियाँ उनकी महत्वपूर्ण गद्य रचनाएँ हैं। महादेवी वर्मा को साहित्य अकादमी एवं ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया। भारत सरकार ने उन्हें पद्मभूषण से अलंकृत किया। हिंदी गद्य साहित्य में संस्मरण एवं रेखाचित्र को बुलंदियों तक पहुँचाने का श्रेय महादेवीजी को है। उनके संस्मरणों और रेखाचित्रों में शोषित, पीड़ित लोगों के प्रति ही नहीं बल्कि पशु–पक्षियों के लिए भी आत्मीयता एवं अक्षय करुणा प्रकट हुई है। उनकी भाषा– शैली सरल एवं स्पष्ट है। सन 1987 में महादेवी वर्मा का देहांत हो गया।

1. गद्यांश के अनुसार महादेवी वर्मा ने किसके लिए प्रयत्न किए?
2. महादेवी वर्मा की प्रमुख रचनाओं के नाम लिखो।
3. भारत सरकार ने महादेवी वर्मा को किस सम्मान से अलंकृत किया।

भाषा की बात –

1. नीचे दिए गए वाक्यों में कुछ गलतियाँ हैं। उन्हें ठीक करके पुनः लिखें।

(क) पानी ऐसे कुएँ का ही पीनी चाहिए, जिसकी नियमित सफाई होता हो।

....

(ख) बहुत दिनों बाद इस घर की अच्छा से सफाई की गई।

....

(ग) सुरेश के बाग में अमरूद का बहुत सारे पेड़ लगा हुए हैं।

....

(घ) नीता का मम्मी बहुत अच्छा गाने गाता है।

....

2. नीचे दिए गए शब्दों में सु, उप, अन, अ उपसर्ग जोड़ते हुए नए शब्द बनाएँ और उनका वाक्यों में प्रयोग करें।

शब्द	नया शब्द	वाक्य में प्रयोग
लेख	सुलेख	सुमन बहुत अच्छा सुलेख लिखती है।
ज्ञात		
मोल		
विचार		
चार		
सहमति		
देश		

सोचो और लिखो-

1. मोलेला गाँव में बनी मिट्टी की मूर्तियों के ढाँचे किससे निर्मित थे?
2. 'पंछी मधरा-मधरा बोलै' पंक्ति का भावार्थ लिखिए।
3. टकराव टालने का सबसे सही तरीका कौनसा है?
4. वृक्ष संरक्षण के लिए सुंदरलाल बहुगुणा ने कौनसा आंदोलन चलाया?

शब्दों की दुनिया

J6U3I7

वंदना

संवाद : बातचीत
व्यवधान : बाधा
सुलभ : आसानी से प्राप्त
अजातशत्रु : जिसका कोई शत्रु नहीं हो

अध्याय - 1

ईश : ईश्वर, भगवान
अंबर : आकाश
सरिता : नदी
प्रहरी : पहरेदार
नाता : रिश्ता, संबंध
सुमन : फूल, पुष्प
वसुधा : धरती

अध्याय - 2

त्याग : बलिदान
शील : चरित्र
स्नेह : प्रेम, आत्मीयता
अदम्य : जिसे दबाया न सके
निर्भय : भय रहित
प्रत्यंचा : धनुष की डोरी
पराक्रम : वीरता, शौर्य
कल्याण : भला

अध्याय - 3

बाड़ा : पशुओं को बाँधने का स्थान
थान : धार्मिक स्थल, चबूतरा
रक्षक : रक्षा करने वाला
वीरगति : युद्ध में प्राण न्योछावर करना
पौष्टिक : पुष्ट करने वाला
तबेला : गाय-भैंस रखे जाने का स्थान

अध्याय - 4

खास : विशेष
कोशिश : प्रयास
ताकत : बल, जोर
मायने : महत्व
हासिल : प्राप्त
चाव : रुचि, शौक
महसूस : अनुभव

अध्याय - 5

मायका	:	पीहर
निधन	:	मृत्यु
दंग	:	आश्चर्यचकित
इरादा	:	विचार
संकल्प	:	दृढ़ निश्चय
भ्रम	:	संदेह
जोखिम	:	हानि की आशंका, खतरा
सराहना	:	प्रशंसा

अध्याय - 6

अस्थियाँ	:	हड्डियाँ
शिखाएँ	:	लपटें
सहमी	:	डरी
सिंहनाद	:	शेर की दहाड़
साखी	:	साक्षी, गवाह
महिमा	:	महत्व, गौरव

अध्याय - 7

सुरीला	:	मधुर, मीठा
न्योछावर	:	बलिदान
हैरत	:	आश्चर्य

अध्याय - 8

न्यारे-न्यारे	:	भिन्न-भिन्न
त्राहिमाम	:	रक्षा करो
लाचार	:	बेबस
प्रतिफल	:	परिणाम
संबल	:	सहारा
रणभेरी	:	युद्ध के वाद्य यंत्र की आवाज
लाज	:	सम्मान

अध्याय - 9

कीर्ति	:	यश, प्रसिद्धि
निपुण	:	कुशल
आततायी	:	अत्याचारी
खिलाफ	:	विरुद्ध

अध्याय - 10

पग	:	पैर
मेलणो	:	रखना
मनवार	:	मनुहार, सम्मान पूर्वक आग्रह
पण	:	लेकिन
मेह	:	वर्षा
मोहनी	:	मोहक
बिसाल	:	विशाल

अधर	:	होंठ
नूपुर	:	पायल
भगत–बछल	:	भक्त वत्सल

अध्याय - 11

खूबियाँ	:	विशेषताएँ
निर्णय	:	फैसला
व्हील चेयर	:	पहिए वाली कुर्सी
परेशानी	:	समस्या
फुसफुसाहट	:	धीमी आवाज में बातचीत
फिलहाल	:	इस समय, अभी

अध्याय - 12

कंदील	:	दीप का एक प्रकार
चंद	:	कुछ
अंबर	:	आसमान
उजियारा	:	उजाला, प्रकाश
ध्रुवतारा	:	उत्तर दिशा में चमकने वाला तारा

अध्याय - 13

मृदुभाषी	:	मीठा बोलने वाले
निहारना	:	प्रेमपूर्वक ध्यान से देखना
चाक	:	मिट्टी के बर्तन बनाने का उपकरण
अवस्था	:	स्थिति, हालात
जीवन–यापन	:	जीवन बिताना

अध्याय - 14

सुरगां	:	स्वर्ग
जस	:	यश
इमरत	:	अमृत
लुळ–लुळ	:	झुक–झुककर
कुदरत	:	प्रकृति
मधरा–मधरा	:	मधुर–मधुर
झीणूं	:	धीमा
बायरियो	:	हवा
बड़ भागण	:	बहुत भाग्यशालिनी
धजा	:	ध्वजा, झंडा
गिगनार	:	आकाश
मायड़	:	माँ

अध्याय - 15

दुश्मनी	:	शत्रुता
मुमकिन	:	संभव
नफरत	:	घृणा
नजरिया	:	दृष्टिकोण
साझी	:	मिली–जुली

अध्याय - 16

उत्सर्ग	:	बलिदान
रमणीय	:	अच्छा लगने वाला
निर्भीक	:	निडर
कलरव	:	पक्षियों के बोलने की आवाज
उद्यत	:	तैयार
शोक	:	दु:ख
गाथा	:	कहानी, कथा
मद्धम	:	धीमी
पालणी	:	पालन करना
लीलो	:	हरा
घावै	:	काटना
आवती	:	आती हुई
करड़ो	:	बहुत सारा
कोड	:	प्रेम
रुख	:	वृक्ष
राखस्यां	:	रखेंगे
होड़	:	मुकाबला
थ्हांसू	:	आपसे